सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 209, नई दिल्ली, सोमवार 06 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

आपकी कल्पना आपके पंख हैं, जिनके सहारे आप असंभव को भी पार कर सकते हैं।

03 भारत की सड़कें बदलाव के मोड़ पर: ट्रैफिक इन्फ्राटेक एक्सपो 2025 में होगा स्मार्ट

06 जेईई मेन-नीट यूजी में 12वीं कक्षा की परीक्षा जैसे प्रश्न होंगे

08 बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में ओबीसी मतदाताओं की भूमिका

जनहित में जारी, अवश्य ध्यान दें

डिजिटल गिरफ्तारी घोटाले - सतर्क रहें, सुरक्षित रहें

संजय बाटला

डिजिटल गिरफ्तारी घोटाला क्या है? डिजिटल गिरफ्तारी घोटाला एक धोखाधड़ी वाली योजना है जिसमें अपराधी पुलिस या सरकारी अधिकारी बनकर मुरान कानून के तहत काम करते हैं। वैध प्राधिकरण कभी भी फ़ोन पर पैसे, बैंकिंग विवरण या ओटीपी की मांग नहीं करेंगे।

ये घोटाले कैसे काम करते हैं

1. प्रारंभिक संपर्क – घोटालेबाज व्यक्ति नकली नंबर से कॉल करता है, तथा पुलिस, सीमा शुल्क या कर अधिकारी बनकर बात करता है।

2. झूठे आरोप - पीड़ितों पर धन शोधन, साइबर अपराध या मादक पदार्थों की तस्करी जैसे अपराधों का आरोप लगाया जाता है।

3. फर्जी साक्ष्य - जाली दस्तावेज या छेड़छाड़ किए गए वीडियो को "आधिकारिक" दिखाने के लिए दिखाया जाता है।

4. पूछताछ - घबराहट और तात्कालिकता पैदा करने के लिए लंबे, धमकी भरे कॉल।

5. धन की मांग – गिरफ्तारी से बचने के लिए जुर्माना या "सुरक्षा जमा" देने का दबाव।

6. अलगाव – पीड़ितों को किसी को भी सूचित न करने के लिए कहा जाता है, जिससे उनकी संवेदनशीलता बढ़ जाती है।

ध्यान देने योग्य

1. यदि आप अनुपालन नहीं करते हैं तो तत्काल गिरफ्तारी की धमकी दी जाती है।

2. यूपीआई, बैंक हस्तांतरण या वॉलेट के माध्यम से धन की मांग।

3. बैंक विवरण, पिन, पासवर्ड या ओटीपी के लिए अनुरोध।

4. व्हाट्सएप, स्काइप आदि पर वीडियो कॉल में शामिल होने का दबाव।

5. प्रामाणिक प्रतीत होने के लिए कानूनी/आधिकारिक शब्दावली का अत्यधिक उपयोग।

यदि आप किसी घोटाले का सामना करते हैं तो क्या करें?

1. अनुपालन न करें - कभी भी व्यक्तिगत/वित्तीय विवरण साझा न करें या धन हस्तांतरित न करें।

2. सत्यापित करें - कनेक्शन काट दें और आधिकारिक वेबसाइट से नंबर लेकर वास्तविक एजेंसी को कॉल करें।

3. सहायता लें - परिवार/दोस्तों से बात करें; अकेले न रहें।

4. तुरंत रिपोर्ट करें - वेबसाइट: www.cybercrime.gov.in

5. हेल्पलाइन: 1930

वास्तविक पुलिस या सरकारी एजेंसियां कॉल या चैट पर पैसे, ओटीपी या बैंक विवरण की मांग नहीं करेंगी।

"डिजिटल गिरफ्तारियां" फर्जी हैं और भारत में इनका कोई कानूनी आधार नहीं है।

सावधान रहें। सुरक्षित रहें। रिपोर्ट करें।

दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग की ग़लत नीतियों का एक और नतीजा सड़क पर आया नज़र

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन निगम में बुराड़ी डिपो की बस संख्या 4341, रूट 502 की चल रही बस में मजनू के टीले पर लगी भयंकर आग। यह आज कोई नए बात देखने को नहीं आई है।

दिल्ली परिवहन निगम में जब से प्राइवेट कंपनियों की बसों को चलवाना शुरू किया है तभी से लगातार सड़को पर इन नई बसों का

1. खराब होकर खड़ा होना,
2. बस स्टैंड पर बसों को ना रोकना,
3. बस की स्पीड मान्य अधिकतम सीमा से कईं गुणा अधिक पर चलाना,
4. लाल बत्ती पर बेखौफ होकर दौड़ाते हुए पार करना, और
5. आग लगना
6. सड़को पर दुर्घटना करना इत्यादि

आम बात हो चुकी हैं, इस सब की पूरी जानकारी होते हुए भी इन बसों की कंपनियों पर कार्यवाही करने की जगह उनको खुला समर्थन और सहयोग देना क्या जनता की सुरक्षा की दृष्टि से एक सरकार और जनहित में बने सरकारी विभाग की ग़लत नीतियों का प्रदर्शन नहीं कर रहा है।

आखिर जनता को असुरक्षित करवाने वालों पर कब करेंगे माननीय उपराज्यपाल कार्यवाही के आदेश ?

क्या जब कोई बहुत बड़ा हादसा घट जाएगा यानी बस में विराजमान सवारियों की जान माल का नुकसान हो जाएगा?

क्या माननीय उच्च न्यायालय और माननीय सुप्रीम कोर्ट भी ऐसे हादसों के इंतजार में है चुप, बड़ा सवाल ?

नई इमारतों में लगाना होगा ई-चार्जिंग सिस्टम ईवी को बढ़ावा देने के लिए बड़े बदलाव की तैयारी

स्वच्छ परिवहन के लिए इलेक्ट्रिक वाहन महत्वपूर्ण हैं लेकिन कुछ चिंताएं अभी भी बनी हुई हैं। भारत के निर्माण क्षेत्र में इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए चार्जिंग नेटवर्क बनाने का अच्छा मौका है। 2030 तक देश को लगभग नौ गीगावाट चार्जिंग क्षमता की जरूरत होगी। सरकार राष्ट्रीय राजमार्गों को इलेक्ट्रिक बनाने की योजना बना रही है। कई राज्य ईवी नीतियां बना रहे हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। स्वच्छ परिवहन के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना जरूरी है। हालांकि, तकनीकी अनिश्चितता, वित्तीय निहितार्थ और अग्नि सुरक्षा संबंधी चिंताएं अभी भी बड़ी बाधाएं बनी हुई हैं। भारत का निर्माण क्षेत्र इलेक्ट्रिक वाहनों के भविष्य के लिए चार्जिंग नेटवर्क को एकीकृत करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। अंतर्राष्ट्रीय स्वच्छ परिवहन परिषद (ICCT) के नवीनतम अध्ययन से संकेत मिलता है कि 2030 तक सालाना 700 से 900 मिलियन वर्ग मीटर नए आवासीय और वाणिज्यिक निर्माण होने की उम्मीद है। इसलिए, भवन निर्माण नियमों और स्थानिक नियोजन मानकों में इलेक्ट्रिक वाहनों के चार्जिंग बुनियादी ढांचे को शामिल करना बेहद जरूरी है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि भारत को 2030 तक लगभग नौ गीगावाट चार्जिंग क्षमता की आवश्यकता होगी।

रिपोर्ट में बताया गया है कि सरकार पीएम ई-ड्राइव पहल के तहत 40 राष्ट्रीय राजमार्गों का विद्युतीकरण करने की योजना बना रही है, जिससे 250 से 350 किलोमीटर या उससे अधिक की दूरी के लिए विश्वसनीय अंतर-शहर ई-बस सेवाएं संभव होंगी। इससे देश भर के 10,000 से अधिक कस्बों और शहरों के लिए लंबी दूरी की यात्रा में महत्वपूर्ण बदलाव आ सकता है।

आईसीसीटी के प्रबंध निदेशक (भारत) अमित भट्ट ने बताया कि 36 में से 32 भारतीय राज्य और केंद्र शासित प्रदेश ईवी नीति के किसी न किसी चरण में हैं। इन 32 राज्यों में से 20 नए भवनों में ईवी चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर अनिवार्य करने की योजना बना रहे हैं। आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और उत्तर प्रदेश पहले ही कानून बना चुके हैं और उसे लागू कर रहे हैं। दिल्ली भी इस पहल को बढ़ावा दे रही है। उन्होंने मौजूदा भारी-भरकम वाहनों के बेड़े के विद्युतीकरण के अवसर और ट्रकों व बसों के रेट्रोफिटिंग की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा, ₹ई-बस निविदाओं का उल्लेखनीय विस्तार 10 लाख तक बसों की खरीद को संभव बनाएगा और भारत को वैश्विक ई-बस निर्माता बना सकता है। भारी उद्योग मंत्रालय और केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय, दोनों को नेतृत्वकारी भूमिका निभानी चाहिए और इस पहल को आगे बढ़ाना चाहिए। प्रमुख राजमार्ग गलियारों पर रेंज की चिंता को कम करने के लिए मज़बूत चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करने की आवश्यकता है।

इसे प्राप्त करने के लिए, हमें मज़बूत इंफ्रास्ट्रक्चर बनाना होगा, बैटरी स्वैपिंग को बढ़ावा देना होगा और निश्चित-लागत वाली

संत परमानंद अस्पताल, कश्मीरी गेट में संपन्न हुआ ऑल फॉर हार्ट्स वॉकथॉन का आयोजन

ओंकार पूरी, आपदा प्रबंधन एवं पीडब्लू सलाहकार

नई दिल्ली: अक्टूबर 2025 को संत परमानंद अस्पताल, कश्मीरी गेट ने ऑल फॉर हार्ट्स वॉकथॉन का आयोजन किया। जिसमें छात्रों, कर्मचारियों, नागरिक सुरक्षा, आपदा मित्र, सेवानिवृत्त सरकारी, अर्धसैनिक बल के जवानों सहित हजारों लोगों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम माननीय सांसद और मंत्री परवेज साहिब सिंह वर्मा की ओर से आयोजित किया गया था और जन जागरूकता पहल के लिए एफएसआईई और श्री सीमेंट द्वारा प्रायोजित किया गया था। #SPHOrtho आम सोशल मीडिया जागरूकता के लिए इस्तेमाल किया गया टैग था। 5 किमी वॉकथॉन में हजारों की संख्या में आम जनता की भागीदारी देखी गई, जो रविवार की सुबह के शुरुआती घंटों में एक उल्लेखनीय आश्चर्य भी था। डीडीएमए पश्चिम आपदा मित्र टीम ने नागरिक सुरक्षा पश्चिम के साथ पूरे जोश और उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को प्रमाण पत्र और मेडक वितरण के साथ-साथ जलपान के लिए हल्का नाश्ता भी दिया गया। अन्य लोगो के साथ ओंकार पुरी, नवदीप सिंह, सोनू, फ्रिज खान जी इस प्रोग्राम में हिस्सा लिया।

दिल्ली परिवहन विभाग ने आरसी और ड्राइविंग लाइसेंस को लेकर किया बड़ा बदलाव...

परिवहन विभाग ने दिल्ली में पंजीकृत वाहन चालकों को उनके मोबाइल फोन पर एक संदेश भी भेजा है। विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि अगर किसी को संदेश नहीं मिला है, तो इसका मतलब है कि उनका मोबाइल नंबर गलत है।

दिल्ली परिवहन विभाग ने वाहन मालिकों के लिए मोबाइल नंबर अपडेट करना अनिवार्य कर दिया है। ऐसा न करने पर प्रदूषण और फिटनेस प्रमाण पत्र जारी करने पर रोक लग सकती है। पुराने नंबर से जुड़े होने के कारण ई-चालान की सूचना भी नहीं मिल पा रही है। आप parivahan.gov.in और sarathi.parivahan.gov.in पर जाकर अपना मोबाइल नंबर ऑनलाइन अपडेट कर सकते हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। वाहन मालिकों और ड्राइविंग लाइसेंस धारकों को परिवहन विभाग के साथ अपने नए और वर्तमान मोबाइल नंबर अपडेट कराने होंगे। परिवहन विभाग ने इस प्रक्रिया को अनिवार्य कर दिया है। पूरी तरह से ऑनलाइन व्यवस्था की ओर बढ़ने के कारण यह व्यवस्था शुरू की गई है और केंद्र सरकार ने भी इस व्यवस्था को पूरी तरह से लागू करने के निर्देश दिए हैं।

परिवहन विभाग ने दिल्ली में पंजीकृत वाहन चालकों को उनके मोबाइल फोन पर एक संदेश भी भेजा है। विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि अगर किसी को संदेश नहीं मिला है, तो इसका मतलब है कि उनका मोबाइल नंबर गलत है।

अधिकारी के अनुसार, सभी को इस संदेश को गंभीरता से लेना चाहिए और अपना मोबाइल नंबर अपडेट कराना चाहिए। परिवहन विभाग उन वाहनों के लिए प्रदूषण प्रमाण पत्र और फिटनेस प्रमाण पत्र जारी करने पर रोक लगाने की भी योजना बना रहा है जिनके मोबाइल नंबर उनके आरसी (वाहन पंजीकरण प्रमाण पत्र) और ड्राइविंग लाइसेंस से लिंक नहीं हैं। बताया जा रहा है कि दिल्ली में बड़ी संख्या में वाहन मालिकों ने अपने मोबाइल नंबर अपडेट नहीं कराए हैं।

विभाग उन्हें कोई संदेश नहीं भेज पा रहा है। वाहन पंजीकरण से जुड़े मोबाइल नंबर अपडेट न होने के कारण, यातायात उल्लंघनकर्ताओं को ई-चालान की सूचना नहीं मिल पा रही है।

ऑनलाइन अपडेट किया जा सकता है मोबाइल नंबर

अगर वाहन पंजीकरण या ड्राइविंग लाइसेंस से जुड़ा मोबाइल नंबर इस्तेमाल में नहीं है, या आप नया नंबर अपडेट करना चाहते हैं, तो आप घर बैठे आसानी से ऑनलाइन मोबाइल नंबर अपडेट कर सकते हैं। आप वाहन पंजीकरण के लिए अपना मोबाइल नंबर parivahan.gov.in पर और ड्राइविंग लाइसेंस के लिए अपना मोबाइल नंबर sarathi.parivahan.gov.in पर ऑनलाइन अपडेट कर सकते हैं।

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

SCAN ME

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

शरद पूर्णिमा पर करें तुलसी से जुड़े ये उपाय, मां लक्ष्मी बना देंगी धनवान

इस बार शरद पूर्णिमा 6 अक्टूबर यानी कल मनाई जाएगी. शरद पूर्णिमा को कोजागरी पूर्णिमा और अश्विन पूर्णिमा के नाम से जाना जाता है. इस दिन चांद अपनी 16 कलाओं से पूर्ण होता है और इसी कारण इस रात की चांदनी को अमृत सामान माना जाता है. कहा जाता है कि इस दिन अगर तुलसी माता की पूजा या तुलसी से जुड़े कुछ उपाय किए जाए तो सुख-समृद्धि और स्वास्थ्य दोनों में बढ़ोतरी होती है. इस दिन तुलसी माता बहुत ही पूजनीय मानी जाती है क्योंकि तुलसी में खुद लक्ष्मी जी का वास होता है. तो चलिए जानते हैं कि शरद पूर्णिमा के दिन तुलसी से जुड़े कौन से उपाय करने चाहिए.

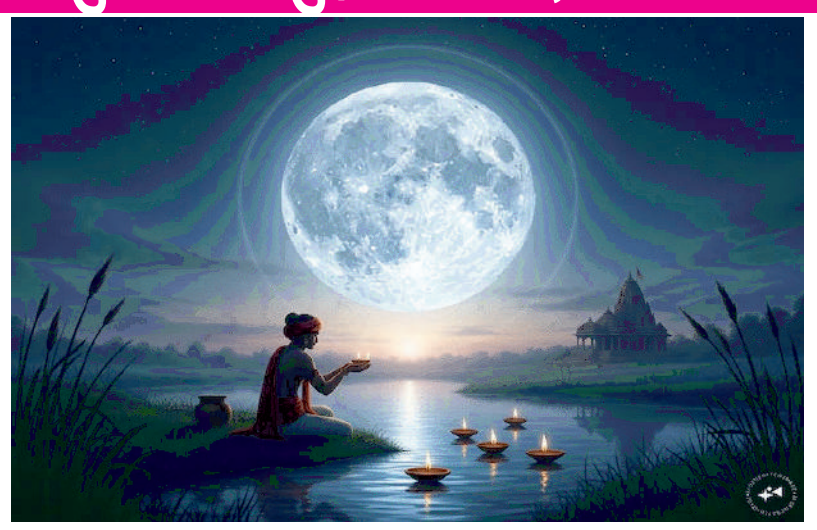

1. तुलसी के पास दीपक जलाएंः- शरद पूर्णिमा की रात को चांद निकलने के बाद तुलसी के पौधे के पास घी या तिल के तेल का दीपक जरूर जलाएं. इससे घर में बरकत बढ़ती है और नकारात्मकता दूर होती है.

2. तुलसी की परिक्रमा करेंः- शरद पूर्णिमा की

रात को तुलसी के पौधे की 7 या 11 बार परिक्रमा करें. इससे मनोकामनाएं पूरी होती हैं और घर में सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है. इसके बाद तुलसी के आगे हाथ जोड़कर 'ऊं नमो भगवते वासुदेवाय' का जाप करें.

3. तुलसी के नीचे रखें सिक्काः- इस दिन एक चांदी या तांबे का सिक्का तुलसी के नीचे रखकर दीपक जलाएं. अगली सुबह उस सिक्के को तिजोरी या पर्स में रख लें. यह आर्थिक स्थिति को ठीक करने का सरल उपाय है. ऐसा करने से अचानक धनलाभ के योग बनते हैं.

4. तुलसी के पास लगाएं ध्यानः- अगर आपको मानसिक तनाव जैसी समस्या है तो शरद पूर्णिमा की रात तुलसी के पास कुछ देर बैठकर ध्यान करें. चांद की ठंडी रोशनी और तुलसी की सुगंध मन को शांत करती है. यह उपाय आध्यात्मिक शांति के साथ साथ मन को भी एकाग्रता करता है.

5. तुलसी के पास करें मंत्र-साधनाः- शरद पूर्णिमा की रात तुलसी के पौधे के पास बैठकर 'ऊं श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः' मंत्र का 108 बार जाप करें. यह उपाय करने से मां लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होगी।

दिवाली 20 अक्टूबर को मनाई जाएगी, जाने कारण

काशी विद्वत परिषद के महामंत्री रामनारायण द्विवेदी ने दिवाली मनाने को लेकर उत्पन्न भ्रम को दूर करते हुए कहा, "हमारे सनातन धर्म में दिवाली का त्योहार उत्साह के साथ मनाया जाता है और मां लक्ष्मी की पूजा होती है, लेकिन कुछ कथा कथित पंचांग कारों ने दीवाली का पर्व 21 अक्टूबर का लिख दिया, जिसकी वजह से काशी विद्वत परिषद की राष्ट्रीय बैठक बुलाई गई और हमने बड़े धर्म शास्त्रियों और आचार्यों के साथ मिलकर सूर्य सिद्धांती पंचांगों के अनुसार 20 अक्टूबर को दिवाली मनाने का फैसला लिया है."

उन्होंने आगे कहा कि ₹दिवाली मनाने और लक्ष्मी पूजन करने के लिए प्रदोष व्यापिनी अमावस्या जरूरी होती है, जो 20 अक्टूबर से शुरू होगी. ऐसे में दीपावली 20 अक्टूबर को मनाना शुभ रहेगा."

प्रदोष व्यापिनी अमावस्या का मुहूर्त 20 अक्टूबर की दोपहर 3 बजकर 44 मिनट से शुरू होगा और अगले दिन शाम 5 बजकर 54 मिनट तक रहेगा. दिवाली का पूजन रात को अमावस्या के साथ होता है तो इसी वजह से दीपावली का त्योहार 20 अक्टूबर को ही मनाया जाएगा.

कुछ लोगों में इसलिए कंफ्यूजन भी है, क्योंकि हिंदू धर्म में उदया तिथि में त्योहार माना जाता है, लेकिन दिवाली का त्योहार रात में निशिथ काल में मनाया जाता है, इसलिए इस मामले में उदया तिथि को महत्वता नहीं दी गई है.

दिवाली के पूजन मुहूर्त की बात करें तो लक्ष्मी पूजन 20 अक्टूबर को शाम 7 बजकर 8 मिनट से लेकर रात 8 बजकर 18 मिनट तक रहेगा. इस समय मां लक्ष्मी की पूजा करने से धन-धान्य और समृद्धि की वर्षा होगी. इस दौरान भक्त भक्ति भाव के साथ मां लक्ष्मी के सिद्ध मंत्रों का जाप करना न भूलें. पूजा के लिए महा लक्ष्मी यंत्र और मां के पद चिन्हो का भी पूजन करें. माना जाता है कि मां के दिवाली के दिन महा लक्ष्मी यंत्र घर लाना बहुत शुभ होता है. यंत्र के साथ ही मां लक्ष्मी साक्षात कृपा बरसाने के लिए उस घर में आती हैं.

शरद पूर्णिमा आज

आश्विन माह के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को आश्विन पूर्णिमा मनाई जाएगी, जिसे शरद पूर्णिमा और कोजागरी पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, यह साल की सबसे महत्वपूर्ण तिथि होती, जब लोग विभिन्न तरह के पूजा अनुष्ठान का पालन करते हैं, क्योंकि इस दिन चंद्रमा अपनी सोलह कलाओं से परिपूर्ण होते हैं।

शरद पूर्णिमा कब है ?

====================

हिंदू पंचांग के अनुसार, आश्विन माह की पूर्णिमा तिथि की शुरुआत 06 अक्टूबर को दोपहर 12 बजकर 23 मिनट पर होगी। वहीं, इसका समापन अगले दिन यानी 07 अक्टूबर को सुबह को 09 बजकर 16 मिनट पर होगा। पंचांग गणना के आधार पर इस साल शरद पूर्णिमा का पर्व 06 अक्टूबर को मनाया जाएगा।

शरद पूर्णिमा स्नान-दान समय

========================

* ब्रह्म मुहूर्त 04 बजकर 39 मिनट से 05 बजकर 28 मिनट तक
* लाभ-उन्नति मुहूर्त 10 बजकर 41 मिनट से 12 बजकर 09 मिनट तक
* अमृत-सर्वोत्तम मुहूर्त 12 बजकर 09 मिनट से 01 बजकर 37 मिनट तक।

शरद पूर्णिमा का महत्व

========================

शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा पृथ्वी के सबसे निकट होते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस तिथि पर रात के समय चंद्रमा की चांदनी में खीर या दूध रखने से वह अमृत के समान हो जाता है। यह खीर प्रसाद के रूप में ग्रहण करने से रोगों से मुक्ति मिलती है और निरोगी काया प्राप्त होती है। इस तिथि पर मां लक्ष्मी और भगवान विष्णु की पूजा का विधान है, जिससे धन-धान्य और सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है।

शरद पूर्णिमा पूजा विधि

========================

* इस दिन पवित्र नदी या फिर घर पर ही जल में गंगाजल मिलाकर स्नान करें।
* साफ वस्त्र धारण करें।
* व्रत व पूजा का संकल्प लें।
* भगवान विष्णु, माता लक्ष्मी और चंद्र देव की पूजा करें।
* उन्हें सुंदर वस्त्र, फल, फूल, अक्षत, धूप, दीप आदि अर्पित करें।
* गाय के दूध से खीर बनाकर भोग तैयार करें।
* इस दिन चंद्र देव को अर्घ्य जरूर दें।
* अर्घ्य में दूध, चावल और सफेद फूल मिलाएं।
* अगले दिन सूर्योदय से पहले उस खीर को प्रसाद के रूप में ग्रहण करें।
* पूर्णिमा के दिन अन्न, वस्त्र, चावल, दूध, मिठाई और दक्षिणा का दान जरूर करें।

खीर का विशेष महत्व

=================

इस दिन खीर बनाकर उसे मिट्टी के पात्र में रातभर चांद की रोशनी में यानी खुले आसमान में रखें। अगले दिन इसका सेवन करना अत्यंत शुभ माना जाता है। यह उपाय अच्छे स्वास्थ्य और माता लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने में सहायक माना गया है।

चंद्रमा को अर्घ्य दें

==============

शरद पूर्णिमा की रात एक लोटे में स्वच्छ जल भरें, उसमें थोड़े चावल और फूल डालकर चंद्रमा की ओर मुख करके अर्घ्य दें। मान्यता है कि ऐसा करने से चंद्र देव का आशीर्वाद प्राप्त होता है और परिवार में शांति व समृद्धि बनी रहती है।

दूध में सौंफ डालकर पीने के लाभ

आप रोज सादा दूध पीते है तो इसके बजाय अगर आप दूध में आधा चम्मच सौंफ डालकर पिएंगे तो आप कई बीमारियों से बच सकते हैं. दूध और सौंफ इन दोनों में ऐसे न्यूट्रिएंट्स होते हैं जो कई बीमारियों से शरीर को बचाते हैं।

सौंफ वाला दूध बनाने की विधि :

सौंफ वाला दूध बनाने के लिए एक गिलास दूध में आधा चम्मच सौंफ मिलाकर दूध को उबाल लें फिर इसे छलनी से अच्छी तरह से छान कर पिएं। इससे सौंफ का अर्क दूध में उतर जाएगा। जो आपके शरीर के लिए बहुत फायदेमंद है।

रोज दूध में सौंफ मिलाकर पीने से होने वाले फायदे।

इसमें केल्शियम होता है इससे हड्डियां मजबूत होती है और जोड़ो के दर्द से भी बचाव होता है।

इससे बॉडी का मेटाबोलिज्म बढ़ता है. यह ड्रिंक वजन कंट्रोल करता है और मोटापे से बचाता है।

इस ड्रिंक में एंटी बैक्टीरियल प्रोपर्टीज होती है. इससे पिम्पल्स ठीक होते है और चेहरे की चमक बढती है।

इसमें एस्पार्टिक एसिड होता है. इससे कब्ज, एसिडिटी जैसी प्रॉब्लम दूर होती है और डाईजेशन ठीक रहता है।

इससे आंखे हेल्दी रहती है। यह मोतियाबिंद जैसी आँखों की प्रॉब्लम से बचाता है।

इससे कोलेस्ट्रोल का लेवल बलेंस रहता है और हार्ट की बीमारियों से बचाता है।

इससे बॉडी के टाक्सिनस दूर होते है और यूरिन इन्फेक्शन से बचाता है।

इस ड्रिंक में पोटेशियम की मात्रा ज्यादा होती है। इससे ब्लड प्रेशर कंट्रोल रहता है।

इसमें आयरन होता है, यह एनीमिया यानि खून की कमी से बचाता है।इसलिए सौंफ का दूध जरुर पीना चाहिए

हम चाहते हैं कि हर भारतीय अंग्रेजी दवाओं की बजाय घरेलु नुस्खों और आयुर्वेद को ज्यादा अपनाये.

जीवन अनमोल है और जीवन में आती कठिनाइयाँ क्षणिक हैं। लेकिन हम छोटी-बड़ी कठिनाइयों में अपना मानसिक संतुलन खो देते हैं

कभी कभी व्यक्ति आत्महत्या की तरफ भी झुक जाता है। होश रहे कि संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसे जीवन में कठिनाईयां न आईं हों। और ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसे अपने जीवन में कभी आत्महत्या के बारे में विचार न आया हो। ध्यान रहे कि जैसे जीवन की कठिनाइयां क्षणिक हैं, ऐसे ही आत्महत्या का विचार भी क्षणिक है। यदि उस तीव्र उत्तेजना के क्षण में, किसी भी कारण से दो-पल रूक जायें तो यह उत्तेजना की तीव्रता स्वतः विलीन हो जाती है। क्षणभर बाद समस्या के समाधान भी मिलने लगते हैं। आत्महत्या किसी समस्या का समाधान नहीं, अपितु यह तो कर्मफल की जटिलता को और बढ़ा देती है। वास्तव में समाधान सदा जीवन में ही संभव है। इसलिए सहायता लें, संवाद करें, और आगे बढ़ें।

शरद पूर्णिमा उत्सव शरद पूर्णिमा के चांदनी में चंद्रमा की चांदनी में खीर बना करके रखने पर अमृत की बरसात होती है

इसी प्रकार से जिन लोगों को अस्थमा श्वास की बीमारी हो अपामार्ग के बीच को कूट करके पीस करके दूध में उसकी खीर बनाई जाए अस्थमा वाले को पिलाई जाए जिससे कि उसके अस्थमा की बीमारी ठीक हो जाती है

अमृत की बरसात रात को 12 :00 बजे होती है

साबूदाने की खीर बनाकर के चंद्रमा की पावन दोष में रखकर के उसे खीर को ग्रहण करना चाहिए जिससे कई प्रकार की बीमारियां दूर होती है

6 अक्टूबर सोमवार को रात की 12 :00 बजे भगवान को खीर को भोग लगाना चाहिए और सभी को पीना चाहिए। शरद पूर्णिमा उत्सव मनाना चाहिए।

मोबाइल ओर बच्चे

हमारे आसपास बहुत सारे ऐसे मां-बाप मिल जाएंगे या हम भी, जो अपने बच्चों को मोबाइल से दुर रखने के लिए लगातार प्रयास करते रहते है। कोई कहते होंगे कि हमने तो अभी तक हमारे बच्चे को मोबाइल दिखाया ही नहीं है। कोई कहेंगे कि हम सिर्फ खानें के समय ही मोबाइल फोन पर रायम्स दिखाते हैं। कोई कहेंगे कि मोबाइल के लिए समय निर्धारित किया हुआ है, इससे ज्यादा हम मोबाइल प्रयोग नहीं करने देते हैं। कोई कोई तो ऐसा भी कहते है कि हम खुद बच्चों से छुपकर मोबाइल का प्रयोग करते है। ऐसे सभी मां-बापों से मेरा सवाल है.... क्यों ? तो ज्यादातर जवाब मिलेगा कि, आंखें ख़राब होती है, बच्चे खुलें में खेलने नहीं जातें है, चिड़चिड़ापन बढ़ रहा है, मानस पर ख़राब असर होता है...वि...

क्या मोबाइल इतना ख़राब है कि बच्चों को उससे बचाना चाहिए ?

जवाब मिलेगा लेकिन पहले सामाजिक रूप को समझते है। हम पेपरलेस युग को पार कर गए हैं, अभी गेश्चर युग चल रहा है, गेश्चर मतलब स्क्रीन को टच किए बिना स्क्रीन को उपर नीचे करना। आगे आने वाले समय में स्क्रीन हमारे विचार तरंगों से उपर नीचे होगा। क्या ऐसे समाज में हम बच्चों को स्क्रीन से दुर रखने में सफल होंगे। कदापि नहीं, मोबाइल हो, कम्प्यूटर हो या टीवी स्क्रीन, हमारे जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बन चुका है और सदैव बना रहेगा।

हमें विचार करना है कि स्क्रीन को हटायें बिना स्क्रीन की ख़राब असर से बच्चों को कैसे बचाएं। सबसे पहले, हम स्क्रीन को उसके जीवन से हटा नहीं पाएंगे यह स्वीकार कर लो।

बच्चे को हर समय वोच करें, उसके मोबाइल में क्या ज़्यादा चलता है यह ध्यान में रखें, पैरेंटल कंट्रोल को अपने हिसाब से नहीं बच्चे के लिए सही हो ऐसा सेट करें।

बच्चे को मोबाइल से दूर रखने की कोशिश से ज़्यादा उसे ज़रूरी कार्यों से अवगत कराएँ। मोबाइल से ज्यादा स्क्रीन पर चलने वाले कंटेंट पर ध्यान देना चाहिए। मोबाईल को आँखों से कितना दूर रखकर देखना है यह प्रेक्टीकल करके बताएँ। मोबाइल से अच्छी बातें कैसे सिख सकते है यह समझाएँ। समय पर खाना, होमवर्क और शारीरिक मेहनत का महत्त्व सरल रूप से बताएँ। रुम बंद कर, अकेले में या छिपकर मोबाइल प्रयोग करने से बचाएँ।

तरुण अवस्था पार करने तक यह काम करते हुए, मोबाइल की उपयोगिता और उपलब्धता सही से समझने के बाद बच्चे जीवनभर अपनी पढ़ाई, नौकरी, व्यवसाय या मनोरंजन सब स्क्रीन के माध्यम से ही, बीना परेशानी से कर पाएंगे.

सदा_मस्त_रहें, स्वस्थ_रहें।

हिन्दू समाज पर राम पूजा का प्रभाव

भगवान श्री कृष्ण 'मदन मोहन' और श्री भगवान्-रामचन्द्र 'मदन- दहन' थे। मदन मोहन होने के कारण ही श्री भगवान्-कृष्ण ने गोपियों की रमणेच्छा को दंड नहीं किया था, किन्तु उसी भाव से उन्हें अपने में तन्मय करके उनकी कामादि वृत्तियों का नाश कर दिया था। उन्होंने स्वयं ही कहा है-

न मय्यावेशितधियां कामः कामाय कल्पते।

वर्जितः कथितो धानः प्रायो बीजाय नेष्यते ॥

'काम भाव से भी भगवान् के प्रति अनुराग करने पर वह काम काम नहीं रहता है, जिस प्रकार भूँजा हुआ धान फल उत्पन्न नहीं कर सकता, उसी प्रकार भगवान में अर्पित काम भी निर्जीव हो जाता है।' किन्तु भगवान्-श्रीरामचन्द्र मर्यादा - पुरुषोत्तम होने के कारण 'मदन मोहन' नहीं हो सकते थे। उनके लिये मदन भस्मकारी महादेव की तरह 'मदन दहन' होना ही मर्यादानुकूल था। 'मदन दहन' होने के कारण ही श्री राम जी ने

काम-भिखारिणी शूर्पणखा को काम न देकर उसके नाक-कान कटवा दिये थे और संसार की स्त्रियों को यह शिक्षा प्रदान की थी कि पर- पुरुष - रमणेच्छा-लोलुप व्यभिचारिणी स्त्रियों की ऐसी ही दुर्दशा होनी चाहिये।

'मदन दहन' होने के कारण ही श्रीरामचन्द्र जी राजाओं के लिये प्रायः अति कठोर एक पत्नी -

व्रत का पूर्ण पालन कर सके थे और रावण के हाथ से सीता जी को छुड़ाकर अग्नि में उनका प्रवेश कराया था तथा केवल प्रजा रञ्जनार्थ ही सीता को वनवास देकर उनसे कठोर तपस्या और ब्रह्मचर्य का पालन करवाया था। यह अलौकिक आदर्श प्रत्येक गृहस्थ के लिये अवश्य पालनीय है।

एक पत्नी व्रत तथा एक पति - व्रत को प्रण पर चढ़ा देना गृहस्थ नर-नारी के लिये सर्वोत्तम आदर्श है और इसी आदर्श का ज्वलन्त उदाहरण श्रीराम जी -सीता जी के जीवन में मिलता है। बालि-वध के लिये जब सुग्रीव से श्रीरामचन्द्र जी को यह मालूम हुआ कि एक बाण से सप्तताल वेध करनेवाले वीर ही बालि को मार सकते हैं, तब श्री भगवान्ने धनुष में बाण चढ़ाकर उसी समय यह प्रतिज्ञा की थी कि 'यदि सीता जी के सिवा अन्य किसी स्त्री में मेरी कभी स्त्री-बुद्धि नहीं है तो मेरा बाण सप्तताल वेधकर लौट आवेगा।' इस प्रकार प्रण पर चढ़ा हुआ एक -पत्नी व्रत पूरा ही उतरा था। ऐसे ही लंका पुरी में जब महावीर जी को दंड करने के लिये उनकी पूँछ पर वस्त्र लपेटकर रावण ने आग लगवा दी थी तब पूँछ जलने का संवाद सुन सीता देवी ने भी एक पति - व्रत को प्रण पर चढ़ाया था और

उसी की महिमा से उसके लिये अग्नि चन्दनवत् शीतल हो गयी थी। जिस समाज के नर-नारियों में यथार्थ राम-सीता की पूजा

प्रचलित होगी, वहाँ इस अनुपम आदर्श का अवश्य अनुकरण होगा।

दान और भेंट में अंतर

सन् २००5 में बीना बारहा अतिशय क्षेत्र पर चातुर्मास चल रहा था। रविवारीय प्रवचन के दिन गुरुवर के साथ सारा मुनि संघ विराजमान था। जब शास्त्र दान का समय आया तब मंच संचालक ने एक श्रावक श्रेष्ठी को आमंत्रित करते हुए कहा कि- आप आयें और आचार्य श्री जी के कर कमलों में शास्त्र भेंट करें। तब आचार्य श्री जी ने हम सभी मुनिराजों की ओर हाथ का इशारा करते हुए कहा- आप लोग इन श्रावकों को बता दिया करो कि शास्त्र भेंट नहीं किया जाता, बल्कि दान किया जाता है। मुनिराजों को श्रीफल भी भेंट नहीं किया जाता बल्कि चढ़ाया जाता है, अर्घ की भांति अर्पित-समर्पित किया जाता है। तब मैंने गुरुवर से शंका व्यक्त करते हुए कहा- हे गुरुवर! भेंट और दान में क्या अंतर होता है? स्पष्ट करने की कृपा करें। तब गुरुवर ने शंका का समाधान करते हुए कहा कि- जो लेते हैं उनके लिए देना भेंट कहलाता है जैसे- राजा, मेहमान, मित्र आदि को वस्तु देना।

ज़ो कुछ लेते नहीं हैं, उन्हें देना दान कहलाता हैं। जैसे मुनिराज आदि को आहारादि दान देना। मुनिराजों को श्रीफल आदि भेंट नहीं किया जाता बल्कि उनके श्री चरणों में चढ़ाया/समर्पित किया जाता है। शास्त्र भी उन्हें भेंट नहीं करते बल्कि शास्त्र का दान या शास्त्र प्रदान किया जाता है।

कमाई...!

यहां पे हर कोई आया है कमाने के लिए,
सारे जहां को 'कमाई' से लुभाने के लिए।
यूं जिंदगी को एक नया मोड देने के लिए,
अपनी एक नवद पहचान बनाने के लिए।

सिर्फ दौलत कमाने से काम नहीं चलता,
दिल की दौलत में ही सब कुछ है पलता।
राह चलता इंसान बहुत लेकर निकलता,
रिश्तो को जोड़ते बहुत कुछ है संभलता।

सबके हाथों का मैल है ये दिखती दौलत,
ऐश-ओ-आराम की जिंदगी मिलें तो लत।
यहां कमाना प्रेम, स्नेह, नाम एवं शोहरत,
न भूल पड़ेगी दो पल सुकून की ज़रूरत।

संजय एम तराणेकर

भारत की सड़कें बदलाव के मोड़ पर: ट्रैफिक इनफ्राटेक एक्सपो 2025 में होगा स्मार्ट, सुरक्षित एवं स्थायी परिवहन समाधानों का प्रदर्शन

मुख्य संवाददाता

राजमार्गों, शहरी परिवहन एवं स्मार्ट परिवहन समाधानों के विकास के साथ भारत के बुनियादी ढांचे में ज़बरदस्त बदलाव आ रहे हैं। पिछले दशक के दौरान देश का राष्ट्रीय राजमार्ग नेटवर्क तकरीबन दोगुना हो गया है, नए मेट्रो कॉरीडोर, एक्सप्रेसवे और मल्टी-मॉडल परिवहन सिस्टम शहरी कनेक्टिविटी को नया आयाम दे रहे हैं। इन सब विकास कार्यों बीच शहरों में ट्रैफिक जाम, सड़क सुरक्षा पार्किंग प्रबन्धन एवं स्थायित्व से जुड़ी समस्याएं भी बढ़ रही हैं, जिसके चलते भारत में विकास के अगले चरण के लिए इंटेलीजेन्ट ट्रांसपोर्ट सिस्टम, सड़क सुरक्षा इनोवेशन और स्मार्ट सिटी परिवहन समाधान ज़रूरी हो गए हैं।

कार्यक्रम में 300 से अधिक ब्राण्ड्स में मुख्य प्रोडक्ट श्रेणियों जैसे आईटीएस/टेलीमेटिक्स, टोल एंड फेयर, सड़क सुरक्षा, सुरक्षा एवं निगरानी, सड़क सुरक्षा इन्फ्रास्ट्रक्चर एवं पार्किंग मैनेजमेन्ट का प्रदर्शन करेंगे। मैस्से फ्रैंकफर्ट ट्रेड फेयर्स इंडिया और वर्चुअल इन्फो सिस्टम (वीआईएस ग्रुप) प्रा. लिमिटेड द्वारा आयोजित एक्सपो सरकारी प्रतिनिधियों, शहर नियोजकों, नीति निर्माताओं और टेक्नोलॉजी प्रदाताओं को एक मंच पर लाएगा। जो 300 से अधिक ब्राण्ड्स के साथ यातायात प्रबन्धन, आईटीएस, सड़क निर्माण, पार्किंग ऑटोमेशन, ईवी मोबिलिटी एवं एआई-उनमुख सर्विलान्स सिस्टम में इनोवेशन्स का प्रदर्शन करेंगे।

स्मार्ट मोबिलिटी सम्मेलन का आयोजन 7 और 8 अक्टूबर को होगा, जहां स्थायी राजमार्ग, बैरियर रहित टोलिंग, शहरी पार्किंग, सड़क सुरक्षा पर पैनल चर्चाएं होंगी। HOA(I), IHMCL, CUMTA, ITS India Forum एवं अधिक अन्य अधिकारी इन विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। उपस्थितगणों को नए प्रोडक्ट लॉन्च के साथ यातायात प्रबन्धन, स्मार्ट सिटीज़ एवं स्थायी शहरी परिवहन के आधुनिक समाधानों का अनुभव पाने का मौका मिलेगा।

इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रोद्यौगिकी मंत्रालय और ट्रैफिक इन्फ्राटेक एक्सपो के सहयोग से एक हितधारक बैठक का आयोजन

भी कर रहे हैं, जिसका विषय है 'भविष्य के लिए परिवहन में बदलाव लाना।' सत्र में ऑटोमोटिव सेक्टर में स्वदेशी तकनीकों के विकास को बढ़ावा देने के लिए सीडीएसी और आईसीएटी के बीच एक एमओयू साईन किया जाएगा। विशेषज्ञ, स्थानीय तकनीकों के साथ मोबिलिटी एवं परिवहन समाधानों में सुधार लाने के तरीकों पर विचार रखेंगे। एक और पैनल चर्चा में स्वदेशी तकनीकों के साथ परिवहन सेक्टर को सहयोग प्रदान करने पर विचार-विमर्श किया जाएगा।

कार्यक्रम के महत्व पर बात करते हुए राज मानेक, एक्ज़क्टिव डायरेक्टर एवं बोर्ड के सदस्य, मैस्से फ्रैंकफर्ट एशिया होल्डिंग्स लिमिटेड ने कहा, ''भारत इन्फ्रास्ट्रक्चर क्रान्ति के दौर से गुज़र रहा है, लेकिन असली सफलता तभी है जब विकास स्थायी, सुरक्षित एवं स्मार्ट हो। ट्रैफिक इन्फ्राटेक एक्सपो के और इसके समवर्ती शोज़ के साथ हम एक निष्पक्ष मंच का निर्माण कर रहे हैं, जहां टेक्नोलॉजी प्रदाता, सरकारी अधिकारी और निर्णय निर्माता विचारों का आदान-प्रदान कर सकेंगे तथा शहरी एवं राजमार्ग परिवहन के लिए स्थायी एवं बड़े पैमाने के समाधानों को लागू किया जा सके। प्रदर्शकों की आवाज़ स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि बाज़ार, स्वदेशी इंटेलीजेन्ट प्रणाली को बड़े पैमाने पर अपनाने के लिए तैयार है।'

जयप्रकाश नायर, मैनेजिंग डायरेक्टर, वर्चुअल इन्फो सिस्टम्स प्रा. लिमिटेड ने कहा, ''ट्रैफिक इन्फ्राटेक एक्सपो के सभी समवर्ती शोज़- पार्किंग इन्फ्राटेक एक्सपो, रोड इन्फ्राटेक एक्सपो और स्मार्ट मोबिलिटी सम्मेलन - इस तरह से डिज़ाइन किए गए हैं कि ये पूर्ण मोबिलिटी सिस्टम का 360 डिग्री व्यू प्रदान करते हैं। उद्योग जगत को समेकित समाधानों की ज़रूरत है और यह मंच साझेदारियों एवं परियोजनाओं को आयाम देता है। हमें विश्वास है कि इस साल का संस्करण आपसी बातचीत एवं साझेदारियों को बढ़ावा देगा।

प्रतिभागियों के मुख्य रूझानः

स्मार्ट मोबिलिटी पर भारत का अभियानः प्रदर्शनियों में एआई-पावर्ड ट्रैफिक मॉनिटरिंग, रियल-टाईम डेटा प्लेटफॉर्म्स, ईवी चार्जिंग एवं इंटीग्रेटेड शहरी परिवहन समाधानों का प्रदर्शन किया जाएगा। यहां पायलट परियोजनाओं के दायरे से बढ़कर प्रमाणित एवं स्केलेबल तकनीकों पर ज़ोर दिया जाएगा। पार्किंग में टेक-उन्मुख, डिजिटल सिस्टम ईवी इन्फ्रास्ट्रक्चर और शहरी नियोजन को समर्थन दे रहे हैं।

मार्केट के लिए तैयारः प्रदर्शकों के अनुसार स्वदेशी, स्केलेबल समाधानों की मांग बढ़ रही है। भारतीय शहर स्थानीय सड़कों, यातायात को देखते हुए किफ़ायती स्मार्ट मोबिलिटी टूल्स को प्राथमिकता दे रहे हैं। जिसके चलते व्यवहारिक एवं स्वदेशी इनोवेशन्स की ओर झुकाव बढ़ रहा है।

पार्किंग एवं शहरी परिवहनः भारतीय शहरों में कंजेशन की लागत तकरीबन रु 1.5 लाख करोड़ सालाना है, इसे देखते हुए प्रदर्शक सेंसर आधारित पार्किंग, ऑटोमेटेड वैले सिस्टम और पेमेंट उन्मुख समाधान पेश करेंगे। इन समाधानों को अपनाने से शहरी सड़कों पर 30 फीसदी जगह खाली हो सकती है।

सड़क सुरक्षा एवं प्रवर्तनः सड़कों पर दुर्घटनाओं की संख्या बहुत अधिक बनी हुई है। ऐसे में प्रदर्शक एआई इनेबल्ड कैमरा, आईओटी आधारित दुर्घटना डिटेक्शन, इंटेलीजेन्ट स्पीड मैनेजमेन्ट सिस्टम पेश करेंगे। इन समाधानों को अपनाकर भारत के राजमार्गों पर दुर्घटनों को 40 फीसदी तक कम किया जा सकता है।

डिजिटल सिस्टमः यातायात प्रबन्धन अब केवल भौतिक ढांचा नहीं रहा। रियल टाईम अपडेट, अनुमान विश्लेषण और एकीकृत कमांड सेंटर शहरी परिवहन का आधार बन रहे हैं। एक्सपे के दौरान इनका डेमा दर्शाएगा कि कैसे शहर डेटा को अपना कर सड़कों को अधिक सुरक्षित बना सकते हैं।

प्रदर्शकों के लिए यह एक्सपो एक शो से कहीं बढ़कर है। कुछ प्रतिभागियों ने कहा कि मार्केट पायलट परियोजनाओं के दायरे से आगे बढ़ गया है, उपभोक्ताओं को ऐसे प्रमाणित एवं स्केलेबल समाधान चाहिए जिन्हें अन्य शहरों में भी अपनाया जा सके। पार्किंग टेक्नोलॉजी में भी बदलाव आ रहे हैं, जहां पार्किंग सिर्फ रियल एस्टेट तक सीमित नहीं है बल्कि तकनीक पर आधारित सर्विस बन गई है। जहां डिजिटल पेमेंट, ईवी चार्जिंग एवं शहरी नियोजन को शामिल किया जा रहा है।

शो में हिस्सा लेने वाले भारतीय कंपनियों में शामिल हैं- प्रामा इंडिया, सर्परवेव कम्युनिकेशन्स, वीडियोनेटिक्स, ग्रीनटेक आईटीएस, आदित्य इन्फोटेक- सीपी प्लस, केंट आईटीएस, नोर्डन कम्युनिकेशन, डेटा कोर्प ट्रैफिक, समृद्धि ऑटोमेशन्स और मेट्रां काउंट। ऑस्ट्रेलिया, डेनमार्क, जर्मनी, मेक्सिको, स्लोवाकिया, ताईवान, यूएई और यूएसए से अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभागी भी शो में हिस्सा ले रहे हैं।

एक्सपो को सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रोद्यौगिकी मंत्रालय, और डिजिटल इंडिया; एनएचएआई एवं सीआरआरआई; तथा एनएचबीएफ, एसोसिएशन ऑफ स्टेट रोड ट्रांसपोर्ट का समर्थन प्राप्त है। यह मंच सरकारी एवं उद्योग जगत के प्रतिनिधियों की मौजूदगी में ज्ञान के आध्दान-प्रदान, आधुनिक तकनीकों के अडॉप्शन को बढ़ावा देगा तथा सुरक्षित, स्मार्ट एवं अधिक प्रभावी परिवहन प्रणाली के लिए भारत की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करेगा।

इंदौर के ट्रांसपोर्ट कारोबारियों ने 6 अक्टूबर से माल की बुकिंग पूरी तरह बंद करने का फैसला किया

परिवहन विशेष न्यूज

इंदौर के ट्रांसपोर्ट कारोबारियों ने 6 अक्टूबर से माल की बुकिंग पूरी तरह बंद करने का फैसला किया है। इससे शहर के करीब 500 ट्रांसपोर्ट ऑफिस और गोदामों से न तो बुकिंग होगी और न ही माल की डिलीवरी। इसका सीधा असर बाजारों में माल की आपूर्ति पर पड़ सकता है। ट्रांसपोर्टरों ने शहर में सख्त नो एंट्री नियमों के खिलाफ यह कदम उठाया है।

पार्सल ट्रांसपोर्ट और फ्लीट मालिकों के संघ ने घोषणा की है कि सोमवार से लोहा मंडी समेत अन्य इलाकों में उनके कार्यालयों और गोदामों में माल की बुकिंग बंद रहेगी। संघ के अध्यक्ष राकेश तिवारी के अनुसार, प्रशासन द्वारा लागू किए गए नए नो-एंट्री नियमों का असर लगातार कारोबार पर पड़ रहा है।

नया नो एंट्री नियम

प्रशासन ने सुबह 6 बजे से रात

11 बजे तक ट्रकों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया है। अनुरोध पर ट्रकों को केवल दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक लोहा मंडी क्षेत्र में प्रवेश की अनुमति है। पहले यह समय सीमा दोपहर 12 बजे से शाम 5 बजे तक और रात 9 बजे से सुबह 9 बजे तक थी। कम समय का बुकिंग और आपूर्ति पर बुरा असर पड़ रहा है।

सप्लाई पर असर

इंदौर से रोज़ाना लगभग 1500 ट्रक माल भरकर निकलते हैं, जो प्रदेश के विभिन्न जिलों और पड़ोसी राज्यों के कई शहरों तक पहुँचता है। इसी तरह, रोज़ाना इतने ही ट्रक इंदौर माल लेकर आते हैं। स्थानीय बाज़ारों में माल की आपूर्ति और निकासी, दोनों ही ट्रांसपोर्टरों के ज़रिए होती है। ऐसे में बुकिंग बंद होने से न सिर्फ़ बाज़ार में माल की आपूर्ति बाधित होगी, बल्कि माल की बिक्री पर भी सीधा असर पड़ेगा।

स्टार परिवार अवॉर्ड्स 2025 प्रोमो: रुपाली गांगुली और कंवर ढिल्लन करेंगे होस्टिंग, ग्लैमरस नाइट में नजर आएगी मजेदार केमिस्ट्री!

मुख्य संवाददाता

भारत के सबसे बड़े एंटरटेनमेंट चैनलों में से एक स्टार प्लस, देश के कुछ सबसे पॉपुलर शोज़ का घर है। ऐसे में इस साल यह चैनल के लिए एक ऐतिहासिक मौके यानी अपनी अपनी 25वीं सालगिरह का जश्न मना रहा है। हर साल चैनल अपनी इस विरासत को यादगार बनाने के लिए सबसे ज्यादा इंतेज़ार किए जाने वाले स्टार परिवार अवॉर्ड्स का आयोजन करता है, और इस बार 2025 का जश्न इसकी सिल्वर जुबली की वजह से भी खास है, जहां उन शोज़ और कलाकारों को सम्मान दिया जाएगा जिन्होंने स्टार प्लस को हर घर का नाम बनाया है।

12 अक्टूबर को होने वाले अवॉर्ड शो के प्रीमियर से पहले, चैनल ने एक नया प्रोमो रिलीज किया है जिसमें इसके लीडिंग स्टार्स रूपाली गांगुली, जो 'अनुपमा' में अनुपमा का किरदार निभाती हैं, और कनवर ढिल्लों, जो 'उड़ने की आशा' में सचिन का रोल कर रहे हैं, नज़र आ रहे हैं। यह दोनों मिलकर शाम को होस्ट करेंगे और अपने मज़ेदार अंदाज़ से माहौल को खास बनाएंगे। फैंस को इंतज़ार है इन प्यारे कलाकारों को स्टेज पर देखने का, जहां अनुपमा के संस्कार और सचिन की मस्तीभरी पर्सनैलिटी मिलकर एक दिलचस्प और एंटरटेनिंग कॉम्बिनेशन पेश करेंगे।

प्रोमो शेयर करते हुए चैनल ने लिखा, "आपके चाहिते सितारों की अटेंडेंस है पक्की! क्या आप तैयार हैं, धमाल और मस्ती भरी शाम के लिए? देखिए स्टार परिवार अवॉर्ड्स 2025 12 अक्टूबर शाम 7:00 बजे सिर्फ़ #StarPlus पर।" अवॉर्ड शो में कुछ बेहद शानदार परफॉरमेंस, चैनल के मशहूर शोज़ के किरदारों की मुलाकात, दमदार एंट्रीज़ और सितारों से भरी शानदार सेलिब्रेशन देखने को मिलेगी।

दिल्ली के इन चार बस डिपो का होगा कायाकल्प, यात्रा के साथ खरीदारी भी कर सकेंगे लोग

दिल्ली सरकार ने चार बस डिपो पर पार्किंग स्थल वाले शॉपिंग कॉम्प्लेक्स बनाने की योजना को मंजूरी दी है। इस योजना का उद्देश्य डीटीसी के राजस्व में वृद्धि करना है। हरि नगर वसंत विहार सुखदेव विहार और बंदा बहादुर मार्ग डिपो पर काम होगा। शॉपिंग कॉम्प्लेक्स बनाने वाली कंपनियां अपना पैसा लगाएंगी। सरकार को डीडीए से मंजूरी मिलने की उम्मीद है ताकि परियोजना पर काम शुरू हो सके।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। पिछले पांच सालों में तमाम कोशिशों के बावजूद, दिल्ली के किसी भी बस डिपो पर एक भी बहुमंजिला पार्किंग नहीं बन पाई है और इस परियोजना पर काम भी शुरू नहीं हुआ है। सत्ता परिवर्तन के बाद, पिछले सात महीनों में, सरकार ने चार बस डिपो पर पार्किंग स्थल वाले शॉपिंग कॉम्प्लेक्स बनाने की योजना को मंजूरी दी है। सरकार ने निर्देश दिया है कि प्रस्तावों को दोबारा तैयार करके जल्द ही डीडीए को भेजा जाए ताकि इन परियोजनाओं पर काम तेज़ी से शुरू हो सके।

सरकार इन परियोजनाओं पर कोई पैसा खर्च नहीं करेगी; बल्कि, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स बनाने वाली कंपनियाँ अपना पैसा लगाकर डीटीसी को पार्किंग स्थल उपलब्ध कराएँगी। राष्ट्रीय भवन निर्माण निगम (एनबीसीसी) इस परियोजना का क्रियान्वयन कर रहा है। इस योजना का उद्देश्य घाटे में चल रही डीटीसी के राजस्व में वृद्धि करना है।

इस योजना के तहत, हरि नगर डिपो, वसंत विहार बस डिपो, सुखदेव विहार डिपो और बंदा बहादुर मार्ग डिपो पर काम होना है। सरकार पहले ही हरि नगर और वसंत विहार डिपो के लिए योजनाओं की घोषणा कर चुकी है।

अब, सुखदेव विहार और बंदा बहादुर मार्ग डिपो में बहुमंजिला बस पार्किंग और शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के निर्माण की योजना को मंजूरी मिल गई है। इन दोनों बहुमंजिला इलेक्ट्रिक बस पार्किंग स्थलों की मंजिलों की संख्या पर जल्द ही निर्णय लिया जाएगा।

सुखदेव विहार डिपो

दिल्ली की आप सरकार ने लगभग 10 साल पहले सुखदेव विहार डिपो के पुनर्विकास की योजना बनाई थी, लेकिन जब यह योजना आगे नहीं बढ़ पाई, तो मामला ठंडे बस्ते में चला गया। सुखदेव विहार डिपो पाँच एकड़ में फैला है और इसमें 100 से ज़्यादा बसें खड़ी हैं।

सरकार की योजना 300 इलेक्ट्रिक बसों के लिए एक बहुमंजिला पार्किंग और एक शॉपिंग कॉम्प्लेक्स बनाने की है। इमारत के निचले हिस्से में बसों के अलावा अन्य वाहनों के लिए भी पार्किंग की व्यवस्था करने के प्रयास चल रहे हैं।

बंदा बहादुर मार्ग डिपो

बंदा बहादुर मार्ग (बीबीएम) डिपो 15 एकड़ में फैला है। संक्षेप में, इसमें अन्य डिपो की तुलना में दोगुनी जगह उपलब्ध है। अनुमान है कि बसों के लिए यह सबसे बड़ा उपलब्ध क्षेत्र है। 600 इलेक्ट्रिक बसों के अलावा, क्षेत्र की पार्किंग समस्या के समाधान के लिए कारों और दोपहिया वाहनों के लिए पार्किंग की भी व्यवस्था की जाएगी।

सरकार यहाँ एक बड़ा शॉपिंग कॉम्प्लेक्स बनाने की भी योजना बना रही है। वर्तमान में, यहाँ से लगभग 100 बसें चलती हैं और डीटीसी कार्यालय भी यहीं स्थित हैं।

हरि नगर डिपो

हरि नगर डिपो छह एकड़ में फैला हुआ है। डिपो में 324 कारों और 104 दोपहिया वाहनों के लिए पार्किंग की सुविधा भी होगी। हरि नगर बस डिपो में वर्तमान में 230 सीएनजी बसों की पार्किंग क्षमता है। बहुमंजिला पार्किंग स्थल के पूरा होने के बाद, इसमें 384 इलेक्ट्रिक बसें खड़ी की जा सकेंगी।

डीटीसी कार्यालय और कर्मचारी छात्रावास 26,257 वर्ग फुट क्षेत्र में बनाया जाएगा। लगभग 2,00,000 वर्ग फुट व्यावसायिक स्थान उपलब्ध होगा। डिपो में 81 इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग स्टेशन होंगे, जो बसों को केवल 40 मिनट में पूरी तरह से चार्ज कर देंगे। बहुमंजिला पार्किंग स्थल लगभग 7.4 लाख वर्ग फुट में फैला होगा, जिसमें एक बेसमेंट और तीन ऊपरी मंजिलें होंगी।

वसंत विहार डिपो परियोजना

इस परियोजना की आधारशिला पिछले साल अगस्त में आप सरकार के दौरान उपराज्यपाल वी.के. सक्सेना और तत्कालीन परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने रखी थी। हालाँकि, उस सरकार को डीडीए से मंजूरी नहीं मिल पाई और काम शुरू नहीं हो सका। डिपो लगभग 5 एकड़ में फैला है।

सात मंजिला पार्किंग स्थल में 2.6 लाख वर्ग फुट से ज़्यादा बेसमेंट पार्किंग होगी, जिसमें 690 से ज़्यादा वाहन पार्क किए जा सकेंगे। यहाँ व्यावसायिक जगह भी उपलब्ध होगी। पार्किंग स्थल की मूल लागत 409 करोड़ निर्धारित की गई थी, लेकिन अब यह राशि बढ़ जाएगी।

डीडीए की मंजूरी लेना जरूरी

इन डिपो के लिए ज़मीन डीडीए से लीज़ पर ली गई है। समझौते के अनुसार, डिपो के अलावा वहाँ कोई भी गतिविधि करने के लिए डीडीए से नो-ऑब्लिगेशन सर्टिफिकेट लेना ज़रूरी है। अन्यथा, डीडीए लीज़ रद्द करने का अधिकार सुरक्षित रखता है।

"हम चार बस डिपो को बहुमंजिला पार्किंग वाले शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में बदलने की योजना बना रहे हैं। डीटीसी को इसके लिए एक नया प्रस्ताव तैयार कर डीडीए को सौंपने को कहा गया है। उम्मीद है कि डीडीए जल्द ही इस प्रस्ताव को मंजूरी दे देगा और परियोजना पर काम शुरू हो जाएगा।

डॉ. पंकज सिंह, परिवहन मंत्री - दिल्ली सरकार

कफ सिरप मौत मामले पर सरकार सख्त, दवा फैक्ट्रियों की जांच के आदेश, लापरवाही पर लाइसेंस रद्द

कफ सिरप से बच्चों की मौत मामले में केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव ने हाईलेवल बैठक में सभी राज्यों से कहा कि वे Revised Schedule M के तहत तय मानकों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करें. उन्होंने दोहराया कि जो दवा निर्माता इन मानकों का पालन नहीं कर रहे हैं, उनके लाइसेंस रद्द किए जाएं.

मध्य प्रदेश और राजस्थान में कफ सिरप से बच्चों की मौत मामले में केंद्र सरकार ने सख्त फैसला लिया है. रविवार को इस मामले में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की बैठक के बाद स्वास्थ्य सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव ने राज्यों को सख्त निर्देश दिए. पुण्य सलिला श्रीवास्तव ने कहा कि किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दास्त नहीं की जाएगी. उन्होंने कहा कि देश के सभी जिले में मौजूद दवा फैक्ट्रियों की जांच होगी. जहां से नियम का पालन होता नजर नहीं आया, उस फैक्ट्री का लाइसेंस रद्द किया जाएगा. हेल्थ सेक्रेटरी ने राज्यों से तत्काल इस मामले में संज्ञान लेने के लिए कहा है.

बैठक में 200 से अधिक स्वास्थ्य अधिकारी रहे मौजूद

इस बैठक में देश भर के 200 से भी ज्यादा स्वास्थ्य अधिकारी शामिल थे. इन सभी के सामने केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव ने कफ सिरप से बच्चों की मौत मामले में नाराज़गी जताई. उन्होंने शेड्यूल एम अधिनियम के तहत सभी मानकों की जांच करने के लिए औषधि नियंत्रक अधिकारियों को आदेश दिया.

डेढ़ घंटे तक चली बैठक

दरअसर रविवार को नई दिल्ली में केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव की अध्यक्षता में डेढ़ घंटे से अधिक समय तक चली इस बैठक में DGCI राजीव रघुवंशी, ICMR DG डॉ. राजीव बहल, भारत की DGHS डॉ. सुनीता शर्मा राज्यों /केंद्र शासित प्रदेशों के स्वास्थ सचिव और राज्यों के ड्रग कंट्रोलर शामिल हुए.

खांसी की दवाओं के सुरक्षित इस्तेमाल पर हुई मंथन

सूत्रों से अनुसार इस बैठक में खांसी की दवाओं की गुणवत्ता और उनके विवेकपूर्ण उपयोग की समीक्षा हुई. केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव ने सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के स्वास्थ्य अधिकारियों के साथ बैठक में खांसी की दवाओं की गुणवत्ता और उनके सही व सुरक्षित उपयोग को लेकर चर्चा की.

सचिव ने सभी राज्यों से कहा कि वे Revised Schedule M के तहत तय मानकों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करें. उन्होंने दोहराया कि जो दवा निर्माता इन मानकों का पालन नहीं कर रहे हैं, उनके लाइसेंस रद्द किए जाएं.

राज्य सरकारों को दिए गए ये निर्देश

बैठक में राज्यों को निर्देश दिया गया कि वे खांसी की दवाओं का सही उपयोग सुनिश्चित करें, खासतौर पर बच्चों में, क्योंकि अधिकांश मामलों में साधारण खांसी अपने आप ठीक हो जाती है और उसके लिए दवा की जरूरत नहीं होती. राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को यह भी सलाह दी गई कि वे निगरानी को और मज़बूत करें.

केंद्र की एजेंसी राज्यों के बीच बढाएं समन्वय

सभी स्वास्थ्य संस्थानों से समय पर रिपोर्टिंग सुनिश्चित करें. IDSP-IHIP की सामुदायिक रिपोर्टिंग टूल का विस्तृत प्रचार-प्रसार करें. राज्यों के बीच समन्वय बढ़ाएं ताकि किसी भी संदिग्ध मामले की जल्दी पहचान और संयुक्त कार्रवाई हो सके. मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि खांसी की सिरप की गुणवत्ता और सुरक्षित उपयोग को लेकर सरकार सतर्क और सक्रिय निगरानी कर रही है.

देश के ड्रग कंट्रोलर डॉ राजीव सिंह रघुवंशी ने कहा कि हर बच्चे की मौत के लिए कफ सिरप ज़िम्मेदार नहीं. हालाँकि राजस्थान में चार में से दो और मध्य प्रदेश में लगभग 10 बच्चों की मौत कफ सिरप में मौजूद घातक रसायन की वजह से हुई.तमिलनाडु के स्वास्थ्य सचिव ने कहा कि जांच के दौरान कफ सिरप निर्माता फैक्ट्री में कई तरह की अनदेखी पाई गई. बाजार में बैंच भेजने से पहले होने वाली जांच तक नहीं की गई. शेड्यूल एम को लेकर भी नियमों की ख़ामियां पाई गई.

ICMR DG ने कहा- बच्चों ने नहीं मिली कोई दूसरी बीमारी

ICMR DG ने कहा कि कोई दूसरी बीमारी नहीं मिली. बैठक में पूछे एक सवाल के जवाब में ICMR DG डॉ राजीव बहल ने कहा कि एमपी और राजस्थान के प्रभावित जिलों में जब टीम ने दौरा किया तो दवा के अलावा अन्य किसी कारण का पता लगाने पर जोर दिया गया. जल स्त्रोतों को भी नमूने जाँचे गए. लेकिन किसी भी नमूने में वायरस या बैक्टीरिया का प्रमाण नहीं मिला. इससे साफ है कि किसी अन्य संक्रमण का प्रकोप नहीं है.

स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने भी की थी बैठक

इस बैठक से पहले केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने भी इस विषय की समीक्षा की थी और निर्देश दिया था कि राज्यों से समन्वय कर जरूरी कदम उठाए जाएं. बैठक में बताया गया कि छिंदवाड़ा में हाल ही में कफ सिरप से जुड़ी बच्चों की मौत के मामले सामने आए थे. यह जानकारी PM-ABHIM के तहत नागपुर मेट्रोपॉलिटन सर्विलांस यूनिट ने दी थी.

इसके बाद केंद्र की विशेषज्ञ टीम (NCDC, NIV, CDSCO) ने छिंदवाड़ा और नागपुर का दौरा किया. टीम ने क्लिनिकल, पर्यावरणीय और दवा के नमूने इकट्ठे कर जांच के लिए NIV पुणे, CDL मुंबई और NEERI नागपुर भेजे.

कफ सिरप से मौत मामले की प्रारंभिक जांच में क्या मिला

1 केस में Leptospirosis की पुष्टि हुई

जांचे गए 10 दवा नमूनों में से 9 सही पाए गए

एक कफ सिरप 'Coldrif' में DEG (Diethylene Glycol) की मात्रा मानक से अधिक पाई गई

इस पर तमिलनाडु FDA ने कड़ी कार्रवाई की

निर्माण लाइसेंस रद्द करने की सिफारिश

फैक्ट्री के खिलाफ आपराधिक कार्रवाई शुरू की गई

बैठक में हेल्थ सेक्रेटरी ने कई सख्त निर्देश दिए

सभी दवा निर्माता इकाइयों को Revised Schedule M का सख्ती से पालन करना होगा.बच्चों में कफ सिरप का सीमित और जरूरत के हिसाब से उपयोग सुनिश्चित किया जाए, क्योंकि ज्यादातर खांसी अपने आप ठीक हो जाती है.DGHS की एडवाइजरी (बच्चों में कफ सिरप का सही इस्तेमाल को लागू किया जाए.देशभर में 19 दवा निर्माण इकाइयों में Risk-Based Inspection शुरू किए गए हैं.राज्यों को निर्देश दिया गया कि सर्विलांस सिस्टम मजबूत करें. सरकारी और निजी संस्थानों से समय पर रिपोर्टिंग लें.IDSP-IHIP के कम्युनिटी रिपोर्टिंग टूल का प्रचार करें.राज्यों के बीच समन्वय बढ़ाएं ताकि किसी भी असामान्य स्वास्थ्य घटना पर त्वरित कार्रवाई की जा सके.बच्चों को कफ सिरप देने में लाभ कम, जोखिम अधिकः डॉक्टर

डॉ. राजीव बहल (ICMR DG) ने कहा कि बच्चों को खांसी की दवाएं या मिश्रण बिना जरूरत न दें, इससे दुष्प्रभाव हो सकते हैं.

डॉ. सुनीता शर्मा (DGHS) ने कहा कि बच्चों में कफ सिरप से कम लाभ, अधिक जोखिम है, ओवरडोज़ रोकने के लिए नई गाइडलाइंस जल्द जारी होंगी.

सभी दवा निर्माताओं को मानक का रखना होगा ध्यान

डॉ. राजीव रघुवंशी (DCGI) ने कहा कि सभी निर्माताओं को Good Manufacturing Practices का पालन करना होगा. कुछ इकाइयों को अपग्रेडेशन के लिए दिसंबर 2025 तक की छूट दी गई है. Department of Pharmaceuticals ने बताया कि कई इकाइयां RPTUAS योजना के तहत अपने प्लांट का अपडेट कर रही हैं.

राजस्थान सरकार ने कहा- सिरफ की गुणवत्ता से मौत का संबंध नहीं मिला

राजस्थान सरकार ने कहा कि उनकी जांच में अब तक कफ सिरप की गुणवत्ता से मौतों का संबंध नहीं मिला. फिर भी जागरूकता अभियान और सतर्कता उपाय किए जा रहे हैं. महाराष्ट्र ने बताया कि नागपुर में भर्ती बच्चों का उपचार पूरी तत्परता से चल रहा है।

सभी बाधाओं को दूर करता है सुंदरकांड पाठ : आचार्य प्रदीप मणि महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। चैतन्य विहार फेस-2 स्थित नवनिर्मित मणिद्वीप भागवत सेवा आश्रम में चल रहे सप्तदिवीय उद्घाटन समारोह के दूसरे दिन श्रीहनुमद आराधन मंडल के द्वारा संगीतमय सामूहिक सुन्दरकाण्ड पाठ का आयोजन संपन्न हुआ।जिसके अंतर्गत श्रीहनुमानजी महाराज का दिव्य व भव्य श्रृंगार किया गया।साथ ही उनकी विशेष आरती की गई।

इस अवसर पर मणिद्वीप भागवत सेवा आश्रम के संस्थापक ₹भागवत भक्त₹ आचार्य प्रदीप मणि महाराज ने समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं को श्रीहनुमानजी महाराज की महिमा बताते हुए कहा कि सुंदरकांड का पाठ सभी बाधाओं को दूर करने वाला है।इस पाठ को करने से श्रीहनुमानजी महाराज शीघ्र ही प्रसन्न होकर भक्तों को मनवांछित फल प्रदान करते हैं।

पुराणाचार्य डॉ. मनोज मोहन शास्त्री ने कहा कि श्रीहनुमानजी महाराज समस्त सद्गुणों की खान हैं। उनमें वीरता, स्वामी भक्ति, बुद्धि-ज्ञान आदि का भंडार है।जो व्यक्ति जिस कामना से उनकी पूजा-अर्चना करता है,उसकी कामना वे निश्चित ही पूर्ण करते हैं।

भागवत प्रवक्ता आचार्य ऋषि तिवारी ने कहा कि श्रीहनुमानजी महाराज भक्ति शिरोमणि हैं।कलिकाल में श्रीहनुमानजी की आराधना के बिना भगवान श्रीरामजी की भक्ति प्राप्त कर पाना असम्भव है।

महोत्सव में भक्ति मती बीना माताजी (दिल्ली), श्रीहनुमद आराधन मंडल के अध्यक्ष अशोक व्यास महाराज, ₹यूपी रत्न₹ की उपाधि से अलंकृत प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, भागवताचार्य विपिन बापू, आचार्य अश्विनी मिश्र, आचार्य घनश्याम दुबे, डॉ. राधाकांत शर्मा, आचार्य युगल किशोर कटारे, रासाचार्य स्वामी राम शरण शर्मा, आचार्य बुद्धिप्रकाश शास्त्री, धर्मवीर शास्त्री, प्रेम शरण शर्मा, आचार्य नेत्रपाल शास्त्री, पंडित श्याम सुंदर ब्रजवासी, सुमंत कृष्ण महाराज आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

आचार्य प्रदीप मणि महाराज ने बताया है कि 06 अक्टूबर (शरद पूर्णिमा) को संतों व विद्वानों की पावन सन्निधि में आश्रम का उद्घाटन होगा।साथ ही प्रातः 09:30 बजे से विराट सन्त-विद्वत सम्मेलन आयोजित किया गया है।जिसमें देश के कई प्रख्यात संत, विद्वान और धर्माचार्य आदि भाग लेंगे।

समस्त सनातन धर्मावलंबियों को नित्य करना चाहिए श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ : गुरुशरणानंद महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। परिक्रमा मार्ग स्थित श्रीकृष्ण कृपा धाम में इन दिनों शरद पूर्णिमा के अपलक्ष्य में त्रिदिवसीय शरदोत्सव अत्यंत धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ चल रहा है।जिसके अंतर्गत विभिन्न धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों आयोजित हो रहे हैं।महोत्सव के दूसरे दिन ठाकुर श्रीकृष्ण कृपा बिहारी महाराज का भव्य श्रृंगार किया गया।साथ ही उनको 56 भोग लगाए गए।

तत्पश्चात आयोजित वृहद संत सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए महामंडलेश्वर कार्ष्णि स्वामी गुरुशरणानंद महाराज ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण के श्रीमुख से कुरुक्षेत्र की भूमि पर कही गई श्रीमद्भगवद्गीता एक ऐसा ग्रंथ है,जो जीवन की समस्त चुनौतियों से निपटने, नैतिक दुविधाओं को समझने और दैनिक कार्यों में अर्थ खोजने के लिए व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करती है।इसी लिए समस्त सनातन धर्मावलंबियों को नित्य इस ग्रंथ का पाठ करना चाहिए।

उत्तर प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री चौधरी लक्ष्मी नारायण ने कहा कि शरद पूर्णिमा पर श्रीधाम वृन्दावन के वंशीवट पर हुआ महारास धर्म व अध्यात्म जगत का एक प्रमुख आख्यान है। वस्तुतः परमात्मा व जीवात्मा का मधुर मिलन ही महारास का सही अर्थ है। क्योंकि यह गोपियों द्वारा अपने मोक्ष की कामना से किया गया था।

महामंडलेश्वर गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज ने कहा कि शरद पूर्णिमा शीत ऋतु का उद्घोषक पर्व है।इस तिथि को चंद्रमा से आने वाली अमृतमयी किरणें समूची प्रकृति को आलोकित करती हैं।इससे न केवल प्रकृति अपितु हम सभी का मन भी प्रफुल्लित व पुलकित हो जाता है।

श्रीनाभापीठाधीश्वर जगद्गुरु स्वामी सुतीक्ष्णदास देवाचार्य महाराज ने कहा कि शरद पूर्णिमा की दिव्य रात्रि में भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा असंख्य ब्रज गोपीकाओं के साथ की गई महारास लीला अद्भुत व अनोखी है।साथ ही यह श्रीकृष्ण के द्वारा कामदेव को पराजित करने वाली लीला है।

संत सम्मेलन में भागवत भास्कर कृष्ण चंद्र शास्त्री ठाकुरजी महाराज, श्रीहित अंबरीश महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी चित्तप्रकाशानंद महाराज, बाबा भूपेन्द्र सिंह (पटियाला,पंजाब), अखंडानंद आश्रम (आनन्द वृन्दावन) के महंत स्वामी श्रवणानंद सरस्वती महाराज, प्रख्यात सन्त स्वामी गिरीशानन्द सरस्वती महाराज, पुराणाचार्य डॉ. मनोज मोहन शास्त्री, भागवताचार्य संजीव कृष्ण शास्त्री, ₹यूपी रत्न₹ की उपाधि से अलंकृत प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, आचार्य/भागवत पीठाधीश्वर मारुति नंदनाचार्य वागीश महाराज, आचार्य नेत्रपाल शास्त्री, युवराज श्रीधराचार्य महाराज, भागवताचार्य श्रीराम मुदगल आदि ने भी विचार व्यक्त किए।संचालन सुरेश गोयल ने किया।

महोत्सव में उत्तर प्रदेश के पूर्व गृह सचिव मणि प्रसाद शर्मा, श्रीकृष्ण जन्म भूमि मुक्ति न्यास के अध्यक्ष महेन्द्र प्रताप सिंह, एडवोकेट, वासुदेव शरण, शक्ति स्वरूप ब्रह्मचारी, डॉ. अनूप शर्मा, भजन गायक रतन रसिक, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, गोविन्द ब्रह्मचारी, भागवताचार्य केशवदेव महाराज, देवेंद्र शर्मा, संजय शर्मा, अशोक चावला आदि के अलावा विभिन्न प्रांतों से आए असंख्य भक्त श्रद्धालु उपस्थित थे।

रात्रि को सुप्रसिद्ध भजन गायक बाबा चित्र-विचित्र महाराज द्वारा सरस भजन संध्या का आयोजन सम्पन्न हुआ।जिसमें उन्होंने श्रीराधाकृष्ण की महिमा से ओतप्रोत भजन गाकर सभी को भाव-विभोर कर दिया।

स्वभाव ही वह दीपक है जो अंधकार में भी रास्ता दिखाता है

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह सहज हरदा मध्य प्रदेश

जब जीवन में परिस्थितियाँ विपरीत होती हैं, तब मनुष्य की असली पहचान सामने आती है। ऐसे समय में पैसा, पद या प्रभाव कुछ भी साथ नहीं देता, क्योंकि ये सब बाहरी साधन हैं जिनकी शक्ति सीमित है। विपरीत समय में जो व्यक्ति केवल अपने पैसे या परिचितों पर निर्भर रहता है, वह जल्द ही टूट जाता है, लेकिन जिसका स्वभाव दृढ़, शांत और सकारात्मक होता है, वही अंत तक संभलकर खड़ा रहता है।

स्वभाव मनुष्य की वह आंतरिक शक्ति है जो संकट में भी उसे धैर्यवान बनाए रखती है, उसे सोचने, समझने और सही निर्णय लेने की क्षमता देती है। स्वभाव ही हमें दूसरों से सहयोग दिलाता है, क्योंकि लोग उस पर भरोसा करते हैं जो सौम्य और सच्चा होता है। विपत्ति के क्षणों में एक मधुर वाणी, एक शांत मन और विनम्र आचरण किसी भी धन या प्रभाव से अधिक कारगर सिद्ध होते हैं। जब सब कुछ छिन जाता है, तब भी स्वभाव साथ बना रहता है और वही हमारी असली पूँजी साबित होता है। इसलिए जीवन में यह आवश्यक है कि हम केवल सफलता पाने की नहीं, बल्कि अच्छा स्वभाव बनाने की भी कोशिश करें, क्योंकि जब बाकी सब असफल हो जाता है, तब स्वभाव ही वह दीपक होता है जो अंधकार में भी रास्ता दिखाता है।

डिजिटल क्रॉप सर्वे में लापरवाही पर जिलाधिकारी सख्त — कई पंचायत सहायकों और रोजगार सेवकों की सेवाएं समाप्त करने के निर्देश

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

अनिल राठौर ब्यूरो चीफ।

कासगंज। जिलाधिकारी प्रणय सिंह की अध्यक्षता में रविवार को कलेक्ट्रेट सभागार में डिजिटल क्रॉप सर्वे की समीक्षा बैठक आयोजित हुई। बैठक में उन्होंने निर्देश दिए कि सर्वे का कार्य 10 अक्टूबर तक हर हाल में पूर्ण किया जाए, अन्यथा जिम्मेदारों पर कठोर कार्रवाई होगी।

जिलाधिकारी ने बताया कि अब तक जिले में केवल 70 प्रतिशत सर्वे कार्य ही पूरा हुआ है, जो असंतोषजनक है। उन्होंने सभी एसडीएम, खंड विकास अधिकारी और उप कृषि निदेशक को निर्देशित किया कि सर्वे कार्य की निगरानी सतत रूप से की जाए और दैनिक रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए।

पटियाली में 50% प्रगति, नाराज़ हुए डीएम

पटियाली तहसील में मात्र 50 प्रतिशत प्रगति पाए जाने पर जिलाधिकारी ने गहरी नाराज़गी जताई। उन्होंने निर्देश दिए कि कार्य में लापरवाही बरतने वाले रोजगार सेवक व पंचायत सहायकों के विरुद्ध निष्कासन की कार्रवाई की जाए। पटियाली विकासखंड में जसवीर सिंह (दरियावगंज), देवेंद्र कुमार (बिजोरा), अंकेश कुमार, संदीप कुमार (शाहपुर नगरीय) और स्वर्गद्वारी रोजगार सेवक के विरुद्ध सेवाएं समाप्त करने के आदेश जारी किए गए।

अन्य विकासखंडों में भी कार्रवाई

गंजडुंडवारा विकासखंड के प्रियंका (नरदोली), गीता (नगर कंचनपुर), अंकुर यादव (अकबरपुर पलिया), पुष्पेंद्र कुमार (सिकंदरपुर बेस), राजेंद्र कुमार (वमनपुरा) व पवन कुमार (नगला चीना) की सेवाएं समाप्त करने के निर्देश दिए गए। वहीं सिद्धपुर विकासखंड के चंदन सिंह (बिलौटी) के विरुद्ध भी कार्रवाई प्रारंभ की गई है।

जिलाधिकारी ने कहा कि सरकारी कार्यों में शिथिलता, निर्देशों की अवहेलना, गुटबाजी व सरकारी धन के दुरुपयोग जैसी गतिविधियों में लिप्त कर्मचारियों को बख्शा नहीं जाएगा।

सहावर की प्रगति सराहनीय, रजिस्ट्री पर जोर

सहावर तहसील की प्रगति सराहनीय पाई गई। जिलाधिकारी ने अन्य तहसीलों को भी 10 अक्टूबर तक सर्वे व डेटा अपलोड कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि फॉर्मर रजिस्ट्री कार्य को युद्धस्तर पर चलाया जाए, ताकि 30 नवंबर तक सभी किसानों का पंजीकरण पूर्ण हो सके। बिना रजिस्ट्री के किसानों को अनुदानित बीज व उर्वरक का लाभ नहीं मिलेगा। बैठक में उप जिलाधिकारी, उप कृषि निदेशक, जिला कृषि अधिकारी, पूर्ति अधिकारी, बीएसए, बीडीओ व अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष पूर्ण होने पर 'पथ संचलन' में हिस्सा लेने का शुभ अवसर मिला

परिवहन विशेष न्यूज

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष पूर्ण होने पर आज बिनावर नगर में आयोजित 'पथ संचलन' में हिस्सा लेने का शुभ अवसर मिला।

अनुशासन, सेवा, सांस्कृतिक जागरण और सामाजिक कल्याण के अविचल संकल्प पर आधारित राष्ट्रीय स्वयंसेवकसंघ नें अपनी शताब्दी की यह विराट, वैभवशाली एवं राष्ट्रभावना से समृद्ध यात्रा पूर्ण की है।

संघ का संदेश, राष्ट्रभक्ति, चरित्र-निर्माण और सर्वांगीण उन्नति के साथ भारत की सांस्कृतिक चेतना एवं राष्ट्रीय एकता का अटल व अक्षुण्ण ध्वजवाहक है।

#RSS100Years

भारत की वित्तीय जागरूकता क्रांति-"आपकी पूंजी, आपका अधिकार"- बैंकों में फंसे 1.84 लाख करोड़ रुपयों को जनता तक पहुँचाने की ऐतिहासिक पहल

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर अमेरिका ब्रिटेन, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में"अनक्लेमड मनी अथॉरिटी" जैसी संस्थाएं वर्षों से सक्रिय हैं।वे निष्क्रिय खातों का डेटा केंद्रीकृत रखती हैं और नागरिकों को ऑनलाइन जांच की सुविधा देती हैं।4 अक्टूबर 2025 को केंद्रीय वित्तमंत्री ने भी एक ऐतिहासिक राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू किया गया जो इसी मॉडल को भारतीय सामाजिक और डिजिटल संदर्भ में आगे बढ़ा रहा है।यह अभियान भारत को वैश्विक वित्तीय समावेशन (ग्लोबल फाइनेंसियल इन्क्लूशन) का अग्रणी राष्ट्र बना सकता है।भारत की बैंकिंग व्यवस्था में आज लगभग 1.84 लाख करोड़ रुपये "बिना दावे" या "अनक्लेम्ड" के रूप में पड़े हैं। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि यह वह पूंजी है जो लाखों नागरिकों की मेहनत की कमाई थी, परंतु किसी न किसी कारणवश वह अपने मालिकों तक वापस नहीं पहुँच पाई। इनमें ऐसे खाते भी हैं जिनके धारक का निधन हो गया,कोई देश छोड़कर चला गया, किसी को अपने खाते की जानकारी या दस्तावेज़ नहीं मिल रहे, या कोई व्यक्ति अपनी जमा राशि को भूल चुका है।इस अभियान का प्रमुख उद्देश्य बैंकों, बीमा कंपनियों, म्यूचुअल फंड हाउसों, एनपीएस, और अन्य वित्तीय संस्थानों में बिना दावे की पड़ी लगभग 1.84 लाख करोड़ रूपए की संपत्तियों को उनके असली मालिकों या उनके कानूनी उत्तराधिकारियों तक पहुँचाना है।भारतीय रिज़र्व बैंक के अनुसार, इन निधियों का बड़ा हिस्सा बचत खातों, सावधि जमाओं,बीमा पॉलिसियों, म्यूचुअल फंड्स, शेयरों, डाक योजनाओं और पेंशन खातों में वर्षों से निष्क्रिय पड़ा है।यह स्थिति न केवल वित्तीय प्रणाली की पारदर्शिता पर सवाल उठाती है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि आम जनता और संस्थानों के बीच सूचना और पहुंच की कमी किस तरह आमदनी को निष्क्रिय बना देती है।वित्त मंत्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि"यह जनता का पैसा है, यह राष्ट्र की परिसंपत्ति नहीं। इसका हकदार वही है जिसने इसे अर्जित किया या उसके कानूनी वारिस।"यह बयान न केवल वित्तीय समावेशन की भावना को पुष्ट करता है, बल्कि भारत की वित्तीय व्यवस्था में न्यायसंगत वितरण और पारदर्शिता की दिशा में एक बड़ा कदम है।

साथियों बात अगर हम समस्या का मूल कारण, निष्क्रिय खाते और प्रशासनिक जटिलताएं इसको समझने की करें तो, यह समझना आवश्यक है कि आखिर इतने बड़े पैमाने पर 1.84 लाख करोड़ रुपये कैसे "अनक्लेम्ड" रह गए। इसके पीछे कई सामाजिक और प्रशासनिक कारण हैं (1)मृत्यु के बाद वारिसों की अनभिज्ञता:-बहुत से खाताधारक अपनी जमा राशि के वारिस तय नहीं करते या नामांकन नहीं जोड़ते। मृत्यु के बाद परिवार को इस खाते की जानकारी नहीं होती।(2) प्रवासन या पतापरिवर्तनः-लाखों लोग विदेश चले गए या अपने पते बदल लिए। बैंक के पास अपडेट नहीं पहुंचने से खातों में संपर्क टूट गया। (3)दस्तावेजों की कमीः-बहुत से लोग पासबुक एफडी रसीद, बीमा पॉलिसी नंबर जैसी जानकारी खो देते हैं।(4)सिस्टम की जटिलताः-अलग-अलग संस्थानों की अलग-अलग प्रक्रियाएं होने से आम व्यक्ति भ्रमित रहता है। (5)तकनीकी जागरूकता का अभावः ग्रामीण और बुजुर्ग वर्ग के लोग डिजिटल बैंकिंग या ऑनलाइन दावे की प्रक्रिया नहीं जानते।इन सभी कारणों ने मिलकर करोड़ों रुपये को निष्क्रिय कर दिया, जिससे बैंकों के पास ऐसी राशि जमा होती चली गई जो संभवतः "किसी की है भी और किसी के पास नहीं भी।"

साथियों बात अगर हम अभियान के तीन स्तंभोंअवेयरनेस एक्सेस और एक्शन को समझने की करें तो,वित्त मंत्री ने अधिकारियों को इस अभियान को तीन 'ए' पर केंद्रित करने के निर्देश दिए हैं - (1) अवेयरनेस (जागरूकता) - आम जनता को यह जानकारी देना कि यदि उनकी कोई जमा राशि या निवेश निष्क्रिय पड़ा है तो वे उसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए डिजिटल, सोशल मीडिया, रेडियो, टीवी और ग्राम पंचायत स्तर तक जन-संवाद चलाए जाएंगे। (2)एक्सेस (पहुँच):एक एकीकृत ऑनलाइन पोर्टल तैयार किया जाएगा जिसमें व्यक्ति अपने नाम,आधार पैन या मोबाइल नंबर से यह जांच सकेगा कि उसके नाम से कोई निष्क्रिय खाता या निवेश किसी संस्था में तो नहीं है। (3) एक्शन (कार्रवाई): वास्तविक दावेदार को दस्तावेजों के सत्यापन के बाद पैसा वापस दिलाया जाएगा। बैंकिंग लोकपाल, आरबीआई, सेबी और इरडा जैसे नियामक संस्थान इस प्रक्रिया की निगरानी करेंगे ताकि किसी प्रकार की देरी या गड़बड़ी न हो।ये तीनों स्तंभ न केवल प्रक्रिया को तेज करेंगे बल्कि वित्तीय व्यवस्था में पारदर्शिता का नया मानक स्थापित करेंगे।

साथियों बात अगर हमजनता को होने वाले प्रत्यक्ष लाभो को समझने की करें तो, "आपकी पूंजी,आपका अधिकार" अभियान से आम जनता को कई प्रत्यक्ष लाभ होंगे-(1) भूली हुई जमा राशि वापस पाने का अवसरः-लाखों परिवारों को अपने स्वर्गीय परिजनों की जमा पूंजी पुनः प्राप्त करने का मौका मिलेगा।(2)वित्तीय आत्मविश्वास में वृद्धिः-लोगों का बैंकों और वित्तीय संस्थानों पर भरोसा बढ़ेगा।(3)डिजिटल फाइनेंशियल लिटरेसी में सुधारः- लोगों को अपने निवेशों की निगरानी और अपडेट रखने की सीख मिलेगी।(4) आर्थिक प्रवाह में वृद्धिः- निष्क्रिय पूंजी के सक्रिय होने से अर्थव्यवस्था में तरलता बढ़ेगी।हितधारकों को होने वाले लाभ-इस पहल से केवल जनता ही नहीं, बल्कि कई अन्य हितधारक भी लाभान्वित होंगे- (1) बैंक और वित्तीय संस्थानः- पुरानी निष्क्रिय खातों को बंद कर सकेंगे, जिससे उनके ऑडिट और रिपोर्टिंग का बोझ कम होगा।(2)सरकार औरनियामकः- पारदर्शिता और जनता के भरोसे में वृद्धि से वित्तीय अनुशासन मजबूत होगा।(3)वित्तीय तकनीकी कंपनियां- डेटा एकीकरण, पहचान सत्यापन और डिजिटल क्लेम सिस्टम के विकास में नई संभावनाएं खुलेंगी।(4)आर्थिक विकासः- निष्क्रिय धन के पुनः प्रवाह से बाजार में पूंजी की उपलब्धता बढ़ेगी, जिससे निवेश और उपभोग दोनों में बहुत सुधार होगा।

साथियों बात अगर हम योजना को लागू करने में संभावित कठिनाइयों को समझने की करें तो,हालांकि यह योजना क्रांतिकारी है, पर इसके क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ भी सामने आएंगी(1)दस्तावेजों की जटिलताः- पुराने खातों या बीमा पॉलिसियों के दस्तावेज़ कई बार उपलब्ध नहीं होते।(2)नकली दावों का खतराः-यदि सत्यापन प्रणाली कमजोर रही तो धोखाधड़ी के मामले सामने आ सकते हैं। (3)ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना की कमीः- इंटरनेट और डिजिटल जानकारी की कमी से कई पात्र लोग वंचित रह सकते हैं।(4)विभिन्न संस्थानों का डेटा असंगतः-बैंक,बीमा औरम्यूचुअल फंड हाउसों के डेटा में तालमेल की कमी।(5)न्यायिक प्रक्रिया की देरीः-यदि किसी खाते पर कानूनी विवाद है, तो उसका समाधान लंबा खिंच सकता है।

साथियों बात अगर हम इस योजना से धोखाधड़ी के खतरों को समझने की करें तो,(1)इतनी बड़ी रकम का दावा उठने से साइबर अपराधियों और फर्जी दस्तावेज़ बनाने वाले गिरोह सक्रिय हो सकते हैं।(2)संभावित जोखिमः-फर्जी पहचान पत्र या झूठे वारिस प्रमाणपत्र के आधार पर दावा।(3) साइबर फ्रॉड- नकली वेबसाइट या फिशिंग लिंक के ज़रिए लोगों की निजी जानकारी चुराना।(4)अंदरूनी मिलीभगत-बैंक कर्मियों या एजेंटों द्वारा गड़बड़ी।सुरक्षा उपायः-(1)आधार आधारित ई-केवाईसी अनिवार्य किया जाएगा।(2)डेटा एनक्रिप्शन और मल्टी-लेयर वेरिफिकेशन सिस्टम लागू होंगे।(3)शिकायत निवारण के लिए विशेष हेल्पलाइन और पोर्टल बनाए जाएंगे(4)नियामक एजेंसियों द्वारा नियमित ऑडिट और क्रॉस-चेक।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि 1.84 लाख करोड़ रुपये,यह केवल आंकड़ा नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीय परिवारों की मेहनत और उम्मीदों का प्रतीक है।वित्त मंत्री का यह प्रयास भारतीय वित्तीय व्यवस्था में जनता के हक़ को जनता तक पहुँचाने का एक ऐतिहासिक अवसर है।यदि इस योजना को पारदर्शिता, तकनीकी दक्षता और संवेदनशीलता के साथ लागू किया गया, तो यह न केवल भारतीय नागरिकों को उनका पैसा लौटाएगी, बल्कि यह पूरी दुनिया को यह संदेश देगी कि "भारत अपनी जनता की पूंजी की रक्षा करने वाला राष्ट्र है।"

कहानी
मेरी प्यारी अम्मा

ऋचा यादव
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

आज तुम नौकरी से रिटायर होकर घर वापस आ गई हो।

या यूँ कहूँ कि आज मैं बीस साल की उम्र में, बिना ब्याही माँ के फ़र्ज़ से मुक्त हुई हूँ।

अब शायद मैं भी अपने सपनों को जी सकूँगी,

जब चाहूँ हँस सकूँगी, रो सकूँगी,

तुम्हारी गोद में सिर रखकर सो सकूँगी।

अम्मा, मैं जानती हूँ मेरी ये बातें तुम्हें अजीब लगेंगी।

मगर जब पापा और तुमने यह फ़ैसला किया कि तुम नौकरी करोगी,

तब तुम दोनों ने यह कभी नहीं सोचा कि मैं, तुम्हारी बड़ी बेटी,

कैसे अपनी छोटी-सी उम्र में माँ जैसी ज़िम्मेदारियों का बोझ उठाऊँगी।

सुबह से सबके टिफ़िन, पानी की बोतलें, कपड़े...

मेरे हाथों में ही सब बंधे रहते।

सोम और सोनम के लिए मैं बहन नहीं, एक सख़्त पहरेदार बन गई।

पढ़ाई, खेलकूद, दोस्तों के साथ समय—

सब छूटता चला गया।

तुम्हें याद है अम्मा?

सोम ने एक बार घड़ी माँगी—तुमने तुरंत दिला दी।

सोनम ने पिकनिक की ज़िद की—तुमने हाँ कर दी।

मगर मैं? मैं तो हमेशा बड़ी बहन थी,

जिसे अपनी इच्छाएँ कुर्बान करनी थी।

मेरी परीक्षाओं के दिनों में भी रसोई की चाबी मेरे हाथ में रहती।

आरती, पूजा, घर का हर छोटा-बड़ा काम...

सब मेरी ज़िम्मेदारी।

कभी सोचा तुमने, अम्मा,

कि मेरी भी कोई पसंद-नापसंद थी?

कभी सोचा कि मैं भी सिर्फ़ बेटी हूँ,

न कि घर की नौकरानी?

तुम और पापा अपने प्रमोशन और सपनों में व्यस्त थे,

सोम और सोनम अपनी दुनिया में,

और मैं... बस तुम्हारी उम्मीदों में बंधी रही।

मेरे हिस्से की सारी ख़ुशियाँ, सारा समय धीरे-धीरे दूसरों में बाँट दिया गया।

हाँ, तुम कहती थीं—"बड़ी बेटी हो, उदाहरण बनना है।"

लेकिन अम्मा, क्या बड़ी बेटी होना इतना बड़ा अपराध होता है?

आज जब तुम लौट आई हो,

तो मैं कहना चाहती हूँ—

अब मुझे मेरी ज़िंदगी जी लेने दो।

तेल लगवाना है सर में,

सुबह देर तक सोना है,

कालेज बंद करके फ़िल्म देखनी है,

अपने लिए ऊपर का कमरा चाहिए मुझे।

अब मैं हर वो काम करूँगी

जिसके लिए मैं तरसती रही।

और हाँ, प्लीज़, कुछ साल तक मेरी शादी की बात मत करना।

क्योंकि पहले मुझे तुमसे

अपना बचपन और अपनी आज़ादी वापस लेनी है।

मैं अब बड़ी बेटी नहीं रहूँगी,

अब सबसे छोटी बनकर जीना चाहती हूँ।

"आपातकाल के अंधकार से शताब्दी के प्रकाश तक : संघ की यात्रा"

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर रहा है। 1975 के आपातकाल के दौरान लाखों स्वयंसेवकों ने जेल यातनाएँ सही और भूमिगत रहकर लोकतंत्र की रक्षा की। यह संघर्ष केवल संगठन की शक्ति का प्रमाण नहीं था, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की जड़ों को गहराई से सींचने वाला अध्याय भी था। संघ ने आपातकाल की ज्वाला से निकलकर समाज सेवा, शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्राम विकास और राष्ट्रीय एकता के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए। शताब्दी वर्ष का उत्सव अतीत की गौरवगाथा और भविष्य के भारत निर्माण का संकल्प है।

- डॉ. सत्यवान सौरभ

भारत का आधुनिक इतिहास अनेक उतार-चढ़ावों और संघर्षों से भरा हुआ है। स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज़ादी के बाद लोकतंत्र की रक्षा तक, कई संगठन और व्यक्तित्व देश की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे। इनमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) एक ऐसा संगठन है जिसने न केवल राष्ट्र निर्माण के सांस्कृतिक और सामाजिक क्षेत्र में योगदान दिया, बल्कि कठिनतम परिस्थितियों में लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए भी अग्रणी भूमिका निभाई। विशेष रूप से 1975-77 का आपातकाल भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी परीक्षा थी। इस कालखंड ने संघ की संगठनात्मक क्षमता, साहस और राष्ट्रनिष्ठा को परखने का अवसर दिया। आज जबकि संघ अपने शताब्दी वर्ष (2025-26) की ओर बढ़ रहा है, यह स्मरण करना स्वाभाविक है कि आपातकाल के समय किए गए संघर्ष ने भारतीय राजनीति और समाज को किस प्रकार नई दिशा दी।

आपातकाल की पृष्ठभूमि

25 जून 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल लागू करने की घोषणा की। आधिकारिक रूप से इसका कारण आंतरिक अशांति बताया गया, परंतु वास्तविक कारण राजनीतिक था। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने इंदिरा गांधी के चुनाव को अवैध घोषित किया था, जिससे उनके प्रधानमंत्री पद पर संकट आ गया था। सत्ता बचाने के लिए उन्होंने संविधान की मूल भावना को ही दरकिनार करते हुए आपातकाल लागू कर दिया।

इस दौरान नागरिक स्वतंत्रताएँ समाप्त कर दी गईं। प्रेस पर सेंसरशिप लगा दी गई, विरोध करने वाले लाखों लोगों को जेलों में ठूंस दिया गया। विपक्षी दलों के नेताओं के साथ-साथ सामाजिक संगठनों और कार्यकर्ताओं को भी निशाना बनाया गया। भारतीय लोकतंत्र के लिए यह एक अंधकारमय काल था।

संघ की परीक्षा और संघर्ष

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ उस समय एक विशाल संगठन था। लाखों स्वयंसेवक गाँव-गाँव, शहर-शहर सामाजिक सेवा और राष्ट्रभक्ति की भावना जगाने में लगे हुए थे। आपातकाल लागू होते ही सरकार ने संघ को भी प्रतिबंधित कर दिया। हजारों स्वयंसेवक जेलों में डाल दिए गए। अनुमान है कि 1,00,000 से अधिक कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया और लगभग 30,000 से अधिक स्वयंसेवक भूमिगत होकर गुप्त रूप से आंदोलन चलाते रहे।

संघ की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि उसने भयभीत हुए बिना लोकतंत्र की रक्षा का बीड़ा उठाया। जहां विपक्षी दलों के कई नेता जेलों में बंद थे, वहीं संघ के स्वयंसेवक भूमिगत होकर जनता को जागरूक कर रहे थे। वे गुप्त पत्रक निकालते, संदेश पहुँचाते और सत्याग्रह के माध्यम से जनता में प्रतिरोध की भावना जगाते। यह संगठनात्मक अनुशासन और साहस ही था कि पूरे देश में लोकतंत्र बचाने का अभियान जीवित रहा।

भूमिगत आंदोलन और संगठनात्मक क्षमता

आपातकाल के दौरान संघ ने अपनी मजबूत शाखा व्यवस्था और अनुशासित संगठन का उपयोग किया। हजारों कार्यकर्ताओं ने भूमिगत रहते हुए आंदोलन की मशाल जलाए रखी। दिल्ली, मुंबई, जयपुर, नागपुर, कोलकाता, चेन्नई और लखनऊ जैसे बड़े शहरों से लेकर गाँव-गाँव तक संदेश पहुँचाए जाते रहे।

केंद्र सरकार ने बार-बार यह दावा किया कि विरोध समाप्त हो चुका है, लेकिन संघ की गुप्त गतिविधियों ने सरकार की नींद हराम कर दी। यही कारण था कि इंदिरा गांधी सरकार ने संघ को विशेष रूप से निशाना बनाया और इसे कुचलने के लिए पूरी ताकत लगा दी। परंतु सत्य यह है कि जितना दमन बढ़ता गया, उतनी ही ताक़त से संघ का प्रतिरोध भी बढ़ता गया।

लोकतंत्र की बहाली और जनता पार्टी की सरकार

आपातकाल की 21 महीनों की अवधि ने जनता को यह सिखा दिया कि स्वतंत्रता और लोकतंत्र का महत्व क्या होता है। जब 1977 में चुनाव की घोषणा हुई, तो पूरे देश में इंदिरा गांधी और कांग्रेस के खिलाफ आक्रोश फूट पड़ा। संघ के स्वयंसेवकों ने विपक्षी दलों के नेताओं के साथ मिलकर चुनाव प्रचार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

जनता पार्टी का गठन हुआ और उसे अप्रत्याशित विजय मिली। इंदिरा गांधी की करारी हार हुई। यह भारतीय राजनीति में एक ऐतिहासिक मोड़ था, जहां संघ ने न केवल लोकतंत्र की रक्षा की बल्कि एक वैकल्पिक राजनीतिक धारा को भी मजबूत आधार प्रदान किया।

समाज पर आपातकाल का प्रभाव

आपातकाल का एक बड़ा सकारात्मक पहलू यह रहा कि इसने जनता को जागरूक कर दिया। नागरिक स्वतंत्रताओं के महत्व का बोध हुआ और लोकतंत्र की रक्षा का संकल्प और मजबूत हुआ। संघ ने इस जागरूकता को स्थायी बनाने के लिए समाज में व्यापक अभियान चलाए।

आज भी जब लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की चर्चा होती है, तो आपातकाल का उदाहरण दिया जाता है। यह कालखंड इस बात का प्रतीक है कि किसी भी लोकतांत्रिक राष्ट्र में सत्ता के दमन के विरुद्ध संगठित प्रतिरोध आवश्यक है।

संघ की वर्तमान भूमिका और शताब्दी वर्ष का महत्व

संघ आज अपने शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर रहा है। 1925 में विजयादशमी के दिन नागपुर में डॉ. हेडगेवार द्वारा स्थापित इस संगठन ने बीते सौ वर्षों में सेवा, संगठन और राष्ट्र निर्माण का एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

आपातकाल के संघर्ष ने संघ की छवि को और भी प्रखर बनाया। आज संघ केवल शाखाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्राम विकास, आपदा प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक समरसता जैसे अनेक क्षेत्रों में कार्यरत है।

शताब्दी वर्ष के अवसर पर संघ ने व्यापक जनजागरण अभियान की योजना बनाई है। देशभर में लाखों स्वयंसेवक घर-घर जाकर संपर्क करेंगे। समाज के हर वर्ग तक पहुँचने का प्रयास होगा ताकि राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक जागरण को और मजबूत किया जा सके।

संघ का संघर्ष और समर्पण

आपातकाल भारतीय लोकतंत्र की सबसे कठिन परीक्षा थी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस परीक्षा में उत्तीर्ण होकर यह सिद्ध कर दिया कि संगठन की शक्ति ही परिवर्तन की सच्ची साथी होती है। हजारों स्वयंसेवकों ने जेल की यातनाएँ सहीं, भूमिगत रहकर संघर्ष किया और लोकतंत्र की लौ बुझने नहीं दी।

आज जब संघ अपने शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर रहा है, तो यह केवल एक संगठन का उत्सव नहीं है बल्कि राष्ट्र की उस जीवटता का प्रतीक है जिसने हर संकट में लोकतंत्र और स्वतंत्रता को सर्वोपरि रखा। आपातकाल का संघर्ष आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत है और यह संदेश देता है कि परिवर्तन की धारा को कोई भी सत्ता, कोई भी दमन लंबे समय तक रोक नहीं सकता।

हम हमेशा चिढ़े हुए क्यों रहते हैं?

सूरज रजक

नकारात्मक चिंतन और कुतर्क करने की आदत की वजह से इंसान का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है.

मुद्दे चाहे कोई भी हो, पारिवारिक हो सामाजिक, राजनीतिक हो संस्कृति हो या फ़रि धार्मिक हो, तर्क करने की आजादी समाज में बहुत ही कम होती है और हम आंख बंद करके इन सब चीजों का समर्थन करते हैं. परंपराओं के नाम पर ढेर सारे कुतर्क चलते आ रहे हैं और आश्चर्य की बात यह कि तथाकथित शिक्षित माने जाने वाले लोग भी कुतर्कों का समर्थन करते हैं. यह भले ही खुले तौर पर ना करें लेकिन कुतर्कों को ढक करके इसका समर्थन करते हैं. ऐसे लोगों का स्वभाव हमेशा चिड़चिड़ा होता है क्योंकि भीतर से इन्हें यह बात पता होती है कि वो जो कह रहे हैं वो गलत है. जिसका समर्थन कर रहे हैं वो गलत है.

फिर भी बिना परिणाम की चिंता किए हुए हम लोग इन सब चीजों का समर्थन करते हैं. कुछ एक उदाहरण से इसे समझा जा सकता है.

लैंगिक असमानता के खिलाफ कोई कह दे तो लोग नाराज हो जाते हैं. मानवता समानता के नाम पर तर्क कर दें तो लोग चिढ़ जाते हैं. धर्म के नाम पर बराबरी कर दें तो नाराज हो जाते हैं. अमीरों के सामने गरीबों का पक्ष लें तो नाराज हो जाते हैं. रंगभेद वाले देशों में आज भी रंग के नाम पर भेद के किस्से सुनने को मिल जाते हैं. उनके सामने रंगभेद के खिलाफ अगर आप कुछ कह दें तो लोग नाराज हो जाते हैं. जातीय समानता की बात कहते हैं तो लोग नाराज हो जाते हैं.

दुनिया तकनीक के मामले में बहुत आगे पहुंच चुकी है लेकिन तर्क करने के मामले में अभी भी इंसान आदिम युग की सोच प्रभावित हैं.

वसुधैव कुटुंबकम सिर्फ भाषणों में और प्रवचनों में सुनने को मिलते हैं. लोग कहते भी कि ऐसा तो कैसा कहना पड़ता है.

लेकिन सभी जगह ऐसा नहीं है. कुछ एक मामले में मनुष्य तार्किक भी है. मनुष्य वही तर्क करता है जहां वो पीड़ित होता है. उसका जहां नुकसान होता है वहां वो तार्किक बन जाता है लेकिन दूसरों के मामले में कुतर्क का खजाना लेकर बैठा होता है. वास्तव में यह खुद को ठगने जैसा है. जब हम बेईमानी करते हैं,कुतर्क करते हैं. वास्तव में हमारा अंतः करण मलिन हो जाता है. अगर लंबे समय तक यही सब जीवन में चलता रहता है तो धीरे-धीरे हमारी छवि परिवार में समाज में नकारात्मक बन जाती है. हम सहज सरल रहने की जगह चिड़चिडे हो जाते हैं. एकात्मक योग कहता है कि जब तक भीतर और बाहर दोनों जगह से हम एक समान नहीं होंगे, वास्तविक सुख कभी मिलेगा ही नहीं.

किचन डॉक्टर : रंग -बिरंगी सब्जियाँ रखें आपका ख्याल

चंद्र मोहन

प्रकृति की छठा निराली है. रंगों से सराबोर है यह प्रकृति. ज़मीन से आसमान तक कई रंग है. हरा, पीला, और लाल. आसमान में इंद्रधनुष तो समा ही बांध देता है. सात रंगों से गुंथा यह इंद्रधनुष, मानव की आशाओं को सपने की उड़ान दे कर पँख लगा जाता है.

प्रकृति यह रंग जब हमारे फलों और सब्जियों में जगह बना लेते हैं तो उनका असर सपष्ट हमारी सेहत और स्वास्थ्य पर नजर आने लगता है.

रोज़मारा के जीवन में हम तीन टाइम कुछ न कुछ खाते ही हैं.

आलू, गोभी, टमाटर, मटर, बैंगन सभी सब्जियाँ हमारी रसोई का एक एहम हिस्सा हैं.

हरी गोभी यानी कि 'ब्रोकली' जामुनी रंग के बैंगन हों या फिर सफ़ेद, पीले बैंगन सभी मानव के स्वास्थ्य के लिए लाभदायक हैं.

ब्रोकली दिल की बीमारियों से बचाने में काफी कारगर है। ब्रोकली में पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट और फाइबर कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने और दिल को स्वस्थ रखने में मदद करते हैं. इसके अलावा, ब्रोकली में पोटेशियम भी होता है, जो रक्तचाप को नियंत्रित करने और दिल की धड़कन को स्थिर बनाए रखने में मदद करता है.

ब्रोकली दिल की बीमारी से कैसे बचाती है:

एंटीऑक्सीडेंट:

ब्रोकली में पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट, जैसे कि सल्फोराफेन, धमनियों में प्लाक के निर्माण को कम करके रक्त प्रवाह को बेहतर बनाने में मदद करते हैं, जिससे हृदय संबंधी बीमारियों का जोखिम कम हो जाता है.

फाइबर:

ब्रोकली में फाइबर कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में मदद करता है, जो दिल की बीमारी के जोखिम को कम करता है.

पोटेशियम:

ब्रोकली में पोटेशियम की मात्रा अधिक होती है, जो रक्तचाप को नियंत्रित करने और दिल की धड़कन को स्थिर बनाए रखने में मदद करता है.

सल्फोराफेन:

ब्रोकोली में सल्फोराफेन, जो धमनियों में एक सुरक्षात्मक प्रोटीन को सक्रिय करता है, जिससे सूजन कम होती है और एथेरोस्क्लेरोसिस (धमनियों में वसायुक्त पट्टिकाओं का निर्माण) का खतरा कम होता है.

विटामिन के:

ब्रोकली में विटामिन के भी होता है, जो रक्त के थक्के और परिसंचरण को नियंत्रित करता है.

ब्रोकली का सेवन कैसे करें:

ब्रोकली को आप सूप, सलाद या स्टेक में शामिल कर सकते हैं। ब्रोकली को उबालने के बजाय भाप में पकाने या थोड़ा सा तेल में भूनने से इसके पोषक तत्व अधिक संरक्षित रहते हैं.

निष्कर्ष:

ब्रोकली एक स्वस्थ और किफायती सब्जी है जो दिल की बीमारियों के जोखिम को कम करने में मदद कर सकती है। अपने आहार में ब्रोकोली को शामिल करके, आप अपने दिल को स्वस्थ रख सकते हैं.

ब्रोकली जिसे आम भाषा में हरी गोभी कहते हैं. यह सबसे अधिक सर्दियों के मौसम में पाया जाता है. हालांकि बहुत कम लोग इसे खाना पसंद करते हैं. आइए जानते हैं ब्रोकली खाने से क्या-क्या फायदे हैं, इसमें कौन से विटामिन पाए जाते हैं.

ब्रोकली जो चमत्कारी गुणों से भरपूर हैं. सर्दियों के मौसम में यह सबसे अधिक पाया जाता है. हालांकि बहुत कम लोग इसे खाना पसंद करते हैं.

ब्रोकली को एक सुपरफूड भी माना जाता है क्योंकि इसमें कई पोषक तत्व होते हैं जो सेहत के लिए लाभकारी होते हैं. ब्रोकली में विटामिन C, विटामिन K, फोलेट, और फाइबर जैसे पोषणतत्व पाए जाते हैं. इसमें कई एंटीऑक्सीडेंट्स भी होते हैं जो सेहत के लिए फायदेमंद हो सकते हैं.

पोषण से भरपूर- ब्रोकली में विटामिन C, विटामिन K, फोलेट, एंटीऑक्सीडेंट्स और फाइबर जैसे पोषणतत्व प्रचुर मात्रा में होते हैं, जो क़ी आपके शारीरिक स्वास्थ्य के लिए जरूरी हैं.

किडनी समस्या से हैं परेशान तो चेंज करें लाइफ स्टाइल, खाने में शामिल करें.

अगर आप हरी गोभी यानी ब्रोकली खाना चाहते हैं तो सबसे आसान तरीका इसे उबाल लें और इसके पानी को बिल्कुल भी न फेंके. वैसे ब्रोकली उबालकर खाने से सेहत के लिए काफी फायदेमंद होता है.

स्टिर-फ्राईः ब्रोकली को तेल में स्टिर-फ्राई करके उसमें स्वादिष्ट मसाले डालें और फिर इसका सेवन करें.

सलाद के रुप में- ब्रोकली को छोटे टुकड़ों में काटकर सलाद के रुप में सेवन कर सकते हैं.

बैंगन

बैंगन का गहरा बैंगनी रंग उसमें मौजूद एंथोसायनिन (anthocyanin) नामक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट के कारण होता है, जो कोशिकाओं को नुकसान से बचाता है और हृदय रोग और कैंसर के खतरे को कम कर सकता है. ये रंगीन यौगिक स्वास्थ्य के लिए बेहद फायदेमंद हैं.

बैंगन के रंग और उनके स्वास्थ्य लाभः

एंथोसायनिन (बैंगनी रंग):

यह एंटीऑक्सीडेंट के रूप में कार्य करता है, जो शरीर की कोशिकाओं को मुक्त कणों से होने वाले नुकसान से बचाता है.

यह सूजन को कम करने में मदद कर सकता है.

यह हृदय रोग और कुछ प्रकार के कैंसर के जोखिम को कम करने में सहायक हो सकता है.

नासुनिन एक प्रकार का एंथोसायनिन है जो विशेष रूप से बैंगन के छिलके में पाया जाता है और यह मस्तिष्क की झिल्लियों में लिपिड की रक्षा करता है.

यह आयरन के संचय को रोकता है और नई रक्त वाहिकाओं के विकास को रोककर कैंसर से लड़ने में मदद कर सकता है.

बैंगन में कई फेनोलिक यौगिक होते हैं जिनमें क्लोरोजेनिक एसिड सबसे प्रचुर मात्रा में पाया जाने वाला यौगिक है, जो बैंगन के गूदे के भूरापन का कारण बनता है। ये यौगिक बैंगन के स्वास्थ्य लाभों में योगदान करते हैं, जैसे कि शुगर लेवल को नियंत्रित करने में मदद करना.

क्लोरोजेनिक एसिडः यह बैंगन में सबसे प्रचुर मात्रा में पाया जाने वाला फेनोलिक यौगिक है.

अन्य फेनोलिक यौगिकः बैंगन में पॉलीफेनोल्स भी होते हैं जो एंटीऑक्सिडेंट के रूप में कार्य करते हैं.

स्वास्थ्य लाभः इन यौगिकों से शुगर लेवल को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है.

भूरापनः पॉलीफेनोल्स के ऑक्सीकरण से बैंगन का गूदा भूरा हो जाता है.

बैंगन जैसे स्वस्थ आहार विकल्पों को शामिल करने से आपको यह हासिल करने में मदद मिल सकती है.

बैंगन के फ़ायदों में विटामिन बी, विटामिन के, विटामिन सी, ज़िंक और मैग्नीशियम जैसे ढेरों विटामिन और खनिज शामिल हैं जो त्वचा के स्वास्थ्य और लचीलेपन को बढ़ावा देते हैं.

अगर आपको गुर्दे की कोई बीमारी है तो आपको इसके सेवन को लेकर सावधान रहना चाहिए.इसमें ऑक्सलेट नामक यौगिक होता है जो गुर्दे की पथरी बनाने में उत्प्रेरक का काम करता है। गुर्दे की पथरी वाले या गुर्दे की पथरी होने के उच्च जोखिम वाले लोगों को इसके सेवन से बचना चाहिए.

बैंगन फाइबर का अच्छा स्रोत हैं, इनमें वसा कम होती है और कुछ ज़रूरी विटामिन और खनिज भी होते हैं.

इनमें ग्लाइसेमिक इंडेक्स (जीआई) भी कम होता है, जो आपके खाने में कुछ ऐसा शामिल करने के लिए एकदम सही है जो आपके रक्त शर्करा के स्तर को न बढ़ाए.

आयुर्वेद में बैंगन के बारे में बताई गई मुख्य चिंताओं में से एक है वात और पित्त दोषों को बढ़ाने की इनकी क्षमता.

आयुर्वेद के अनुसार, ये दोष विभिन्न शारीरिक क्रियाओं को नियंत्रित करते हैं और आहार तथा जीवनशैली संबंधी कारकों के कारण असंतुलित हो सकते हैं.

बहुत अधिक बैंगन खाने से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं क्योंकि इसमें सोलनिन नामक यौगिक होता है, जो अधिक मात्रा में होने पर पाचन को प्रभावित कर सकता है और सूजन पैदा कर सकता है.

सफेद बैंगन वजन घटाने, ब्लड शुगर कंट्रोल करने, पाचन सुधारने, हृदय स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और किडनी को स्वस्थ रखने जैसे कई स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है. यह फाइबर, मैग्नीशियम, पोटैशियम और अन्य पोषक तत्वों से भरपूर होता है जो शरीर को डिटॉक्सिफाई करने में मदद करते हैं.

सफेद बैंगन के स्वास्थ्य लाभ

वजन घटाने में सहायकः

इसमें मौजूद फाइबर पेट को लंबे समय तक भरा रखता है और भूख को कम करता है, जिससे वजन कम करने में मदद मिलती है.

ब्लड शुगर कंट्रोल करता हैः

फाइबर और मैग्नीशियम की मौजूदगी ब्लड शुगर लेवल को नियंत्रित करने में मदद करती है, जो डायबिटीज के मरीजों के लिए फायदेमंद है.

पाचन तंत्र को दुरुस्त रखता हैः फाइबर की अधिक मात्रा पाचन क्रिया को बेहतर बनाती है और कब्ज, गैस और एसिडिटी जैसी समस्याओं से राहत दिलाती है.

हृदय स्वास्थ्य के लिए फायदेमंदः यह खराब कोलेस्ट्रॉल (LDL) को कम करके अच्छे कोलेस्ट्रॉल (HDL) के स्तर को बनाए रखने में मदद करता है, जिससे हृदय स्वस्थ रहता है.

किडनी को स्वस्थ रखता हैः सफेद बैंगन की पत्तियां डिटॉक्सिफिकेशन का काम करती हैं, जो किडनी को स्वस्थ रखने में सहायक होती हैं.

शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालता हैः सफेद बैंगन शरीर को डिटॉक्सिफाई करने में मदद करता है, जिससे लिवर और किडनी की कार्यक्षमता बढ़ती है.

आप सफेद बैंगन को सब्जी के रूप में पकाकर खा सकते हैं.

इसे बेक करके या भूनकर भी सेवन किया जा सकता है.

बच्चों की डाइट में भी इसे शामिल करना फायदेमंद होता है.

किसी भी तरह की स्वास्थ्य समस्या होने पर विशेषज्ञ की सलाह लेने के बाद ही सफेद बैंगन का सेवन करें.

आरएसएस के 100 वर्ष : जांच के घेरे में एक सदी : हसनैन नक़वी

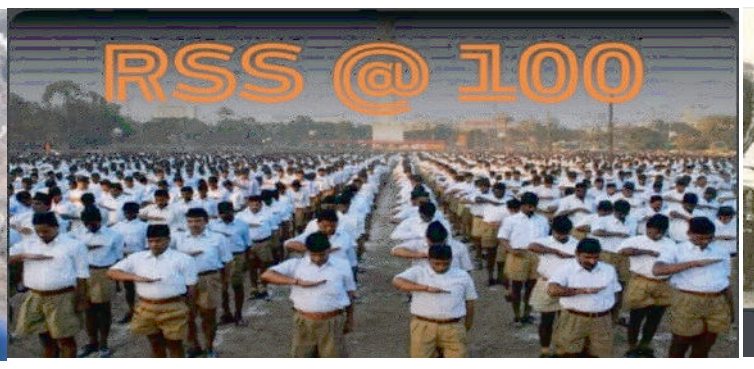

1939 में आरएसएस की बैठक

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) इस वर्ष अपनी शताब्दी मना रहा है। 27 सितंबर 1925 को नागपुर में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा स्थापित, आरएसएस देश के सबसे शक्तिशाली गैर-राजनीतिक संगठनों में से एक के रूप में विकसित हुआ है। इसके प्रख्यात संगठनात्मक अनुशासन और सामाजिक लामबंदी ने गहरे राजनीतिक प्रभाव को जन्म दिया है। फिर भी, इस शक्ति के साथ-साथ एक जटिल और विवादास्पद विरासत भी जुड़ी हुई है -- जिसकी भारत के संवैधानिक आदर्शों, बहुलतावादी संकल्प और सामाजिक न्याय की अनिवार्यताओं के आलोक में जाँच की जानी चाहिए।

धीरेंद्र के. झा, शैडो आर्मीज़: फ्रिंज ऑर्गनाइज़ेशन्स एंड फुट सोल्जर्स ऑफ़ हिंदुत्व (2019) में, आगाह करते हैं कि संघ को केवल एक सांस्कृतिक समाज के रूप में नहीं, बल्कि एघेरे में फंसे एक समुदाय की रक्षा के लिए एक अनुशासित हिंदू मिलिशिया के रूप में डिज़ाइन किया गया था (झा 2019, पृष्ठ 13)। यह ढाँचा इस बात को समझने के लिए महत्वपूर्ण है कि कैसे, समय के साथ, आरएसएस के उद्देश्य और कार्य अक्सर बहिष्कार और वैचारिक कठोरता के पैटर्न से टकराते रहे हैं।

आधारभूत दोष रेखाएँ : जाति, लिंग और नेतृत्व बहिष्कार

हालाँकि आरएसएस खुद को हिंदू एकता की ताकत के रूप में पेश करता है, लेकिन अपने शुरुआती वर्षों से ही इसने अपने भीतर गहरे सामाजिक पदानुक्रम को फिर से स्थापित किया है। नीलांजन मुखोपाध्याय, आरएसएसः आइकॉन्स ऑफ़ द इंडियन राइट (2009) में लिखते हैं कि सामाजिक समरसता के ढिंढोरा पीटने के बावजूद, संघ ऊँची जातियों का ही गढ़ बना रहा, जिसमें नेतृत्व की भूमिकाओं में दलितों (आदिवासियों) या पिछड़े वर्गों का प्रतिनिधित्व नगण्य था (मुखोपाध्याय, 2009, पृष्ठ 45)।

यह बहिष्कार लैंगिक गतिशीलता में भी परिलक्षित होता है। महिलाओं को कभी भी आरएसएस में शामिल नहीं किया जाता, बल्कि उन्हें अलग से संगठित राष्ट्रीय सेविका समिति में शामिल किया जाता है। शम्सुल इस्लाम ने आरएसएस, स्कूली पाठ्यपुस्तकें और महात्मा गांधी की हत्या (2013) में इस व्यवस्था को प्रतीकात्मक बताया है : संघ की समाज की कल्पना गहन रूप से पितृसत्तात्मक है, जहाँ महिला को परंपराओं की संरक्षक माना जाता है, न कि नेतृत्व में समान भागीदार (इस्लाम 2013, पृष्ठ 98)।

वैचारिक असंगति : संवैधानिक सिद्धांतों का प्रतिरोध

आरएसएस के मूलभूत सिद्धांत भारत की संवैधानिक व्यवस्था से टकराते थे। संघ के दूसरे सरसंघचालक गोलवलकर ने धर्मनिरपेक्ष, बहुलतावादी शासन के विचार को अस्वीकार कर दिया था। उन्होंने बंच ऑफ़ थॉट्स (1966) में लिखा, रहमारे संविधान की सबसे बुरी बात यह है कि इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे हमारा अपना कहा जा सके।' गोलवलकर ने संविधान की भावना का खुलेआम मज़ाक उड़ाया और उसे विदेशी बताया। उन्होंने लिखा कि अल्पसंख्यकों को केवल सह-अस्तित्व में रहना चाहिए, आत्मसात नहीं किया जाना चाहिए और चेतावनी दी कि हिंदू संस्कृति और विश्वदृष्टि को अपनाने से इंकार करने से वे राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा बन जाते हैं (बंच ऑफ़ थॉट्स, पृष्ठ 52)।

यह तिरस्कार सामाजिक समानता तक भी फैला हुआ था। गोलवलकर के लिए, जातिगत पदानुक्रम स्वाभाविक था और सामाजिक व्यवस्था का अभिन्न अंग था। उन्होंने समतावाद को पश्चिमी संदूषण बताते हुए खारिज करते हुए तर्क दिया, जातिविहीन समाज का विचार काल्पनिक है।

एक शांत दर्शक : आरएसएस और स्वतंत्रता संग्राम

भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के सबसे महत्वपूर्ण दौर —उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्ष — में आरएसएस अलग-थलग खड़ा रहा। व्यापक राजनीतिक लामबंदी के बजाय, इसने आंतरिक रूप से ध्यान केंद्रित किया और सांस्कृतिक शक्ति का विकास किया। विद्वानों ने बताया है कि संघ ने भारत छोड़ो आंदोलन और औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध अन्य महत्वपूर्ण अभियानों से काफ़ी हद तक दूरी बनाए रखी। गांधी, नेहरू, बोस और आज़ाद जैसे नेताओं के जेल जाने के बावजूद, आरएसएस ने चुप्पी साधे रखी।

बीआर अंबेडकर ने प्रसिद्ध रूप से टिप्पणी की थी कि संघ संघर्ष के दौरान अलग-थलग रहा (अंबेडकर, व्हाट कांग्रेस एंड गांधी हैव डन टू द अनटचेबल्स, 1945)। यहाँ तक कि सरदार वल्लभभाई पटेल ने भी राष्ट्रीय हित में इसके सीमित योगदान के लिए आरएसएस की आलोचना की थी।

हिंसा की छाया : गांधी की हत्या और उसके बाद की स्थिति

जनवरी 1948 में महात्मा गांधी की हत्या आधुनिक भारत के सबसे काले अध्यायों में से एक है। गांधीजी के हत्यारे नाथूराम गोडसे का संबंध आरएसएस से था। हालाँकि संघ ने औपचारिक रूप से इसमें शामिल होने से इंकार किया, लेकिन सरकार ने उस पर लगभग दो साल का प्रतिबंध लगा दिया।

सरदार पटेल ने सितंबर 1948 में एमएस गोलवलकर को लिखा था कि "उनके [आरएसएस के] सभी भाषण सांप्रदायिक जहर से भरे थे... उन्होंने देश में ऐसा माहौल बनाया, जिसमें इतनी भयावह त्रासदी संभव हो सकी" (पटेल, कलेक्टेड वर्क्स, खंड 10, पृष्ठ 395)।

गोपनीयता, प्रतिबंध और जवाबदेही की कमी

अपने 100 वर्षों के इतिहास में, आरएसएस ने कई प्रतिबंधों का सामना किया है – 1948 (गांधीजी की मृत्यु के बाद), 1975 (आपातकाल के दौरान), और फिर 1992 (बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद)। फिर भी, हर बार, यह और मज़बूत होकर उभरा और शिक्षा, मीडिया, ट्रेड यूनियनों और नागरिक समाज में अपनी पहुँच का विस्तार किया। हालाँकि, यह वृद्धि सीमित पारदर्शिता के साथ हुई है। अपने व्यापक प्रभाव के बावजूद, आरएसएस को एक राजनीतिक इकाई के रूप में नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक संगठन के रूप में पंजीकृत किया गया है, जो इसे सार्वजनिक जाँच और लोकतांत्रिक जवाबदेही से बचाता है।

हाशिये से मुख्यधारा तक : राजनीतिक सहजीवन

आरएसएस और उसकी राजनीतिक शाखा, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने एक राष्ट्रवादी आख्यान को सिद्ध कर दिया है, जिसने सांस्कृतिक और राजनीतिक शक्ति के बीच की रेखाओं को धुंधला कर दिया है। संघ, भाजपा के पीछे एक प्रमुख वैचारिक, कैडर-भर्ती और नीति-निर्माण शक्ति, के रूप में कार्य करता है। जैसा कि क्रिस्टोफ़ जैफ्रेलॉट कहते हैं, हिंदू राष्ट्र अब एक अमूर्त स्वप्न नहीं रहा; इसे कानून बनाया जा रहा है, सामान्य बनाया जा रहा है और संस्थागत रूप दिया जा रहा है (हिंदू राष्ट्रवाद, 2021, पृष्ठ 101)।

सत्तावादी प्रतिध्वनियाँ : विदेशी प्रभाव और वैचारिक समानताएँ

गोलवलकर ने यूरोपीय फ़ासीवादी मॉडलों से प्रेरणा ली। वी, ऑर अवर नेशनहुड डिफाइंड (1939) में, उन्होंने नाज़ी जर्मनी की उसके नस्लीय गौरव और अल्पसंख्यकों के शुद्धिकरण के लिए प्रशंसा की। विद्वानों ने इन प्रतिध्वनियों को आकस्मिक से अधिक बताया है, जो बहुलवाद, असहमति और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रति शत्रुतापूर्ण विश्वदृष्टि का संकेत देते हैं, (फ़ासीवाद और राष्ट्रवाद, 2019, पृष्ठ 48-53)।

एक स्पष्ट गणना की ओर

आरएसएस के सौ साल पूरे होने के साथ, इसकी विरासत कड़ी समीक्षा की मांग कर रही है। इसके मूल बहिष्कारवादी रुझान, संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिरोध और लोकतंत्र के प्रति द्वैधता भारत के बहुलतावादी दृष्टिकोण के साथ असहज रूप से मेल नहीं खाते। मूल प्रश्न यह है कि क्या एक सौ साल पुराना संगठन, जो कभी स्वतंत्रता संग्राम से अलग खड़ा था और संवैधानिक आदर्शों के प्रति तिरस्कार का भाव रखता था, गणतंत्र की लोकतांत्रिक आकांक्षाओं के साथ सार्थक रूप से जुड़ सकता है?

(हसनैन नक़वी इतिहासकार और सेंट जेवियर्स कॉलेज, मुंबई के इतिहास संकाय के सदस्य हैं। यह लेख मूलतः दिल्ली से प्रकाशित "द इमर्जिंग वर्ल्ड" दैनिक में प्रकाशित हुआ था।)

जेईई मेन-नीट यूजी में 12वीं कक्षा की परीक्षा जैसे प्रश्न होंगे

विजय गर्ग

पैनल यह अध्ययन करने के लिए डेटा का विश्लेषण कर रहा है कि क्या परीक्षाएं कक्षा 12 पाठ्यक्रम की कठिनाई स्तर से मेल खाती हैं, जो इन परीक्षाओं का आधार है। कोचिंग संस्थानों के कुछ माता-पिता और संकाय सदस्यों का मानना है कि दोनों में असंगति होती है, जिससे अंतत : कोचिंग पर निर्भरता बढ़ जाती है। पैनल की प्रतिक्रिया के आधार पर इन प्रवेश परीक्षाओं की कठिनाई स्तर की समीक्षा करने पर विचार किया जाएगा।

उच्च शिक्षा सचिव विनित जोशी की अध्यक्षता में यह पैनल उच्च शिक्षा के लिए कोचिंग केंद्रों पर छात्रों की निर्भरता कम करने के उपायों का सुझाव देगा।

देश में कोचिंग केंद्र कई विवादों का केन्द्र रहे हैं और यह कदम सरकार द्वारा छात्रों की आत्महत्याओं, आग लगने वाली घटनाओं और कोचिंग संस्थानों में सुविधाओं की कमी के बारे में प्राप्त शिकायतों के बाद आया है। सूत्रों के अनुसार, केंद्र जेईई और नीट जैसी प्रवेश परीक्षाओं की कठिनाई स्तर की समीक्षा पर विचार कर रहा है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे कक्षा 12 पाठ्यक्रम कठिनाई के साथ समन्वित हों तथा छात्रों को कोचिंग पर निर्भर नहीं रहना पड़े।

पैनल यह अध्ययन करने के लिए डेटा का विश्लेषण कर रहा है कि क्या परीक्षाएं कक्षा 12 पाठ्यक्रम की कठिनाई स्तर से मेल खाती हैं, जो इन परीक्षाओं का आधार है। कोचिंग संस्थानों के कुछ माता-पिता और संकाय सदस्यों का मानना है कि दोनों में असंगति होती है, जिससे अंततः कोचिंग पर निर्भरता बढ़ जाती है

पैनल की प्रतिक्रिया के आधार पर इन प्रवेश परीक्षाओं की कठिनाई स्तर की समीक्षा करने पर विचार किया जाएगा

जून में शिक्षा मंत्रालय ने कोचिंग, ₹डमी स्कूलों₹ के उद्भव तथा प्रवेश परीक्षाओं की प्रभावशीलता और निष्पक्षता से संबंधित मुद्दों पर विचार करने के लिए नौ सदस्यीय पैनल का गठन किया।

₹समिति वर्तमान शैक्षणिक प्रणाली में उन अंतरालों की जांच कर रही है जो छात्रों के कोचिंग केंद्रों पर निर्भरता, विशेष रूप से आलोचनात्मक सोच, तार्किक तर्क, विश्लेषणात्मक कौशल और नवाचार तथा नियमित शिक्षण प्रथाओं की प्रचलन में योगदान देती हैं

कई कैरियर मार्गों के संबंध में छात्रों और माता-पिता के बीच जागरूकता स्तर का मूल्यांकन करना तथा कुछ अभिजात वर्ग संस्थानों पर अत्यधिक निर्भरता पर इस कमी के प्रभाव, स्कूलों और कॉलेजों में करियर परामर्श सेवाओं की उपलब्धता और प्रभावशीलता का आकलन करना तथा कैरियर मार्गदर्शन ढांचे को मजबूत करने के लिए उपायों का सुझाव देना समिति के अन्य संदर्भ शब्द हैं।

पैनल के सदस्यों में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) अध्यक्ष, स्कूल शिक्षा और उच्च शिक्षा विभागों के संयुक्त सचिव, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), मद्रास, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (एनआईटी) त्रिशी, आईआईटी कानपुर और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) तथा विद्यालयों के प्रमुख शामिल हैं।

देश के कोचिंग केंद्र कई विवादों का केन्द्र रहे हैं और यह कदम सरकार द्वारा छात्रों की आत्महत्याओं, आग लगने वाली घटनाओं और कोचिंग संस्थानों में सुविधाओं की कमी तथा शिक्षण पद्धतियों के बारे में प्राप्त शिकायतों के बाद आया है

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर

त्योहार पर रखें सेहत का ध्यान.....

विजय गर्ग

त्योहारों की इस खुमारी में आप सबसे ज्यादा जिस चीज को सबसे ज्यादा नजरअंदाज करते हैं वह है आपकी अपनी सेहत। त्योहारों में भी अपनी सेहत को कैसे बरकरार रखा जाए,

हमारे देश में त्योहारों का मौसम यानी मौज-मस्ती, शॉपिंग करने के साथ-साथ ढेर सारे स्वादिष्ट व्यंजन और मिठाइयों का लुत्फ उठाने का मौसम। त्योहारों के दिनों में घर पर बनने वाले तले हुए व्यंजन हम स्वाद-स्वाद में खा तो लेते हैं पर त्योहारों की तैयारी में अक्सर हम व्यायाम या वॉक करना भूल जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप हम बीमार पड़ जाते हैं या फिर हमारा वजन बढ़ जाता है। आपके सामने ऐसी किसी प्रकार की परेशानी न आए इसलिए जानी-मानी डाइटिशयन बता रही हैं कि त्योहारों के दिनों में मनपसंद व्यंजन खाने के बावजूद आप फिट कैसे रह सकते हैं।

क्या करें

समय पर खाएं- त्योहार के दिनों में इतना काम रहता है कि हमें सही समय पर खाना खाने का समय भी नहीं मिल पाता है। और समय पर खाना नहीं खाने की यह आदत हमारी सेहत को नुकसान पहुंचाती है। इसलिए आप चाहे कितने भी व्यस्त हों लेकिन समय निकालकर समयानुसार खाना जरूर खाएं।

ज्यादा तला-भुना खाने से बचें- इन दिनों घर पर अक्सर तले-भुने व्यंजन बनाए जाते हैं। जिन्हें हम स्वाद के चक्कर में अधिक मात्रा में खा लेते हैं। जो आगे जाकर परेशानी का सबब बन जाता है। त्योहार के अवसर पर बनने वाले व्यंजनों का स्वाद अवश्य लें लेकिन सेहत को ध्यान में रखते हुए ज्यादा तला-भुना न खाएं।

लो-कैलोरी रेसिपीज मेन्यू में शामिल करें- जरूरी नहीं है कि हर त्योहार पर तले हुए व्यंजन ही बनाएं। अपनी और अपने परिवार की सेहत को ध्यान में रखते हुए लो-कैलोरी रेसिपीज भी आप अपने मेन्यू में शामिल कर सकते हैं जैसे तली चाट की बजाय फ्रूट चाट बनाएं, अंकुरित दालों के कबाब और अन्य व्यंजन बनाए जा सकते हैं। जो खाने में स्वादिष्ट होने के साथ-साथ सेहत के लिए भी काफी फायदेमंद होते हैं।

नाश्ता अवश्य करें- काम की भाग-दौड़ में नाश्ता करना बिल्कुल न भूलें। अगर आप सुबह के समय पौष्टिक नाश्ता करेंगे तो इससे आपको काम करने के लिए भरपूर एनर्जी भी मिलेगी और पेट भरा होने के चलते लंच से पहले कुछ अटर-पटर खाने का मन भी नहीं करेगा।

मांसाहारी हैं तो सी फूड खाएं- यदि आप मांसाहारी हैं तो जरूरी नहीं कि चिकन, मटन से बने व्यंजन ही खाएं। इनकी बजाय आप सी फूड और मछली से बने व्यंजन बना और खा सकते हैं। इन्हें तल कर बनाने की बजाय बेक्ड या स्टीम्ड करके बनाना बेहतर होगा। क्योंकि बेक्ड भोजन में कैलोरी बहुत कम मात्रा में होती है जिससे वजन बढ़ने की संभावना नहीं होती है।

शुगर-फ्री मिठाइयां खाएं- भारतीय त्योहार में मिठाइयों का बहुत महत्त्व होता है। कोई भी त्योहार हो, मिठाई के बिना वह अधूरा ही रहता है, जिसके चलते घर पर बनाकर या बाहर से खरीदकर लोग मिठाई खाते हैं त्योहार पर मिठाइयां अवश्य खाएं लेकिन आप घर पर ही शुगर-फ्री मिठाइयां बना सकते हैं या फिर बाजार से शुगर-फ्री मिठाइयां खरीदकर लाई जा सकती हैं। ऐसा करने से आप मिठाइयों का स्वाद भी ले सकेंगे और आपका वजन भी नियंत्रण में रहेगा।

जितना जरूरी है उतना ही परोसें- स्वादिष्ट व्यंजन को देखकर जरूरी नहीं कि आप सारे व्यंजन थाली में परोस लें। पहले सलाद बहुत सारी मात्रा में थाली में रखें और उसे पहले खाएं फिर जितनी भूख हो उसके हिसाब से थोड़ी-थोड़ी मात्रा में एक-दो व्यंजन थाली में परोसें। ऐसा करने से आपको थाली में परोसा गया बहुत सारा खाना नहीं खाना पड़ेगा और आप ओवरइटिंग से बच जाएंगे।

सिग्नल का करें इंतजार- हम जब भोजन करते हैं तो हमारे दिमाग को कुछ भी खाने के 15-20 मिनट बाद ही पेट भरने का सिग्नल मिलता है। इसलिए हमेशा कुछ भी खाने के बाद थोड़ी देर तक दिमाग को सिग्नल मिलने का इंतजार करें। यदि पेट भरने का सिग्नल मिल जाए तो तुरंत थाली को एक तरफ रख दें।

न कहना सीखें- यदि आप त्योहार के समय अपने किसी दोस्त या रिश्तेदार के यहां खाने पर गए हैं तो जरूरी नहीं कि आप उनके जबर्दस्ती करने पर पेट भरा होने पर भी खाएं। आप अपनी सेहत को ध्यान में रखते हुए शिष्टाचार पूर्ण तरीके से ज्यादा खाने से मना कर दें।

हल्का व्यायाम अवश्य करें- माना त्योहार के दिनों में काम के चलते व्यायाम करने का समय नहीं मिल पाता है। लेकिन प्रयास करें कि प्रतिदिन हल्का व्यायाम अवश्य कर लें। जरूरी नहीं है कि सुबह के समय ही व्यायाम करें आपको दिनभर में जब भी थोड़ा-सा समय मिले उसमें आप व्यायाम कर अपने शरीर को फिट रख सकते हैं।

ध्यान रखने योग्य बात

त्योहार के दिनों में खा-पीकर भी अपने आपको फिट रखने के लिए आपको पांच चीजें बिल्कुल भी नहीं करनी चाहिये।

ओवरइटिंग से बचें- चाहे खाना कितना भी स्वादिष्ट क्यों न हो उतना ही खाएं जितनी भूख हो। स्वाद-स्वाद के चक्कर में ओवरइटिंग बिल्कुल भी न करें।

बिना सोचे-समझे न खाएं- खाने के लिए थाली में कुछ भी परोसने से पहले देख लें कि जो भी डिश आप अपने थाली में परोस रहे हैं वह ज्यादा तला-भुना तो नहीं है। अगर खाना ज्यादा तेल वाला हो तो थोड़ी ही मात्रा लें। कोई डिश बिना सोचे-समझे न खाएं।

जल्दी-जल्दी न खाएं- आपको घर का बहुत-सा काम निपटाना है या फिर बाहर शॉपिंग पर जाना है अगर समय कम है तो इसका मतलब यह नहीं है कि आप खाने को भी एक काम की तरह सोचकर जल्दी-जल्दी उसे निपटा दें। कहने का अर्थ है कि चाहे कितनी भी जल्दी क्यों न हो खाना धीरे-धीरे चबा-चबा कर ही खाएं। ऐसा करने से आप खाने का स्वाद भी उठा सकेंगे, भूख से ज्यादा भी नहीं खा पाएंगे और खाना भी आसानी से पच जायेगा।

पानी पीना कम न करें- काम की व्यस्तता के चलते पानी कम न पिएं। अक्सर होता है कि काम में लोग इतने व्यस्त हो जाते हैं कि उन्हें पानी पीने की फुर्सत भी नहीं होती है। लेकिन चाहे कितनी भी व्यस्तता क्यों न हो हर आधे घंटे में पानी जरूर पीते रहें।

शराब का सेवन न करें- त्योहार के दिनों में होने वाली पार्टी में अक्सर लोग रात में शराब आदि का सेवन करते हैं और सुबह देर से सोकर उठते हैं। देर से उठने के कारण व्यायाम नहीं कर पाते हैं। इसलिए प्रयास करें कि शराब का सेवन बिल्कुल भी न करें क्योंकि यह शरीर में अनावश्यक कैलोरी बढ़ाता है।

इन छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखकर आप त्योहार के दिनों में अपने मनपसंद व्यंजन खाकर भी अपने शरीर को फिट रख सकते हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

शीर्षक - कोजागिरी पूर्णिमा

योगेश्वर जगद्गुरु श्री कृष्ण ने गोपियों की सुनी पुकार,
श्री परमेश्वर आए भवसागर से करने जीवों का उद्धार,
पुलकित हुआ धरती का ऑंगन कण-कण हुआ वृंदावन,
जगत के नाथ खेले महारास मदन मनमोहन मनभावन ।

महारास की रात ये बरसे अद्भुत अनुपम अमृत की धार,
सज धज आई देखो शीतल चॉंदनी करके सोलह श्रृंगार,
शरद पूनम के चॉंद का हर्षोल्लास हुआ वृहद अभिनंदन,
धवल अमृत रश्मियॉं शरद पूनम की देती है पुनर्जीवन ।

छिटका अमृतानंद दसो दिशाओं में खुशियों की फुहार,
चकोर ने किया शुक्रिया चॉंद का खोकर प्रेम में बार-बार,
शरद ऋतु का हुआ शुभागमन मौसम में हुआ परिवर्तन,
धरा ने ओढ़ी चुनरी चमकीली बरसी नभ से बूंदें पावन ।

हुई पुष्पित पल्लवित प्रकृति सुखदाई वातावरण पाकर,
रातरानी ने खोली पंखुड़ियॉं ₹आनंद₹ प्रकृति में भरकर,
मॉं महालक्ष्मी की हुई कृपा सब पर कटे दु:खों के बंधन,
रोग, शोक सारा मिटा सुवासित सुखमय हुआ तन-मन ।

कोजागिरी पूर्णिमा सुख समृद्धि वैभव लाऍं सबके द्वार,
बांके बिहारी जी की हम सब पर हो विशेष कृपा अपार,
भक्त जन श्रद्धा से खीर का भोग लगा करते हैं जागरण,
नवयौवन धन-धान्य वैभव बढ़ें दूर हो दुखों का आवरण ।

- मोनिका डागा 'आनंद', चेन्नई, तमिलनाडु
आपके स्नेह और प्यार का धन्यवाद !
रचना (स्वरचित व सर्वाधिकार सुरक्षित)

कृत्रिम मेधा का मेधा का महत्त्व और आशंकाएं

विजय गर्ग

वैश्विक स्तर पर तकनीकी विकास में भारत भी साथ- साथ कदमताल कर रहा है। घोषणा हो गई है कि हमारा देश एक डिजिटल राष्ट्र बन गया है। इंटरनेट ताकत में हमने कई पश्चिमी देशों को पीछे छोड़ दिया है। यही नहीं, पिछले कुछ वर्षों में हम दुनिया के अग्रणी देशों की तर्ज पर 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' यानी कृत्रिम मेधा के विकास का भी दावा कर है। कृत्रिम मेधा आज यंत्र युग में शोध

और नवोन्मेष का परिणाम है, इसलिए हम इसे यंत्र मेधा भी कह सकते हैं। स्पष्ट है कि इसके व्यापक इस्तेमाल के लिए देश में काम करने के ढांचे में बदलाव करना इंटरनेट का ज्ञान होना पड़ेगा। साथ ही युवा पीढ़ी के पास डिजिटल के है। इसके विस्तार को हमें अपने नियंत्रण के अलावा, कृत्रिम मेधा से प्राप्त में रखना होगा।

ज्ञान

हालांकि, कृत्रिम मेधा से वैज्ञानिक इस बात को लेकर भी चिंतित हैं कि इसकी असीम शक्ति कहीं इंसानी दिमाग से आगे न निकल जाए और नकारात्मक मूल्यों का सृजन करके कहीं पूरी दुनिया की प्रगति को किसी और रास्ते पर न भटका दे मगर, इस आशंका के मद्देनजर कृत्रिम मेधा को सिरे से नकारा नहीं जा सकता। भारत आबादी लिहाज से

पीढ़ी में श्रम या का सबसे बड़ा देश है और यहां कार्य योग्य युवा शक्ति का बाहुल्य है। इसलिए रोबोटिक कृत्रिम मेधा का मानव श्रम शक्ति पर असर पड़ सकता है। मगर विकास के जिस आयाम तक कृत्रिम मेधा जा सकती वह साधारण जमा खर्च के हिसाब से परे हो जाता है। इसलिए कृत्रिम मेघा और रोबोटिक शक्तियाँ एक ऐसी नई सच्चाई जिन्हें नकारा नहीं जा सकता। भारत में भी कृत्रिम मेधा के उपयोग को डिजिटल और इंटरनेट शक्तियों विकास के सहारे आगे बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है।

आयोग

भारत के नीति आयोग ने हाल में कृत्रिम मेधा और इंटरनेट शक्ति की संभावनाओं को लेकर एक नई रपट जारी की है। इसमें स्पष्ट कहा गया है कि अगले एक दशक में उत्पादन, निवेश और कृषि विकास के क्षेत्र में अगर हम कृत्रिम मेधा का उचित इस्तेमाल करें, तो देश के सकल घरेलू उत्पाद में 500 से 600 अरब डालर की बढ़ोतरी सकती है। नीति है कि आने वाले दशक में अगर औद्योगिक क्षेत्र के भीतर कृत्रिम मेधा का व्यापक उपयोग होता है, तो वैश्विक अर्थव्यवस्था में 1,726 लाख करोड़ डालर तक का महत्त्वपूर्ण योगदान हो सकता है। अगर कृत्रिम मेधा को प्रौद्योगिकी, विज्ञान, इंजीनियरिंग और गणित के कार्यबल का सहयोगी बना दिया जाए, तो भारत में एक मजबूत और महत्त्वपूर्ण विकासात्मक बदलाव आ सकता है। हम वैश्विक कृत्रिम मेधा मूल्य का दस । पंद्रह फीसद तक हासिल करने में सक्षम होंगे। कृत्रिम मेधा के इस्तेमाल से कौशल के स्तर पर तो नए रोजगार पैदा होने की संभावनाएं बढ़ेगी, लेकिन नीति आयोग की रपट में भी स्वीकार किया गया है कि मौजूदा रोजगार के ढांचे में निचले स्तर के अकुशल कर्मी असंबद्ध हो सकते हैं। वहीं, वित्तीय सेवाओं और विनिर्माण क्षेत्र में कृत्रिम मेधा का इस्तेमाल खासा उपयोगी साबित हो सकता है। इन क्षेत्रों में सकल घरेलू उत्पाद बीस से पच्चीस फीसद तक बढ़ सकता है भारत, रूस से कच्चा तेल खरीदकर उसे प्रसंस्कृत रूप में यूरोपीय और तीसरी दुनिया के देशों को बेच रहा है। इसका लाभ हमारी पेट्रोलियम कंपनियों को मिल रहा है। इस प्रकार अगर हम अपनी विनिर्माण प्रक्रिया को कृत्रिम मेधा से जोड़ दें, तो देश की विकास दर को गति देना मुश्किल नहीं होगा। हालांकि, इसके लिए व्यापक स्तर पर प्रयासों की जरूरत है।

इस समय अगर औसत निकालें तो भारत की विकास दर 5.7 फीसद के करीब है। भले ही हम इसे दुनिया की सबसे तेज विकास दर कहते हों, लेकिन अगले दस वर्षों में जीडीपी को बढ़ाने के लिए हमें विकास दर को और ऊंचाई देनी होगी। अगर कृत्रिम मेधा का उचित इस्तेमाल हो जाए तो आठ फीसद विकास दर को हासिल करना आसान हो जाएगा। यही गति बनी रहे तो वर्ष 2047 में आजादी के शतकीय महोत्सव तक भारत के विकसित देश बनने के लक्ष्य को हासिल करने भी कोई मुश्किल नहीं होगी। यह भी हो सकता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था अमेरिका और चीन को पीछे छोड़ दे।

नीति आयोग ने ने भले ही कृत्रिम मेधा की संभावनाओं की बहुत उज्वल तस्वीर पेश की है, पेश की है, लेकिन इसके रास्ते में में कई अवरोध भी मौजूद हैं। सबसे बड़ा अवरोध तो देश के युवाओं को इस ज्ञान क्षेत्र की उचित शिक्षा-दीक्षा के अभाव का है। इसके लिए नई सुगम पुस्तकें तैयार करनी करनी पड़ेंगी। नए पाठ्यक्रम बनाने पड़ेंगे और शिक्षकों को भी इस ज्ञान से पारंगत करना होगा, ताकि वे भावी पीढ़ी को इसके लिए आसानी से तैयार कर सकें। लेकिन अभी देश के शिक्षा जगत की जो सर्वेक्षण रपट हमारे पास है, वह यही कहती है कि प्रायः औसत युवा छात्र आज भी कला संकायों और विज्ञान संकायों की डिग्रियों के पीछे ही भागते हैं। आज भी वे नौकरीपेशा और स्थायी मध्यवर्गीय रोजगार पाने की मानसिकता से ग्रस्त हैं तथा कृत्रिम मेधा से प्राप्त हो सकने वाले असीम ज्ञान में पारंगत होने के लिए उत्सुक नजर नहीं आते हैं। तो आसान शिक्षा एवं डिग्री चाहिए और ऐसा कार्य कार्य चाहिए, जो रूटीन का दफ्तरी काम हो । और जो मेधा को चुनौती न दे।

हालांकि, कृत्रिम मेधा से जुड़े खतरे की संभावनाओं को लेकर सरकार भी सतर्क है, है, लेकिन उसका कहना है कि इस तरह की आशंकाओं से डरकर इसके विकास को प्रतिबंधित नहीं किया जा सकता। मगर इसके दुरुपयोग को रोकने के उपाय जरूरी हैं। इसके लिए देश को सजग रहना पड़ेगा और जहां भी जरूरी हो, वहां सख्ती बरतनी होगी। वैसे भी तकनीक को खारिज करना या खत्म करना समस्या का हल नहीं है, जरूरत इस बात की है कि आधुनिक तकनीक को विकास से जोड़ा जाए और इसके दुरुपयोग को रोकने के लिए ठोस कदम उठाए जाएं। इसमें दोराय नहीं कि कृत्रिम मेधा आज विकास प्रक्रिया का एक हिस्सा बन गई है और इसके सदुपयोग और महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। मगर, इसके इस्तेमाल में एहतियात बरतना भी जरूरी है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

संभावनाओं से भरपूर सेमीकंडक्टर सेक्टर

विजय गर्ग

आज की दुनिया डिजिटल टेक्नोलॉजी पर टिकी है। चाहे मोबाइल फोन हो, चाहे लैपटॉप हो, चाहे स्मार्ट टीवी हो, चाहे कोई इलेक्ट्रिक वाहन हो, कोई मेडिकल उपकरण हो, सैटेलाइट हो या फिर आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस से लैस मशीनें हों। इन सबकी धड़कन यही सेमीकंडक्टर चिप है। यह चिप जितनी छोटी होगी, उसका महत्व उतना ही बड़ा होगा। दुनिया की अर्थव्यवस्था इसी पर निर्भर है। हमारा देश भारत लंबे समय तक इस क्षेत्र का सिर्फ उपभोक्ता रहा है लेकिन अब तस्वीर बहुत तेजी से बदल रही है। भारत सरकार ने सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में उपभोक्ता नहीं बल्कि निर्माता होना भी तय किया है और इसे राष्ट्रीय प्राथमिकता का क्षेत्र भी घोषित किया है। भारत सरकार ने इस क्षेत्र में अरबों रुपये का निवेश किया है और भविष्य में पहले से कहीं ज्यादा निवेश की योजना है। इसलिए वर्तमान में सेमीकंडक्टर का क्षेत्र भी एक जमाने के आईटी सेक्टर की तरह अपार संभावनाओं के मुहाने पर खड़ा है।

भारत में सेमीकंडक्टर बूम

साल 2021 में भारत सरकार ने 76 हजार करोड़ का सेमीकंडक्टर प्रोत्साहन पैकेज लांच किया था। इसका उद्देश्य भारत को न केवल चिप डिजाइन हब बनाना था बल्कि मैन्युफैक्चरिंग और टेस्टिंग का भी वैश्विक केंद्र बनाने की योजना है। इसलिए गुजरात के डोलेरा में फैब्रिक प्लांट की नींव रखी जा चुकी है। साथ ही तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र में पैकेजिंग व टेस्टिंग यूनिट स्थापित हो रहे हैं। भारत में पांव पसार

रहे इस सेक्टर में अमेरिका, ताइवान और जापान की कंपनियां निवेश कर रही हैं तथा विशेषज्ञों का अनुमान है कि साल 2030 तक यह क्षेत्र 10 लाख से ज्यादा नौकरियां उपलब्ध करायेगा। इस बदलाव को आत्मनिर्भर बनाने के साथ-साथ भारत इसे ग्लोबल सप्लाई चेन में निर्णायक बनाना चाहता है। इसलिए यह कहना बिल्कुल सही है कि सेमीकंडक्टर सेक्टर कैरियर बूम के मुहाने पर खड़ा है।

कैरियर विकल्प

सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री मल्टीडिसिप्लनरी है यानी यह बहुत से क्षेत्रों का मिला-जुला क्षेत्र है। इसलिए इसमें इंजीनियरिंग तथा विज्ञान व तकनीक के कई अलग-अलग क्षेत्रों के युवाओं के लिए शानदार भविष्य बनाने की सुविधा मौजूद है। मसलन चिप डिजाइन इंजीनियरों के लिए इस सेक्टर में बहुत स्कोप है। वीएलएसआई, डिजिटल, एनालॉग सर्किट डिजाइन। इस क्षेत्र की प्रमुख कंपनियोंमें इंटेल, पोलकॉम एनवीडिया तथा एमडी हैं। इसी तरह फैब्रिकेशन इंजीनियरों के लिए भी इस क्षेत्र में बहुत स्कोप है। जिसकी प्रमुख कंपनियां हैं- माइक्रोन, वेदांता फोक्सकॉन जेवी। टेस्टिंग और पैकेजिंग इंजीनियरों के लिए इस क्षेत्र में बहुत सारी नौकरियां हैं, जो विशेष रूप से तैयार चिप का परीक्षण करते हैं और पैकेजिंग व गुणवत्ता नियंत्रण में दखल देते हैं। आटोमेशन/प्रोसेस इंजीनियरों के लिए भी इस क्षेत्र में अनगिनत विकल्प हैं। इन्हें फैक्टरी और उत्पादन मशीनरी की देखरेख का काम करना होगा। साथ ही नैनो मैटीरियल्स रिसर्चर और आईटीआई तकनीशियन के लिए यहां बहुत सारी संभावनाएं हैं। नैनो मैटीरियल्स रिसर्चर जहां नई सामग्रियों और क्वांटम चिप पर रिसर्च करते हैं, वहीं आईटीआई टेक्नीशियन मशीन संचालन, मेंटेनेस और सपोर्ट जैसे रोल में फिट होते हैं।

कौन बना सकता है इस क्षेत्र में कैरियर

बीटेक/एमटेक छात्र- इलेक्ट्रॉनिक एंड कम्युनिकेशन, इलेक्ट्रिकल, कंप्यूटर साइंस, मैकेनिकल, कैमिकल और नैनो टेक्नोलॉजी, एमएससी/पीएचडी- फिजिक्स, मैटीरियल साइंस, इलेक्ट्रॉनिक , डिप्लोमा और आईटीआई- इलेक्ट्रॉनिक्स, इलेक्ट्रिकल और मैकेनिकल क्षेत्र में डिप्लोमा धारक या आईटीआई से पासआउट यहां आराम से कैरियर बना सकते हैं।

प्रवेश और पढ़ाई के रास्ते

आईआईटी, एनआईटी, आ ई आ ई ए स सी - एमटेक/एमएस/पीएचडी इन वीएलएसआई, माइक्रो इलेक्ट्रॉनिक, सेमीकंडक्टर फिजिक्स आदि प्रवेश का आधार होगा। ग्रेड (जीएटीई) स्कोर, नई यूनिवर्सिटी/संस्थान- आईआईटी मंडी, सेमीकंडक्टर बी.टेक, मानव रचना (बीटेक ईसीई इन सेमीकंडक्टर), एसपीयू वल्लभ विद्यानगर (एमएससी इन सेमीकंडक्टर साइंस), एआईसीटीई/अप्रूव्ड कोर्स- 600 इंजीनियरिंग कॉलेज और पोलीटेक्नली हब, वीएलएसआई कोर्स चला रहे हैं। ऑनलाइन/शॉर्ट टर्म सर्टिफिकेशन- आईआईटी कानपुर, कोरसेरा, ईडीएक्स, चिनोपसिस और केडेनस से संबंधित वीएलएसआई ट्रेनिंग।

पैकेज और नौकरी की संभावनाएं

फ्रेशर्स (बीटेक) 6 लाख से 12 लाख रुपये सालाना, एमटेक (आईआईटी/ एनआईटी/ आईआईएससी) 12 से 20 लाख रुपये सालासंभावनाओं से भरपूर सेमीकंडक्टर सेक्टरना, पीएचडी/रिसर्चर- 30 से 35 लाख रुपये सालाना। वहीं विदेशी कंपनियों में 50 लाख रुपये सालाना या इससे ऊपर पैकेज मिल सकते हैं।

इस तरह देखें तो भारत का सेमीकंडक्टर सेक्टर आज उस मोड़ पर खड़ा है, जहां 1990 के दशक में आईटी सेक्टर खड़ा था। आने वाले दशक में यह न सिर्फ देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती देगा बल्कि लाखों युवाओं के लिए नये दरवाजे भी खोलेगा, जो छात्र आज इस क्षेत्र में कदम रखेंगे, वे कल के चिप योद्धा कहलाएंगे।

मुख्यमंत्री और विधानसभा अध्यक्ष ने शहीद बाजी राउत को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुवनेश्वर : ब्रिटिश सरकार के शासनकाल में, भारत के अन्य राज्यों की तरह, ओडिशा में भी आम जनता विभिन्न प्रकार के शोषण और उत्पीड़न से पीड़ित थी। उस समय, ब्रिटिश सरकार ने अपनी शासन व्यवस्था को सरल बनाने के लिए, पूरे ओडिशा को दो भागों में विभाजित कर दिया और उन्हें मुगलबंदी और पतंजलि नाम दिया। मुगलबंदी क्षेत्रों में जमींदार और पतंजलि क्षेत्रों में राजा प्रशासन के नाम पर जनता पर अकल्पनीय अत्याचार कर रहे थे। इन देशभक्त आंदोलनों में, 1938 में आयोजित ढेंकनाल पतंजलि आंदोलन ने उस समय पूरे भारत में हलचल मचा दी थी। भारत के स्वतंत्रता संग्राम की धारा में, देश के सबसे युवा देशभक्त, 12 वर्षीय बालक बाजी राउत ने अपनी जान जोखिम में डालकर शहीद हो गए।

शहीद बाजी राउत का जन्म 5 अक्टूबर 1926 को ढेंकनाल जिले के नीलकंठपुर गाँव में एक गरीब खंडायत परिवार में हुआ था। सबसे छोटे, बाजी राउत, स्वतंत्रता सेनानियों में से एक और जनता के सूर्य थे। यद्यपि उनका जन्म एक अँधेरी धरती में हुआ था, जैसे कमल से कमल का जन्म होता है, फिर भी वे पूरे राष्ट्र और अपनी जन्मभूमि के लिए अपना जीवन बलिदान करके भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बने रहे।

आज सूचना एवं जनसंपर्क विभाग द्वारा शहीद बाजी राउत की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री मोहन चरण माझी, विधानसभा अध्यक्ष श्रीमती सुरमा पाढ़ी, विधायक श्री बाबू सिंह और श्री अनंत नारायण जेना, समाजसेवी श्री जगन्नाथ प्रधान, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री हेमंत शर्मा, विधानसभा सचिव श्री सत्यव्रत राउत, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के निदेशक श्री अनुज कुमार दासपटनायक, तकनीकी निदेशक श्री गुरबीर सिंह विधानसभा के बगल में स्थित शहीद बाजी राउत की प्रतिमा पर उपस्थित थे।

कटक में दुर्गा प्रतिमा विसर्जन के दौरान हिंसा, विश्व हिंदू परिषद ने 12 घंटे के बंद का आह्वान किया

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

कटक/भुबनेश्वर : विश्व हिंदू परिषद (विहिप) ने शुक्रवार रात कटक के दरगाह बाजार इलाके में दुर्गा प्रतिमा विसर्जन जुलूस के दौरान हुई हिंसा में पुलिस और जिला प्रशासन की विफलता के विरोध में 6 अक्टूबर (सोमवार) को 12 घंटे के कटक बंद का आह्वान किया है।शनिवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में विहिप कटक महानगर अध्यक्ष बासुदेव बेहरा ने हिंसा के लिए सीधे तौर पर पुलिस और जिला प्रशासन को जिम्मेदार ठहराया।इस घटना में डीसीपी समेत छह लोग घायल हो गए। बेहरा ने कहा, डीसीपी और जिला मजिस्ट्रेट इस स्थिति के लिए पूरी तरह जिम्मेदार हैं। हम उनके तत्काल तबादले की मांग करते हैं।

विहिप ने आरोप लगाया है कि भीड़ नियंत्रण और विभिन्न एजेंसियों के बीच समन्वय की कमी झड़प की असली वजह है। संगठन के नेताओं ने नागरिकों से प्रशासनिक लापरवाही के ख़िलाफ़ सोमवार के बंद का समर्थन करने और शहर में शांति बनाए रखने की अपील की है।

दूसरी ओर, जिला भाजपा ने इस घटना को लेकर सर्किट हाउस में एक बैठक आयोजित की है। पार्टी नेताओं ने आरोप लगाया है कि यह हिंसा दुर्गा पूजा की सांस्कृतिक विरासत को धूमिल करने के लिए असामाजिक तत्वों द्वारा रची गई एक पूर्व नियोजित साजिश है। पार्टी प्रतिनिधियों ने कहा, राज्य सरकार ने इस घटना को गंभीरता से लिया है। मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने प्रशासन के साथ मामले की समीक्षा की है और इसमें शामिल लोगों के ख़िलाफ़ कड़ी कार्रवाई के आदेश दिए हैं। घायलों का मुफ़्त इलाज किया जा रहा है।

बंद को देखते हुए, पुलिस ने आगे किसी भी घटना को रोकने के लिए शहर के संवेदनशील इलाकों में सुरक्षा कड़ी कर दी है। इस घटना का कटक के शांतिपूर्ण माहौल और सांस्कृतिक विरासत पर गहरा असर पड़ा है, जिससे लोगों में असंतोष फैल रहा है।

माननीयों के 'दामन' पर गुनाहों के बढ़ते 'दाग'?

डॉ. रमेश ठाकुर

साफ-सुथरी सियासी व्यवस्था की परिकल्पनाओं के बीच सफेदपोशों पर पूर्व में लगे गंभीर आपराधिक मामलों में और इजाफा हुआ है। नेताओं-मंत्रियों पर पहले से बलात्कार, हत्या, ब्लैकमेलिंग जैसे गंभीर केसों में बेहिसाब उछाल आया है। 'दाग अच्छे है' वाला स्लोगन माननीयों पर सटीक बैठ रहा है। हाल में संपन्न हुए मानसून सत्र में सरकार ने सदन में तीन विधेयक पेश किए थे जिनका तकरीबन-तकरीबन सभी सियासी दलों ने भरे सदन में पुरजोर विरोध किया था। विरोध क्यों कर रहे थे? उसकी असल वजह से चुनाव सुधार क्षेत्र में काम करने वाली देश की अग्रणी संस्था 'एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स' यानी एडीआर ने पर्दाफाश कर दिया है। किस दल पर कितने केस और कौन-कौन नेता आपराधिक मुकदमों में फंसे हैं, को लेकर संस्था ने अपनी रिपोर्ट में सभी का बिंदुवार तरीके से जिक्र किया है। कोई ऐसा दल या दलों की सरकार नहीं है जिनके मंत्रियों और नेताओं पर गंभीर आपराधिक मामले दर्ज न हों? राजनीति में अब झूठ, फरेब, मक्कारी, जघन्य अपराधों का खूब बोलबाला है।

रिपोर्ट में बताया है कि देशभर के 302 मंत्रियों में 174 पर गंभीर मामले इस वक्त कोर्ट में जारी हैं। मामले भी कोई छोटे-मोटे नहीं? एक से बढ़कर एक गंभीर? हत्या, बलात्कार, अवैध भूमि पर कब्जा, अपहरण, महिलाओं के खिलाफ यौन जुल्म, जैसे कृत्य शामिल हैं। हिंदुस्तान में कुछ वर्षों से चुनाव सुधार और साफ-सुधरी छवि वाली राजनीतिक व्यवस्था को लेकर जो कागजी शोर मच रहा था, उसका पिटारा एडीआर की ताजा तरीन रिपोर्ट ने अच्छे से बजा दिया है। साफ है कि अब बेदाग नेता और स्वतंत्र चुनाव प्रक्रिया की कल्पना करना बेमानी है। चाहे संसद और या राज्यों की विधानसभाएं, दोनों में दागियों की संख्याओं में 47 फीसदी वृद्धि बताई है, यानी मोटे तौर पर नेताओं की आधी संख्या दागियों से खचाखच भर गई है। मानसून सत्र में पेश तीनों विधेयकों में यही बात अंकित है कि अगर प्रधानमंत्री से लेकर मुख्यमंत्री, मंत्री या कोई संवैधानिक ओहदे पर बैठा व्यक्ति जो किसी मामले में 30 दिन की जेल की हवा खाता है तो उसे बिना देर किए गद्दी छोड़नी होगी। ऐसा नहीं करने पर उसे पदमुक्त किया जाएगा। विधेयक निश्चित रूप से अच्छे हैं, लेकिन निष्पक्ष रूप से अमल में आए तब ना?

ये तय है, चुनाव सुधार में ये तीनों विधेयक भी नेताओं पर बढ़ते गंभीर मामलों में कमी नहीं ला पाएंगे। इसके लिए शुरू से गिनती गिननी होगी। चुनाव लड़ने के दौरान शपथ पत्र में अगर किसी पर सिंगल भी कोई केस हो, उसका नामांकन उसी समय रद्द किया जाए। ऐसी पहल के बिना बेदाग सियासत की कल्पना नहीं की जा सकती। माननीयों पर दाग वाली नई सूचना निश्चित रूप से सोचने पर विवश करती है। 27 राज्यों, तीन यूटी प्रदेश और केंद्रीय मंत्रिमंडल के 643 मंत्रियों के चुनाव के वक्त दिए शपथ पत्रों की एडीआर ने छानबीन की है। उसके बाद यह सच्चाई निकल कर सामने आई। आंकड़ों में 174 दागी मंत्रियों में जो शामिल हैं, उनमें भाजपा का प्रतिशत 40 और कांग्रेस का 47 फीसदी है। सर्वाधिक केस तमिलनाडू के सत्ताधारी दल द्रमुक के नेताओं पर बताए गए हैं। रिकॉर्ड 87 प्रतिशत मंत्री विभिन्न आपराधिक मामलों में लिप्त हैं। वहीं, केंद्र सरकार के 72 मंत्रियों में से 29 मंत्रियों ने अपने ऊपर आपराधिक केस होना स्वीकारा है। भाजपा के 336 मंत्रियों में से 136 पर आपराधिक केस हैं जिनमें 88 पर बहुत ही गंभीर आरोप हैं?

सियासी लोग दागियों के संबंध में बातें सिर्फ जनता में करते हैं, बंद कमरों में उन्हें भी दागी ही अच्छे लगते हैं। ऐसे कथित साफ छवि की बात कहने वाले दलों के नेताओं को एडीआर की रिपोर्ट ने बेनकाब कर दिया है। जनता को उम्मीदें बंधाई जाती हैं कि दागी नेताओं को दल प्रमुख बाहर का रास्ता दिखाएंगे, लेकिन ऐसा करता कोई नहीं? चुनावी भाषणों में इस मसले को लेकर सिर्फ गाल बजाए जाते हैं पर धरातल पर दाग सभी को अच्छे लगते हैं। एडीआर की मौजूदा रिपोर्ट में कांग्रेस के 61 मंत्रियों में 45 पर, डीएमके के 31 में से 27, टीएमसी के 40 में से 13, तेलुगु देशम पार्टी के 23 में से 22, आम आदमी पार्टी के 16 में से 11 मंत्रियों पर गंभीर आरोप लगे बताए हैं। क्या इन पार्टियों के प्रमुखों या संस्थापकों में इतनी नैतिकता है कि ऐसे दागियों को पार्टी से निकाल सकेंगे। शायद, बिल्कुल नहीं? ताज्जुब ये भी है कि इन दागियों में लगभग सभी अरबपति हैं। सभी के पास अकूत संपत्ति हैं, यानी जितनी आपराधिक मामलों में वृद्धि हुई, उतना ही दागियों की इनकम में भी इजाफा भी हुआ।

एकाध राज्यों को छोड़कर आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, बिहार, ओडिशा, महाराष्ट्र, कर्नाटक, पंजाब, तेलंगाना, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली और पुडुचेरी ऐसे राज्य हैं जहां के नेताओं पर सर्वाधिक मुकदमें दर्ज हैं हालांकि विवश करने वाली इस खबर में सुखद खबर यह भी है कि हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, नागालैंड और उत्तराखंड के मंत्रियों पर इस समय किसी भी किस्म के कोई आपराधिक मामला दर्ज नहीं हैं। बावजूद इसके राजनीति में सुधार और समानता की उम्मीद नहीं की जा सकती। कितने ही कानून बना लो, सख्तियां बढ़ाई जाएं, संसद या विधानसभाओं में नए कानून पारित हो जाएं, दागियों की संख्या कम नहीं होगी? यह तस्वीर भविष्य के लिए बेहद चिंतनीय और खतरनाक है। सियासी व्यवस्थाएं ऐसी बन चुकी हैं कि बिना धन या बाहुबल के कोई राजनीति में अब प्रवेश कर ही नहीं सकता। बगैर पैसे के चुनाव लड़ना तो संभव ही नहीं? एडीआर रिपोर्ट से यह भी पुष्टि हुई है कि बीते पांच वर्षों में कानूनों का सबसे ज्यादा दुरूपयोग माननीयों ने ही किया।

पटियाली में RSS के शताब्दी वर्ष पर गोष्ठी और पथ संचलन का आयोजन, स्वयंसेवकों ने दंड धारण कर किया मार्च

परिवहन विशेष न्यूज

पटियाली: पटियाली में RSS के शताब्दी वर्ष पर गोष्ठी और पथ संचलन का आयोजन, स्वयंसेवकों ने दंड धारण कर किया मार्च

पटियाली में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में रविवार को नगर के एसबीआर इंटर कॉलेज में एक गोष्ठी और पथ संचलन का आयोजन हुआ। पथ संचलन के दौरान संघ के स्वयंसेवकों ने अनुशासन और संगठन की भावना का प्रदर्शन किया, इस दौरान कस्बा के लोगों ने जगह-जगह पुष्प वर्षा कर पथ संचलन का स्वागत किया। यह आयोजन विजयदशमी के उत्सव के रूप में संपन्न हुआ।

कंप्यूटर शिक्षा क्रांति समारोह मै दिये सफलता के टिप्स

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

गंजडुंडवारा नगर के रेलवे रोड स्थित तेल मिल में टैच वाटिका कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के द्वारा जनपद कासगंज के विद्यालयों के शिक्षकों का कंप्यूटर शिक्षा क्रांति समारोह टैच वाटिका डायरेक्टर प्रदीप चौहान व एग्जीक्यूटिव एडमिन ओम चौहान द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन दिव्यांश चौहान नें किया। कार्यक्रम मै सापेक्ष सिंह, ऋषभ आर्य, शिवम यादव, प्रिंस, तन्या सोलंकी, विमल सिंह, सुनिति उपाध्याय, मानशी भारद्वाज ने किया। कार्यक्रम में विभिन्न विद्यालयों के शिक्षक जीतू सिंह राठौर, धीरेंद्र चौहान, प्रशांत मिश्रा, विजयपाल सिंह, वंदना सोलंकी, रजनी, अनीता, खुशबू सोलंकी, कीर्ति, दिव्या सिंह, छवि, सुनीता, लक्ष्मी, नंदिनी, कीर्ति गुप्ता,अश्विनी गुप्ता, शंकर सिंह, हरिनंदन, शिवम राठौर, प्रिंस, अनमोल, कुलदीप, शुभम, सौरभ शर्मा, अमन तिवारी, निकिता, आस्था, रिया शर्मा, मोनिका द्विवेदी, वर्षा, प्रियम सर, ऋचा चौहान, मानवेन्द्र राठौर, आरती सक्सेना, अभिषेक, दिव्यांशु तिवारी, शिव प्रताप, सुमित, विशाल, निशा गौतम, कुमकुम सागर, सोनम, राज, वैदेही चौहान इत्यादि मौजूद रहे।

इन्दौर में विशाल पथ संचालन निकाला गया

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इन्दौर में 34 स्थानों पर विशाल पथ संचालन निकला गया। जिसमें विभिन्न समाजिक कार्यकर्ता इंजिनियर डाक्टर शिक्षक वकील आदि सभी स्वयंसेवक ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम के आखिरी में बौद्धिक भाषण में देश की एकजुटता हिन्दूओं के स्वाभिमान को जागने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाताब्दी वर्ष की इस लम्बी यात्रा का वर्णन किया। संघ की जिम्मेदारी समाजिक स्तर पर अब और ज्यादा बढ़ गई है।

रिपोर्ट व फोटो - हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

विश्व शिक्षक दिवस के अवसर पर एटा जनपद के नगला पुरबिया मे संपन्न हुआ विराट शिक्षक सम्मान समारोह...

रिपोर्ट अंकित गुप्ता (एटा)

डिप्टी डायरेक्टर हायर एजुकेशन इलाहबाद बी एल शर्मा,एटा के मुख्य विकास अधिकारी डॉ 0 नागेंद्र नारायण मिश्रा, जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ0 इंद्रजीत प्रजापति,गंजडुडवारा पीजी कॉलेज कासगंज के सचिव प्रोफेसर डॉ 0 राहुल गुप्ता एडवोकेट, के ए कॉलेज कासगंज के सचिव विनय कुमार जैन, जवाहर लाल नेहरू पीजी कॉलेज एटा के सचिव राम नरेश मिश्रा एडवोकेट,बी एस ए कॉलेज मथुरा के डायरेक्टर आर एस गौतम,आदि ने माँ सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया शिक्षक सम्मान समारोह का उद्घाटन...

प्रकाश सेवा समिति उत्तर प्रदेश रजिस्टर्ड के संस्थापक,राष्ट्रपति पुरुष्कार से सम्मानित शिक्षक स्वर्गीय राम प्रकाश भारद्वाज की स्मृति मे उनके पुत्र नरेश भारद्वाज द्वारा आयोजित किया गया शिक्षक सम्मान समारोह...

इस अवसर पर बोलते हुए गंजडुडवारा पीजी कॉलेज के सचिव प्रोफेसर डॉ0 राहुल गुप्ता एडवोकेट ने कहा कि शिक्षक समाज की धुरी है और भविष्य का निर्माता है। ऐसे मे शिक्षकों को सम्मानित करने का कार्य प्रशंसनीय है...

इस अवसर पर उच्च शिक्षा सेवा आयोग के सदस्य एवं सदस्य संचार मंत्रालय हिंदी समिति डॉ0 राधा कृष्ण दीक्षित,जवाहर लाल नेहरू पीजी कॉलेज एटा के प्राचार्य डॉ 0 बीबी सिंह परिहार, सर्वोदय इंटर कॉलेज एटा के प्रधानाचार्य विजय मिश्रा, एम जी एम इंटर कॉलेज मारहरा के प्राचार्य सुधाकर गुप्ता, प्रोफ़ेसर मनवीर सिंह, मेधाव्रत शास्त्री, उमेश यादव, रविंद्र यादव, मयंक तिवारी,विपिन शाक्य, धीरज कुमार बघेल, मुकुल भारद्वाज, मदन यादव, शशिकांत गौतम,राजेश प्रकाश तिवारी, सूरज पाल वर्मा, के के गौतम,आदि के अतिरिक्त सैकड़ों शिक्षक शिक्षिकायें उपस्थित थे...

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में ओबीसी मतदाताओं की भूमिका – तुलनात्मक और घटनाक्रम आधारित विश्लेषण : डॉ. राजकुमार यादव, राष्ट्रीय संयोजक, ओ बी सी अधिकार मंच

परिवहन विशेष न्यूज

रायपुर - ओबीसी समुदाय को जागरूक करना, उनके मताधिकार की रक्षा करना और चुनावी समीकरणों में उनकी निर्णायक भूमिका को रेखांकित करना। यह ब्रीफ तथ्यात्मक आंकड़ा, ऐतिहासिक घटनाक्रम और तुलनात्मक विश्लेषण पर आधारित है, जो ओबीसी मतदाताओं के हितों की रक्षा के लिए तैयार किया गया है।

1. ओबीसी मतदाताओं का ऐतिहासिक संदर्भ और घटनाक्रम (क्रोनोलॉजिकल ओवरव्यू)

ओबीसी समुदाय बिहार की राजनीति का आधार स्तंभ रहा है, जहां जातीय समीकरण चुनावी परिणाम तय करते हैं। निम्नलिखित घटनाक्रम ओबीसी मतदाताओं की यात्रा को दर्शाते हैं:

1990-2000: मंडल कमीशन का प्रभाव और ओबीसी जागरण – 1990 में मंडल कमीशन की सिफारिशों के लागू होने से ओबीसी आरक्षण (27%) को मजबूती मिली, जिसने यादव (14% आबादी) और अन्य ओबीसी समूहों को राजनीतिक शक्ति प्रदान की। इस दौर में राष्ट्रीय जनता दल (RJD) ने माय (मुस्लिम-यादव) गठजोड़ से लाभ उठाया, जबकि जनता दल (यूनाइटेड) (जदयू) ने गैर-यादव ओबीसी (जैसे कुर्मी, 4%) को एकजुट किया। 1995 के चुनाव में राजद ने ओबीसी वोट बैंक से बहुमत हासिल किया, लेकिन 2005 में एनडीए (भाजपा-जदयू) ने ईबीसी (अत्यंत पिछड़ा वर्ग, 25%) को लक्ष्य कर सत्ता हासिल की।

2010-2020: जाति आधारित सर्वे और आरक्षण विस्तार – 2015 चुनाव में महागठबंधन (राजद-कांग्रेस-जदयू) ने ओबीसी-दलित-मुस्लिम गठबंधन से जीत हासिल की, लेकिन 2017 में नीतीश कुमार का एनडीए में शामिल होना ओबीसी वोटों का विभाजन दर्शाता है। 2020 चुनाव में एनडीए ने 125 सीटें जीतीं, जहां ईबीसी और गैर-यादव ओबीसी ने निर्णायक भूमिका निभाई। 2022 में पटना हाई कोर्ट ने नगर निकाय चुनावों में ईबीसी/ओबीसी कोटा को अवैध ठहराया, जो ओबीसी अधिकारों पर हमला था। 2023 में बिहार सरकार ने आरक्षण को 50% से बढ़ाकर 65% करने का प्रयास किया, लेकिन पटना हाई कोर्ट ने इसे रद्द कर दिया, जिससे ओबीसी समुदाय में असंतोष बढ़ा।

2024-2025: जाति सर्वे, वोटर लिस्ट संशोधन और वोटर अधिकार यात्रा – 2024 लोकसभा चुनाव में एनडीए ने 174 विधानसभा लीड्स हासिल कीं, लेकिन ओबीसी वोटों का विभाजन स्पष्ट था। 2025 में चुनाव आयोग की स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एस आई आर) ने मतदाता सूची से लाखों नाम हटाए, जिसमें ओबीसी

मतदाताओं की बड़ी संख्या प्रभावित हुई। योगेंद्र यादव ने इसे ₹वोट चोरी₹ करार दिया, दावा किया कि 2.5 करोड़ मतदाता प्रभावित हो सकते हैं, जिसमें आधार, एपिक,मनरेगा कार्ड जैसे दस्तावेज अमान्य हैं। अगस्त 2025 में महागठबंधन की ₹वोटर अधिकार यात्रा₹ शुरू हुई, जिसमें राहुल गांधी और तेजस्वी यादव ने ओबीसी-दलित मतदाताओं की रक्षा का वादा किया।16 सितंबर 2025 में अंतिम मतदाता सूची जारी होने से ₹वोट चोरी₹ के आरोपों पर बहस तेज हुई।

2. ओबीसी मतदाताओं का तुलनात्मक विश्लेषण (एनडीए vs महागठबंधन)

बिहार में ओबीसी मतदाता कुल मतदाताओं के लगभग 51% हैं (जाति सर्वे के अनुसार), लेकिन उनका वोट बैंक विभाजित है। निम्नलिखित तुलना 2020 चुनाव vs 2025 अनुमान पर आधारित है:

यादव (14%): पारंपरिक रूप से महागठबंधन (राजद) का मजबूत आधार, जहां 2020 में 80% से अधिक यादव वोट राजद को मिले। 2025 में भी माय गठजोड़ महागठबंधन को फायदा पहुंचा सकता है, लेकिन कुछ क्षेत्रों में विभाजन (जैसे जन सुराज पार्टी का प्रभाव) देखा जा रहा है। हालिया विश्लेषण में यादवों ने सरकारी नौकरियों में ओबीसी कोटे का 36% हिस्सा हथिया लिया है, जो अन्य ओबीसी समूहों के लिए अन्याय है। एनडीए इस विभाजन का फायदा उठा रही है।

कुर्मी (4%) और ईबीसी (25%): एनडीए (जदयू-भाजपा) का कोर आधार। 2020 में ईबीसी ने एनडीए को 60% वोट दिए, जबकि महागठबंधन को मात्र 30%। 2025 में एनडीए की योजनाएं (जैसे केंद्र की कल्याणकारी स्कीम्स) ईबीसी को आकर्षित कर रही हैं, लेकिन ₹वोट चोरी₹ से ईबीसी मतदाताओं के नाम हटने के आरोप हैं। तुलनात्मक रूप से, महागठबंधन की यात्रा ईबीसी को जागरूक करने का प्रयास है, लेकिन एनडीए का ग्रामीण संपर्क मजबूत है।

अन्य ओबीसी (जैसे कोइरी, निषाद): 2020 में एनडीए को 55% वोट मिले, महागठबंधन को 35%। 2025 में जन सुराज (प्रशांत किशोर) जैसे तीसरे विकल्प ओबीसी स्विंग वोटर्स को आकर्षित कर सकते हैं, जो दोनों गठबंधनों को नुकसान पहुंचाएंगे। ओबीसी आरक्षण पर कोर्ट के फैसले (जैसे मध्य प्रदेश में 27% कोटा) बिहार में भी प्रतिध्वनित हो रहे हैं, जहां ओबीसी एकता की कमी से लाभ उच्च जातियां उठा रही हैं।

3. ओबीसी मतदाताओं के लिए चुनौतियां और सिफारिशें

तथ्यात्मक चुनौतियां: SIR प्रक्रिया से 47 लाख नाम हटाए गए, जबकि 30 लाख जोड़े जाने चाहिए थे (जनसंख्या वृद्धि के अनुसार)।यह ओबीसी-गरीब मतदाताओं को लक्ष्य करता प्रतीत होता है, जो ₹नोटबंदी जैसी वोटबंदी₹ है। यादव डोमिनेंस से अन्य ओबीसी समूह वंचित हो रहे हैं।

सिफारिशें: ओबीसी समुदाय एकजुट होकर मताधिकार की रक्षा करे। मंडल कमीशन की 27% आरक्षण को हर राज्य में लागू करने की मांग करें। वोटर अधिकार यात्रा जैसे आंदोलनों में भाग लें और जाति जनगणना की मांग तेज करें। ओ बी सी अधिकार मंच ओबीसी हकों की लड़ाई जारी रखेगा। ओबीसी मतदाता बिहार का भविष्य तय करेंगे – उनके बिना कोई गठबंधन मजबूत नहीं। जागरूक रहें, वोट डालें, अधिकार मांगें !आदिकाल से ओबीसी ने राजनैतिक दिशा और दशा तय की है इसलिये आज भी करेगी और भविष्य ओबीसी को उसके अधिकारों से वँचित कदापि नहीं कर सकेगा।1

उत्तरी विधानसभा क्षेत्र में सड़कों पर प्रीमिक्स डालने का काम तेज़ी से जारी — हर गली, हर मोहल्ले तक पहुँच रहा विकास: करमजीत सिंह रिंटू

अमृतसर, 5 अक्टूबर (साहिल बेरी)

नगर सुधार ट्रस्ट अमृतसर के चेयरमैन और उत्तरी विधानसभा क्षेत्र के लिए आम आदमी पार्टी के इंचार्ज करमजीत सिंह रिंटू ने आज कचहरी चौक पर सड़क निर्माण परियोजना का उद्घाटन किया। रिंटू ने बताया कि उत्तरी विधानसभा क्षेत्र में सड़कों पर प्रीमिक्स डालने का कार्य तेज़ी से चल रहा है। प्रत्येक वार्ड में टूटी-फूटी सड़कों को नए सिरे से बनाया जा रहा है ताकि लोगों को बेहतर यातायात सुविधा मिल सके। उन्होंने कहा कि अगले दो महीनों तक यह कार्य निरंतर जारी रहेगा और कोई भी सड़क अधूरी नहीं छोड़ी जाएगी।

रिंटू ने कहा कि उत्तरी क्षेत्र में विकास की रफ़्तार को रुकने नहीं दिया जाएगा और हर गली-मोहल्ले तक विकास पहुँचा रहे हैं।

उन्होंने बताया कि हाल ही में सफाई संबंधी कुछ तकनीकी कारणों से कंपनी द्वारा काम अस्थायी रूप से रोका गया था, लेकिन अब यह समस्या पूरी तरह से हल कर दी गई है।

सैनीटेशन विभाग के अधिकारियों के साथ तालमेल बनाकर नगर निगम की मशीनरी और निजी ट्रैक्टर-ट्रॉलियों की मदद से सड़कों की सफाई व्यवस्था में बड़ा सुधार किया गया है।

रिंटू ने कहा कि शहर की सफाई का काम एक नई कंपनी को सौंपा गया है, जो अगले 20-25 दिनों में अपनी पूरी मशीनरी के साथ मैदान में उतरकर काम शुरू कर देगी।

उन्होंने कहा कि वे उत्तरी विधानसभा क्षेत्र के नागरिकों को सभी बुनियादी सुविधाएँ — सड़क, सफाई, पानी और रोशनी — प्रदान करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं।

क्या पीओके का विद्रोह भारत के लिए मौका है

राजेश कुमार पासी

जब जम्मू-कश्मीर का भारत में विलय हुआ था, तब पाकिस्तान ने हमला करके इसके बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया था । भारतीय सेना उस हिस्से को वापिस लेना चाहती थी लेकिन तत्कालीन सरकार को संयुक्त राष्ट्र पर ज्यादा भरोसा था। संयुक्त राष्ट्र ने पाकिस्तान के साथ-साथ भारत को भी आक्रमणकारी घोषित कर दिया। संयुक्त राष्ट्र चाहता था कि दोनों देश इस राज्य से निकल जाए और जनता को निर्णय करने दें कि वो किसके साथ रहना चाहती है। इसके लिए पहले पाकिस्तान को अपने कब्जे वाले इलाके को खाली करना था लेकिन उसने ऐसा नहीं किया, इसलिए संयुक्त राष्ट्र के निर्देशों का पालन नहीं हो सका । इसके बावजूद पाकिस्तान पूरे जम्मू-कश्मीर राज्य को अपना हिस्सा मानता है और भारत से इसे वापिस लेने के लिए पिछले 78 सालों से लड़ रहा है। जब तीन युद्धों से भी वो कश्मीर नहीं ले सका तो उसने आतंकवाद के सहारे इसे पाने की कोशिश शुरू कर दी । पिछले 45 सालों से वो भारत को आतंकवाद की आग में जलाता आ रहा है।

उसके आतंकवाद के कारण न केवल भारत के हज़ारों नागरिकों और सैनिकों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा है बल्कि भारत की अर्थव्यवस्था को लाखों करोड़ रुपए की चपत लगी है। आतंकवाद लंबे समय तक भारत के विकास की बड़ी रुकावट बना हुआ था । आतंकवाद में मारे गए नागरिकों और सैनिकों का अंदाजा तो हम लगा सकते हैं लेकिन इसका अंदाजा लगाना बहुत मुश्किल है कि भारत की अर्थव्यवस्था को कितना नुकसान हुआ है। भारत को आतंकवाद की आग में जलाने के लिए पाकिस्तान को कई देशों की मदद मिली है। जो शक्तियां भारत को आगे बढ़ता हुआ नहीं देखना चाहती थी, उन्होंने डॉलर्स और हथियारों से पाकिस्तान को इसमें मदद दी है।

कहा जाता है कि जो दूसरे के लिए गड्ढा खोदता है, वो एक दिन खुद भी उसमें गिर जाता है। पाकिस्तान के साथ ऐसा ही हो रहा है. भारत ने तो आतंकवाद से निपटना सीख लिया है लेकिन पाकिस्तान अब आतंकवाद की आग में जल रहा है । भारत ने आतंकवाद को जम्मू-कश्मीर तक सीमित कर दिया है लेकिन इस समय पूरा पाकिस्तान आतंकवाद की आग में जल रहा है । भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था को इस भयानक दौर से बाहर निकाल लिया है लेकिन पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था बर्बाद हो चुकी है । पाकिस्तान एक भिखारी देश बन गया है. उसके रहनुमा जहां भी जाते हैं, साथ में भीख का कटोरा लेकर जाते हैं । पाकिस्तानी प्रधानमंत्री ने खुद ही बयान दिया था कि हम जिस देश में भी जाते हैं, उन्हें लगता है कि कुछ मांगने आए होंगे । पाकिस्तान ने भारत को बर्बाद करने के चक्कर में खुद को बर्बाद कर लिया है । वो भारत से कश्मीर छीनना चाहता था लेकिन आज उसको अपना कश्मीर बचाना मुश्किल हो गया है । पाक अधिकृत कश्मीर, जिसे पीओके कहा जाता है, आज भयानक विद्रोह का सामना कर रहा है।

झारखंड के बाग चंडी मंदिर में तोड़फोड़ से भड़के लोग ,कर दिया हाईवे 143 तीन घंटे जाम

तोड़फोड़ करने वाला विक्षिप्त: पुलिस

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , झारखंड के सिमडेगा जिले में एक मंदिर में तोड़फोड़ करने पर लोग भड़क उठे। गुस्साए लोगों ने नेशनल हाईवे को जाम कर दिया। लोग आरोपी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग कर रहे थे। मौके पर पहुंचे अधिकारियों ने उन्हें समझा-बुझाकर शांत कराया। पुलिस ने बताया कि झारखंड के सिमडेगा जिले के कोलेबिरा में रविवार को स्थानीय लोगों ने एक मंदिर में कथित तोड़फोड़ के विरोध में राष्ट्रीय राजमार्ग 143 को जाम कर दिया। यह तोड़फोड़ शनिवार रात कोलेबिरा थाना क्षेत्र के कलहाटोली स्थित बागचंडी मंदिर में हुई।उन्होंने बताया कि आरोपी कोलेबिरा थाना क्षेत्र के कलहाटोली का निवासी है। कोलेबिरा थाने के प्रभारी हर्ष कुमार शाह ने कहा कि मंदिर में तोड़फोड़ से आक्रोशित स्थानीय लोगों ने एक घंटे तक राष्ट्रीय राजमार्ग 143 को जाम रखा। पुलिस मौके पर पहुंची और उन्हें कार्रवाई का आश्वासन दिया और जाम खुलवाया। पुलिस के अनुसार शनिवार रात मानसिक रूप से बीमार एक व्यक्ति ने मंदिर के दरवाजे तोड़ दिए, साउंड सिस्टम को नुकसान पहुंचाया और मंदिर के पास एक त्रिशूल फेंक दिया। पुलिस मामले के सभी पहलुओं की जांच कर रही है। हम उस व्यक्ति को स्थानीय अदालत में पेश करेंगे और आदेश के अनुसार आगे की कार्रवाई करेंगे।

डिप्टी कमिश्नर ने लगातार दूसरे दिन रावी नदी किनारे इलाकों का दौरा किया

– बारिश की संभावना को देखते हुए सावधानी बरतने की अपील

अमृतसर, 5 अक्टूबर (साहिल बेरी)

मौसम विभाग द्वारा 6 और 7 अक्तूबर को पंजाब और आसपास के इलाकों में बारिश की संभावना को देखते हुए, डिप्टी कमिश्नर श्रीमती साक्षी सानी ने आज लगातार दूसरे दिन रावी नदी के नजदीकी गांवों और क्षेत्रों का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने ग्रामीणों, पंचों, सरपंचों, बीएसएफ अधिकारियों और पाड़ पूर्ण का कार्य कर रहे कार सेवा से जुड़े महापुरुषों से बातचीत की।

उन्होंने बताया कि उपमंडल मजिस्ट्रेट और संबंधित विभागों के अधिकारी संभावित क्षेत्रों की निरंतर निगरानी कर रहे हैं तथा किसी भी आपात स्थिति में तुरंत कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए निर्बाध संचार की व्यवस्था की गई है। उन्होंने ब्लॉक स्तर के अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी गांवों के सरपंचों और नंबरदारों के व्हाट्सएप समूह बनाए जाएं ताकि समय-समय पर अपडेट साझा किए जा सकें और अफवाहों के कारण लोगों में घबराहट न फैले।

इसके अलावा, सभी इवैक्यूएशन सेंटर्स को भोजन-पानी की सुविधा, वॉशरूम, ड्यूटी ऑर्डर सूची, डीज़ल, टॉर्च और रात की लाइटों सहित पूरी तरह तैयार रखा गया है।

उन्होंने आम लोगों से अपील की कि वे किसी भी तरह की अफवाह पर विश्वास न करें, केवल सरकारी सूचनाओं पर भरोसा करें और नदी या नालों के पास जाने से बचें। उन्होंने बताया कि किसी भी असुविधाजनक स्थिति में तुरंत जिला प्रशासन से संपर्क किया जा सकता है। इसके लिए हेल्पलाइन नंबर —

जिला कंट्रोल रूम: 0183-2229125, अजनाला तहसील: 01858-221037,

लोपोके तहसील: 01858-299059,

बाबा बकाला साहिब तहसील: 01853-245510 — पर संपर्क किया जा सकता है।

इस दौरान सिंचाई विभाग के अधिकारियों ने बताया कि आज रावी नदी के कैचमेंट एरिया में कहीं भी भारी वर्षा की सूचना नहीं है। इसलिए फिलहाल खतरे की कोई स्थिति नहीं है, लेकिन सावधानी बरतना आवश्यक है।

इस मौके पर अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर श्रीमती परमजीत कौर, एसडीएम श्री रविंदर सिंह और अन्य अधिकारी भी मौजूद रहे।

झारखंड में कांग्रेस के डेढ़ दर्जन नये जिलाध्यक्ष घोषित

चंदन बागची के भतीजे राज बने सरायकेला जिला के अध्यक्ष

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड-झारखंड

रांची , पार्टी के केंद्रीय महासचिव केसी वेणुगोपाल ने जिलाध्यक्ष संबंधित पत्र जारी कर दिया है। पार्टी ने दो विधायकों समेत पूर्व विधायक को भी जिलाध्यक्ष बनाकर स्पष्ट संकेत दिया है कि आनेवाले दिनों में संगठन और भी सुदृढ़ होगा।

पूर्व विधायकों को भी पार्टी ने जिलों के मोर्चे पर तैनात किया है और इसी कड़ी में जेपी पटेल को हजारीबाग की जिम्मेदारी दी गई है।

बड़ी बात यह है कि इस कमेटी में पूर्व अध्यक्षों राजेश ठाकुर, सुखदेव भगत और पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय की पसंद का भी ख्याल रखा गया है।

जामताड़ा सहित कई जिलों में मंत्रियों की पसंद का ख्याल रखा गया है लेकिन गढ़वा और पलामू में मंत्रियों की बात नहीं चल सकी। शीघ्र ही प्रदेश कांग्रेस की नई कमेटी की घोषणा होने की भी उम्मीद की जा रही है। छठ के बाद नई कमेटी काम करने लगेगी। जिनको जिम्मेदारी हैपी गयी वह निम्न प्रकार है

बोकारो - जवाहर लाल मेहता, चतरा - चंद्रदेव गोपे
देवघर - मुकुन्द दास
धनबाद - संतोष कुमार सिंह
दुमका - स्टीफन मरांडी
पूर्वी सिंहभूम - परविंदर सिंह
गढ़वा - ई. ओबैदुल्लाह हक अंसारी
गिरिडीह - सतीश केडिया
गोड्डा - मोहम्मद यहया सिद्दीकी
गुमला - राजनील तिगा
हजारीबाग - जे. पी. पटेल
जामताड़ा - स्मृति दीपिका बेसरा
खूंटी - रवि मिश्रा
कोडरमा - प्रकाश राजक
लातेहार - कामेश्वर यादव
लोहरदगा - सुखैर भगत
पाकुड़ - श्रीकुमार सरकार
पलामू - स्मृति बिमला कुमारी
रामगढ़ - स्मृति ममता देवी
रांची महानगर - कुमार राजा
रांची ग्रामीण - सोमनाथ मुंडा
साहिबगंज - बरकतउल्लाह खान
सराइकेला-खरसावां - राज बागची
सिमडेगा - भूशन बड़ा
पश्चिमी सिंहभूम - रंजन बोयपाय

बोकारो की महिला मुखिया रांची से सुरक्षित बरामद

मुखिया मिलने से पंचायत के लोगों में हर्ष , पुलिस कर रही पुछताछ

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , झारखंड की सबसे कम उम्र की महिला मुखिया का दो दिनों बाद सुराग मिल गया है. बोकारो पुलिस ने रांची पुलिस के सहयोग से मुखिया को सुरक्षित बरामद कर लिया है.जिसके बाद रांची से पुलिस टीम बोकारो लेकर चली गई. अब बोकारो पुलिस मुखिया से पूछताछ कर रही है. जिसके बाद पूरे मामले का खुलासा हो सकता है.फिलहाल पंचायत के लोगों ने भी मुखिया के मिलने के बाद राहत की सांस ली है. इस पूरे मामले में बोकारो जिले के पुलिस अधिकारी प्रेस वार्ता कर लापता मुखिया की पूरी कहानी बता सकते है.

बता दे कि 2 अक्टूबर को मुखिया सपना कुमारी अपने गोमिया प्रखण्ड अंतर्गत पलिहारी गुरुडीह पंचायत से ही लापता हो गई थी. जिसके बाद खोज बिन किया गया लेकिन कही कोई जानकारी नहीं मिली. आखिर कार परिवार के लोगों ने थाना में लापता होने का मामला दर्ज करवा दिया.जिसके बाद गोमिया पुलिस ने मुखिया को बरामद कर लिया है.

सपना मुखिया सबसे कम उम्र की मुखिया है. साथ ही सबसे खूबसूरत मुखिया में इनका नाम आता है. सोशल मीडिया पर भी खूब एक्टिव रहती है और रील बनाने की शौकीन है.ऐसे में इनके लापता होने की खबर के बाद पुलिस महकमे में भी हड़कंप मच गया था.

दरअसल यह मुखिया बोकारो जिला के गोमिया प्रखण्ड अंतर्गत पलिहारी गुरुडीह पंचायत की है. गांधी जयंती के दिन से इनका कोई सुराग नहीं मिल रहा था. जिसके बाद गोमिया थाना में लिखित शिकायत दर्ज की गई. और पंचायत की मुखिया कहाँ गई इसकी तलाश पुलिस ने शुरू कर दिया. आखिर कार शनिवार शाम जानकारी निकल कर सामने आई की मुखिया का अंतिम ट्रेस रांची है. जिसके बाद पुलिस ने अब उन्हे बरामद कर लिया है.

बताया जा रहा है गांधी जयंती के अवसर पर सपना मुखिया भी शामिल हुई थी, लेकिन इसके बाद वह कहा गई किसी को जानकारी नहीं मिली. आखिर में मुखिया पति ने उनके लापता होने का मामला थाना में दर्ज करवा दिया. जिसके बाद पुलिस ने जांच शुरू कर दिया. मामला एक मुखिया के लापता होने का था लिहाजा पुलिस ने इसे गंभीरता से लिया. मुखिया पति ने महिला से जुड़ी कई जानकारी दी जिसके बाद टेक्निकल सेल की मदद से पुलिस ने ट्रेस करना शुरू कर दिया. आखिर में उनका लोकेशन पुलिस को मिला है लेकिन सुरक्षा कारणों से पुलिस इस सुचना पर अपने स्तर पर काम कर रही है.

बात दे कि सपना कुमारी को झारखंड की सबसे कम उम्र की मुखिया बनने का गौरव प्राप्त है . जब पंचायत का चुनाव जीत कर मुखिया बनी तो झारखंड के साथ साथ पूरे देश में चर्चा में आयी थी. लेकिन अब इनके लापता होने से इनके समर्थकों में भी चिंता का माहौल बन गया था ,समर्थकों में मायूसी दिख रही थी अब

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023